

मवसीपीयमूरातिनेन मजसकोच
 विवेको ॥ आके अरोषादुरे फिरिआके
 दुरे वहरोठहरातिनरको ॥ चासुतो गु
 रलोगनिको उतलालचुलालनके सवि
 वेको ॥ लाजश्रीकामके वामदुवीच परे
 योचलाचलिहालुहीयेको ॥ १६ ॥ लिहा ॥
 नशीलगनिकुलकी सुकुचविकलनशी
 अकुला ३ ॥ दुहरोरअंची फिरै फिरकी
 लौदिनुजा ३ ॥ टीका ॥ यहनाइकामध्या
 लाजकामसमानहै परकि याहहेइतरी
 लगनिकुलकी सुकुचयापदेतसधीकह
 तिहै ॥ कवित ॥ नशीलागीलगनिरसिक
 मनमोहनसोउरअनिल ॥ नकीजमग
 नरतिहै ॥ कुलकीसमह ॥ निआ
 अंसीरीहै ॥ तिअतिही ॥ विकलन

धरतिहे ॥ देखिवेकौ तरति उरति म
नही मनमें नरति उसासये प्रकासन
करतिहे ॥ चाह कुलका निवीच फि
रकीहो बालवधु इतउत अेची अेच
फिपिवेकरतिहे ॥ २०॥ दोहा ॥ डल
द्वर्षिले लाल कौ नवलने हलहिना
दि ॥ चाहतिचूं मतिला उरपरहरतियु
रतिउतादि ॥ टीका ॥ यहनाइकाकोस
नेहनाइवमेंवैहो पुहे सुवाके डलाको
पाउबके मिलेको सुखमानतिहे लाजते
मिलिवेके प्रियसोनाही करतिनाइका
मध्यापरकियाह होइते होइसवीसवी
सौ कहति ॥
डलगे ॥
विता ॥ नागरसौ नवने
रिआलिनिहसैंटरा

कोचसनेह ॥ टीका ॥ यह मध्यानाइक
 लजकमसमानहै सुसखीसखीसोकह
 तिहै ॥ कविता ॥ माइकेमै मननावनको
 लषिष्यारीनिसकहै देखिसकेना ॥ हे
 धिवेकोतरसेही चरादिषसाधलगी
 चितचैनलहैना ॥ इहे लाजत्रहूहेत
 लालचलोककीलीकउलधिखेना ॥
 तासोस्नेहसकोचनरेअकुलातष
 रेजलजातसेनेना ॥ १५ ॥ होहा ॥ समर
 ससमरसकोचवसविवसचईअकु
 लाइ ॥ फिरिफिरिउमकतिफिरिदुरे
 दुरिदुरेउमकतिजार ॥ यहना
 इकामध्याहैलाजकाम ॥ नरक
 कोवचनसखीसो ॥ कविता ॥



हाथों सधी सधी सो कहति है कवित्त ॥ मा
कीर्यो तिय मानै न को ह सुगली न ही
मनाइ कै सोइ रही रि सही जी
नववैस किइ इर हो टिगमो ह नुशाइ कै ॥ रो
सुनतौ यो रसै कहत नवने जु रही
बालवधु सपरै सुनाउ रही
पीयं कहै यसे लपटाइ कै ॥ २५ ॥ दोहा ॥ अ
पनी गरजनि बोलीये कहनि हे पां तो हि ॥
तू प्यारो मो जीयको मो जीय प्यारो मो हि ॥
टीका ॥ यह नाउ का पोटा है तू यने जीयकी
विवर वा न देखि कहति है कै तरे विनु देखै
क्या निहो या इरी आपूने जीवके राखि वे
करी ॥ कवित्त ॥ आपने आप
पुनान चक्रे तजनां वि

वैसवहि चहीयतुहे ॥ त्रिसीकद्वचानि
त्रानिपरी मेरेपाननुकोतोहि देवतेले
जौलौचैनुलहायतुहे ॥ करतिउपउ
होतौतिनिहीकेराधिवकोकसपान
प्यारेकीतन्यारुहीअतुहे ॥ ततेलालव
लीयतुआपनीयेगरजमुताकोकद्वतु
सौनिहेरोकहायतुहे ॥ ३९ ॥ देहा ॥ जात
सपानत्रपनेडेवेठगकाहिठगेन काललचड
नलालकलधिललचोहनेन ॥ टीका ॥ पहना
इकाप्रोढाहेस्यसिध्यादितिहैकैवनेत्रदेधिक
ललचातन ॥ असुनहकोअधिक ॥ अरुकोन
वनस्थीसो ॥ कानताको ॥ शिव ॥ अतः
इकेअलतुकेनविजेकवा
विसरावेसवे ॥ ४ ॥ मोहनवल्क
सपानत्रपा ॥ अचन ॥ शिनीको ॥ अदाल

नीकेमने जप्रवीन करे लये घे लनने नकु
रगसिषाये ॥५०॥ पुस्तिका ही ॥ चगल
तदेतथा नाकसुनिज ही परे सीनाह ॥ ल
सीतमासेकी दुगनिहा सीपुं ॥ ५१ ॥ निमा
ह ॥ हीका ॥ यह नउकापर कियामुदिता
हेचाहीयतवात नरीजानिप्रसन्नताकीह
सीनरीसखीकोबचनसखी ॥ ५२ ॥ कविता
देषपरेसीकीचीकनाचा ॥ ५३ ॥ नपादीही
येपरीपुंमकीफासी ॥ ५४ ॥ योपीयजात विरेस
लये विलखीविरहातुरसांसडसासी ॥ व
हीपरेसीविलोकेकहीयेहीयेपतितेसे
हमारी ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥
॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥
॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥
॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥
॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

ऊषो लई ऊषारि ॥ हरी हरी अर हरि अ
ज्यो धरि धर हर जीय नारि ॥ टीका ॥ अनु
सय नाना इका संकेत की धोर जानि जाते स
च करति हे सधी समाधानु करति हे प्र
तर ॥ कविता ॥ वीन न फूल सहे ली कि सग
चली मृगलोचन निमोद नरी है ॥ केलि थो
ली उजली अचले कि उसा सनरी अलि हे
उचरी है ॥ वीति गयो वन सूक्यो सनो अर
ऊषो ऊषारि लई सगरी है ॥ क्यो हरी म
ति धीर धरौ अचही तो अर हरि पारी हरी
है ॥ पर ॥ हे हा ॥ फिरि फिरि विनवी के लखे
रि फिरि लेति ऊसास ॥ साडी ॥ असे तजे
वीयो चुनति कपास ॥ टीका ॥ का अ
नुसय नासहे टकी धोर वीती जानि विलवति

हे सुसधासधीसो - हतिहे । कविता ॥ चाल
मकेसिरकेसिरोरुहज्योसेतअसेलेती
निचुनिसिरदुनि - रमातिहे । चीनतिहे
तूलअपेसूलकेसलतहीअमानिदुधमूल
फूलजिपिकुनिलातिहे ॥ वारवारकहति
उलीसोकेसीनलीरीतिकेलिकेविलास
कीथलोयोरुवाहतिहे ॥ किलखिविला
थकेउ - सैलिइनवलचदुलखिवनुवी
पोमनअतिअकुलातिहे ॥ ५३ ॥ अथअ
अपुलनदिकहेल ॥ नहिहरिलोहीयराध
नहिहरिलेअरधग ॥ उकतहीकरिराथिये
गजग ॥ टोला ॥ यहनाइकाअनकूल
सुनी ॥ मकेविचारजानीये ॥ कविता
थीयेजोहरिलोहीयराधरिओरसवेअगहेतदु

धारी ॥ तोहरलोधारि त्रैअरधगतो एकहीअ
गवटसुवचारी ॥ तातैयहे जियआचनिहे करी
येनहीतहि द्विनेवहन्पारी ॥ अगमैअगमिलाइ
के एकतही करिराषीये प्रानपिअरी ॥ ५४ ॥ इ
दिरानाइकहेह ॥ गोपिनुसगनिसिसरदकी
रमतरसिकरसरास ॥ लहोहेहअतिगतिनुकीस
वनिलषेसवपास ॥ टीका ॥ यहनाकुददिराहे
सुरासमैआपनी चतुराडी करिके सचको प्रसन्न
राषीउककेआधीनकाहनेनजान्योसधीकोव
चनसधीसो ॥ कविते ॥ जमुनाकीपुलनिसुहाडी
द्विविद्धाडीजेसीसरहरयनिजेन्हविसदविला
सहे ॥ अबलकनेकानिमेंकोनीनेदलालकदूअ
दुतचातुरीकीकलायोंप्रकास ॥ पिकानि
सगरसरंगकीउमंगरभैरसिब ॥ रमतु
रसरासहे ॥ सचहीकीचाहगहि सचहकिसगना

सुसखीसखीसौ - हतिहे। (कविता) वाल
सिरकेसिरोरुहज्योसेतत्रैसलेती
नि। खरुनि। मुरमातिहे।

केसलतहीअिमानिदुअमूल
फूलजिमिकुनितातिहे।

जलीरीतिकेलिकेविला
कीथलोयेरतीजातिहे। तिलखिविल
उसासेलिइनवलवद्यूलखिवनुवी
मनअतिअकुलातिहे। ५३। अथअ

अकूलन। इक होला। नाहहरिलोहीयराध
नहिरि अरधग। उकतहीकरिराथिये
हे। दोला। यहनाइकाअनकूल

सु। केमकीविचारजानीये। कविता
राषीयेजोहरिलोहीयराधरिओर

घारी ॥ तो हरलो धारि त्रै अरधगतो एक ही अ
 गवटै सुवचारी ॥ तातै यहै जिय आचति हे करी
 ये नही तहि द्वि नो चह न्यारी ॥ अगमे अगमिलह
 के एक तही करि राषिये पानपि अरी ॥ ५४ ॥
 दिरा नाइ कहै हा ॥ गोपिनु सगनि सिसरदकी
 रमत रसिक रसरास ॥ लहा छेह अति गतिनु की स
 वनिलखे सवपास ॥ टीका ॥ यहना कुदृष्टि हा हे
 सुरासमै आपनी चतुराई करि के सबको प्रस
 राष्यो उकके आधीन काहने न जान्यो सखीको व
 चन सखीसो ॥ कवित ॥ जमुनाकी पुलनि सुहाई
 छवि द्वाडी जैसी सरहरयनि जौन्ह विसरवित
 स है ॥ अबल कने कनि मै कीनी नरलाल कछु
 इत चातुरी की कलायो प्रकास ॥ अपिकानि
 सगर सरंगकी उमंगर भेरसि व
 रसरास है ॥

च्योसवहीविलोकोकांनसवहीकेपासहे
॥५५॥ अथसठनाइकदेहा॥वेडीगाडिगाडेपरीठ
पटोहारहीयेन॥आन्योमोदिमतंगमनुमादि
गुरेनुमेन॥दीका॥यहनाइकुसडुहेविनुगु
नहारकेचिहमीठीवातकहिदुरावतुहेनाइक
कोवचनुनाइकासोतेनाइकुनाइकासोकहेते
अडिताहहेड॥कवित॥अजुमनमोहनमया
केमेरेआयेलालसेहतुसिगारुअतिमेरेमनम
॥अलसवलितदुगद्यमतललितगतिसिध
॥कस्यप्राणप्य
पाएवहविनुगुनहारुअरगदजा
तुजोयोहे॥दृजोमतंगमनु
दुपारिमोदिआन्योहे॥५६॥दीका॥
कुंरीकोइनुदोह्नुमाह॥लालतु
निमेदहा॥दीका॥प्रहप

सुतरनाइकुसठनाइकावडिता ॥ कविता ॥ चारुनि
 काइलीखैजिनिकोरदलागतिओपरतोपलकीहै
 वदनकीछविमदकरीनिदरीदुतिविदुमकेदल
 कीहै ॥ प्रानपियारीकहाइनिनेननुअजुललाइ
 इतीलकीहै ॥ लोचनलालतुम्हारिलखैतिनिकी
 इतआनिप्रनाइलकीहै ॥ ५७ ॥ दोहा ॥ सकतनह
 वततिवचनमेरसकौरसवोइ ॥ धिनुधिनुअैषीरो
 सौंधरीसवादिखुहोइ ॥ टीका ॥ यहनाइकसठसाप
 राधआयोहैसुनइकाकोधसैकद्वचनकहतिहेता
 सौंमीठवचनकहिनिवारनुकरतुहेनाइकाअधीस
 जानीयैनाइककोवचननाइकासौं ॥ कविता ॥ काहो
 तेनेहतेनेनीनईतिथकोनपैकीजतुकोपइती
 तेरेतौतातेजुवालसुहायतेभोटमक ॥ मंगवत
 कोरिकरौकिनिनामिनिकेसुज
 रसहीको ॥ ज्योडीज्योषीसुप्रोष
 हेतुसवादिखुनीको ॥ ५८ ॥ अचननाइक

रितुं नरीगास्यो घरीमिठइ ॥ वाको अतित्र

नवाहटौ मुसियाहटविनुनाइ ॥ टीका ॥ यह नइ
धृष्टहेनाइ कौ कथन सधीसो है ॥ यतिं पुजइ ॥

सन्नवतुह ॥ अत्रिय ॥ एतदे एतदे ॥ कीप
तीतिमे ॥ कवित्त ॥ मारेतौ फूलनि की ॥ टिकासे
तज्जमनुहा विअनेकजनावे ॥ गोरज्यौ इत्र कहा

अमीकतपावे ॥ वारति
वटावे ॥ सी

लसुनाऊ सुहागिलकोर सहहसिहीरिसहहसि
॥ पदी बेल ॥ लरिकालै वेकेमिसनुलगरमो
टिगात्राइ ॥ गयो अचान ॥ आगुरी द्वाते छिलुछि

॥ टीका ॥ यह नाइ कुधृष्टहेनाइ ककी कृतव्य
हो कहति है ॥ कवित्त ॥ गोरसके

॥ कुं गैलन ॥ अउरे ॥ चवाडी
कहा कहो तैसी करी जसदा किलला

लंगराई ॥ मोटिंगात्राइ हरे कछु की नीसनेहस
नीअतिकीचतुराई ॥ छेहरेलेवेकेउठमत्राइ
अचानकत्रागुरीछातीछुवाई ॥ ६० ॥ यातिउप
तिहोहा ॥ कुजचवनतजिनवनकोचलीयेन
इकिसोर ॥ फूलतिकलीगुलावकीचटकाहटच
हओर ॥ टीका ॥ यहनाइकासुकीयाहहेइनाइका
कोवचननाइकसौ ॥ कवित्त ॥ मुकिलतकलीज
लजातकीकछुकनरीनौरनुकीगुंममजुधव
नसुनिधारीये ॥ फूलतगुलावुकलिकानुकोसुगंध
पौनुचिटकासख मृदुमोडुउरधारीये ॥ कलधुनिक
रतअनिदषगवृदनिअनंतछविलसतिविहारीये
विहारीये ॥ आगमुविजातकोविलेकियेविहारील
लसुदरनिकुजतजिसदनसिधारीये ॥ ६१ ॥ अथ
पनिदेदुनाइकाहो ॥ समप्रकारे रहीलहकेल
लहैलखिवहवालअनूप ॥ किते ॥ ६२ ॥ इदयोइ
तेसलोंनेरूप ॥ टीका ॥ यहनाइकाका सुधीनाइ

कसौ निवेदन करति हे
 तहे ॥ कविता ॥ जैसी जहां चाही अति ते सों सहाव
 नी विधि विधि ह्ये अछि रके न्या इ व नि आ डी हे ॥
 सुख सुहाडी को पे व र नी व त डी जा ति र ति ह ने ता
 की तिल समतान पा डी हे ॥ बाल क्व वि द्वा डी ता मे यो
 र अधिक डी डी डी डी डी ना डी मा अ कित नी मि
 ष डी हे ॥ सुंदर क न्हा डी हो तो नि र धि वि का डी वह
 रूप की नि का डी मानो दे ह द रि अ डी हे ॥ ६२ ॥ न ड
 का को रूप नि वे द न जा ड का सो ॥ दो हा ॥ मो हि न रो
 सो री मि हे ॥ अ मा कि अ कि ड का व र ॥ रूप रि मा व
 न हा र व ह ये नै ना रि सु व र ॥ टी का ॥ यह ना ड क को
 नि वे द नु स घी ना ड क सो कह ति हे स घी को
 ॥ कविता ॥ सुंदर जो कह
 नु न र दु लारो डी हे ॥ यो मे क हा क ह
 क को यं थ नि यारो डी हे ॥ ने क अ रो ध
 किं सां कि व ला डु लो मो हि न रो सो ति हारो डी हे ॥ रि

मन्त्रारहे तो दुगरीअहिगेवहरूपरिआवनवा
इहे ॥६३॥ गगतनलल ॥ दोहा ॥ हौरीमील
विलखिरीमिहे छविहिदु विलिलल ॥ खौनजु
हीसीहोतिदु तिमिलतमालतीमाल ॥ लीका ॥
यहनाउककेगातवर्ननसषीनाइकसौकहौ
तिहे ॥ कवित्त ॥ नीकीलसेवृषनानललीनव
जीवनजोतिजगीअगअगहि ॥ ताहिविलोकि
लनामनमेसौतौनोउरद्वौअतिरीमितरगहि ॥
छेलद्वीलिलखैद्विविरीजिकेकीनहियैरसना
वउमगहि ॥ मालतीमालतनदुतिसो ॥ मिलिसो
नजुहिकेप्रकाशतिरगहि ॥ ६४ ॥ दोहा ॥ अगअग
नसजगमगतिदीपसिधासीदिह ॥ शोवठायैहर
हैवउउजासौग्रह ॥ लीका ॥ यह ॥ दिहक
द्विसषीनाइकसौकहतिहे ॥ ॥ ॥

लोड़ी असी दूसरी नको इरही दुगानिसमो ममानो
मौहनीलसतिहे । जटितजवाहरके नूधनल्ल
तअगअगनिमिलितजगजोतिसीजगतिहे । दी
यकवडोहनयेदेहकोउजासुहेतुवडोवीपक
सचकचौधीसीलगतिहे । दीपतिकीदुतिनरि
अरनअखिलजालरंधुनिद्वैवाहिरकीओरउज
कातिहे । १५ वाहिलयेलोइनलगेके
नजूवातिकीजोति । जाकेतनकीद्वैहाटो
जोहद्वैहासीहिति । दीप । यहनाइकाकी
हकीदीपतिसधीनाइकसौनिवेदनुकरति
हेअरुजोनाइ । सधीसोकहेतोगुनकथनुव
अजिद्वैविशागरीविले
कीवृज... अगअगरूपकीतरंगउमग
तिहे । ... वरनतनवनतकोहजो

जोवनजोति ॥ सुरंगकसंभीकंचुकीदुरंगदे
दुतिहोति ॥ टीका ॥ यहनाइकाकीसाभाअ
साभासधीनाइकसौवरननुकरतिहै ॥ कवि न
सुवरनावेलीसीनवेलीकीललितछविजोव
नकीजोतिमिलिअतिसरसातिहै ॥ चुहचु
हीचूनरीमैगहगहीगतकीगुराईनदुरतिरंग
रसवरसातिहै ॥ रूपकीतरंगअंगअंगतैउमं
गिसोभाह्येतिवदुरंगलधिसौतअरसातिहै ॥
कंचुकीकसंभीप्यारीप्रहरैसुरंगतअमिलिअ
गरंगसौदुरंगदरसातिहै ॥ ६२ ॥ दोहा ॥ कहिल
हिकौनसकैदुरीसौनजाइमैजाइ ॥ तबकीस
जसुवासवनदतीजांनवताइ ॥ टीका ॥ यहनाइ
काकेतनकीदीपतिअरुसहजसुवासुतासस
षीसधीसोकहतिहै ॥ कवि न ॥ षेलतचारमि
हचनीमैदुरीतीयसौनचमैलीमैजाइकै ॥ र
ग ॥ क ॥ मिलिकैसुकहविधिरचनहति

लषाइकै॥ भौरनकी अवलीचहुं आरसु
गंधकेलाभरही मउराइकै॥ कोलहता
उहिकुंजमैवाहितौदेतीन अंगसु'वासव
ताइकै॥ ६-सी'दोहा॥ देषीसौनजुहीफिर
तसौनजुहीसे अंग॥ दुतिलपटनुपटसे
तहंकरतवनौंटीरंग॥ टीका॥ यहनाइका
कअंगकीगुराईसषीनाइकसौनिविद
नुकरतिहै॥ कवित्त॥ सहजसिगारदुति
लसतिअपारखुंविमनहंकैमनभाऊअप
जैअनंगकै॥ अतिसुकुमारयातैलचक
तुलांकुभारुसहिनसकातुविचिउरजउत्त
गकै॥ रूपकीरसालतुमदेषीसौनवाल
लालकहाकहैवानकवनकवाकैअंगकै
॥ चारुतनसुषपटसुहिरतपनवाहितऊ
दुतिमिलिहै॥ तुकेसरी ॥ ७॥
दीठनपरतिसमानदुति ॥ कनकु

सौगांत ॥ भूषनकरकरकसलगतपरस
पिछनैजात ॥ टीका ॥ यहनाइकाकेअंग
कीदीपतिनाइकसोंकहतिहेंनाइकहूस
षीसोंकहतोंसंभवे ॥ कवित्त ॥ आजुलोल
बुजवालयेकमेंबिलोकीजाकीललिति
जुनाइलिधिलोचनसिहातिहै ॥ साजति
सिंगाररंचिपचिकेंप्रवीनआलोतिनहंके
चेतसवहरतहिरातिहै ॥ करतविचारपैन
हानतिरधारकधूतैसोंइकनकुकेगातहै
कोंवरेकररेकेंवित्तानपहिंचानीयतकर
परसैतैआभूषनजानेजातहै ॥ ७१ ॥ दोहा
करतुमलिनआछीछविहिहरतुजुसहज
विकासु ॥ अंगरागअंगनलपोंसोंआर
सीउमासु ॥ टीका ॥ यहनाइकाकेअंगके
सरिलगी ॥ इककोंइतनोहैअंतरायन
सुहातु ॥ नयहजानिसेधीनाइकसों
कहतिहेंनाइकुनाइकासोंकहतोंसंभवे ॥

कवित्त ॥ मैं नकी मोहनी सी लषिन्या
 इही मोहनरी मिरहेर सपागै ॥ जोवन
 रूप सुहाग सनी लषिसौं तिनके उरदा
 ह नें दागै ॥ केस रिलगै तें अंगलषा
 तज्यो आरसी दीषें उसासके लागै ॥
 ऊजरौं लागै न और कछून वना गरत
 री गुराईके आगै ॥ ७२ ॥ दोहा ॥ पहिरत
 भूषन कनकके कहि आवतु इहहतु ॥ ६
 रपनकै से मोरचा देह दिषां इदेत ॥ टीका
 यह संधी नाइकाके अंगकी गुराई कह
 तिहें जौ भूषननुके अंतरायन जानि ना
 इकहनाइकासौं कहें तौ वनतिहें ॥ कवित्त
 हितकी तौ वात हितही सौं कहि आवत
 ताते तौ सैं कहति छावी ॥ पादिके
 तेरी समिता कौं गनिरं भव ॥ ७३ ॥
 अनुरागप्यारंगरुं अनु

तरौ तनुतामै सौ नै कहै नै तू कत यह रति
इहै अरु वही तै त्यागि कै ॥ नीके नीके तनय
रफीके फीके लागत है मोर चारै रहे हैं मानौ
मुकरमै लागि कै ॥ ७३ ॥ दो ॥ कंचन तन
घनवरनवर रख्यौ रंग मिलि रंग जानौ ॥
जाति सुवासुहीके सरिलाई अंग ॥ टी ॥
यहनाइकाके अंगकी गुराई देषिसधीना
इकसौ कहति है अथवा लै चलि वेकी उला
इत अंगकौ निवारन करति है अंतरा इनुजा
निनाइकुनाइकासौ कहतुहें कतिता जो क
छुत्तानुमै तरुनी सुरती नल है रतिरूपनि
कोई तापर जोवन जोति जगै कविको वरनै
छषिको सरसाई ॥ रंगमै रंगसमो इग यौ तव
॥ कंचनसे तनमै घसिलाई ॥
॥ कंचनासुगंध निकोनल है सरि

के सरवासुहीतैलषियाई ॥ ७४ ॥ दोहा ॥
कैंकपूरमतिमैरही मिलितनुडुतिमुकला
लि ॥ छिनछिनषरीविजछनैरहतिछूइ ॥
तिनुआलि ॥ येका ॥ अंगदीपतिक्रीनिका
ईसधीनाइकसांकहतिहंसधीहूसैकहंतौ
होइ ॥ कविस ॥ कुंदनसेगातजलजातसे
नयनजाकीदीपतिजुहाईसीभवनमांर
वैरही ॥ कंचनकीचैंकीपरवैठिवरवाल
सांजैसकैलसिगारजोतिजगमगकैरही ॥
मांतिनकीमालसजिनीनैपहिराईसुतौत
नडुतिमिलितिकपूरकैसीकैरही ॥ एकअ
लोचतुरजकैसीचकिरही एककरिवेकौनै
हैंचैतिनूकाहाथलैरही ॥ ७५ ॥ दोहा ॥ सोह
तिधोतीसेतमैकनकवसुनवाल ॥ सा
रदवारिदवीजुरीभारदव ॥ ७६ ॥ ल ॥ ७

॥ टीका ॥ यह नाइका की गुराई सधीनाइक
सां कहति है ॥ कविन ॥ कंचन वरनत नवन
कञ्चनूपमानों रूपकी अवधि मनमथकीर
साल है ॥ एकधोती सेतमें अनेक क्षविदेत वा
लमानों हंसमंडलीमें चंपककी माल है ॥ स
रदघ यानुमध्यदामि निल सति किधों छीर
सिंधु मारुवडवानलकी जाल है ॥ सुरसरिसे
तमें सुधानिधिकी कला किधैं संकरके अंक
लसें पारवतीवाल है ॥ ७६ ॥ कविन दोहा ॥
कहाकुसुमको कौमुदी कितक आरसी जोति
जाकी उजराई लषै आषि ऊजरी होति ॥ टीका
यह नाइका की उजराई सधीनाइक सां कहति
है नाइक कहैतों संभवै ॥ कविन ॥ वालव
नी वरवा जिरहों सदई विधितै सीयें सुंदरता
ई ॥ फू ॥ क ॥ तै तूलन होनि अतूल प्रभा

व्रग-व्रगनिच्छाई। चैंतकीचौदनीचा
हकितौं अरु आरसीहूइती जोतिनपा
ई। न्याइहोंऊजरीहोतिहैं अंधिनिहा
रतवातनकीउजराई ॥ ७७ ॥ दोहा ॥ वर
नवासुसुकुमारतासवविधिरहीसमा
इ ॥ पधुरीलगीगुलावकीगतनजानी
जाइ ॥ टीका ॥ यहनाइकाकीसहजसुगं
धअरुजोवनकीअरुनाइसुकुमारता
सधीनाइकसौनिवेदनुकरतिहैंजौना
इककोसेजकीपांधुरीजानिसधीनाइक
सौकहेंतौंलछिताहोइ ॥ कविता ॥ वीन
तफूलभरुअरफूलप्रभातसमेंमुषसे
जतैंजागी ॥ आयेंतहांमनमोहनप्यारै
प्रभालषिरीरह्यौंअनु ॥ वैसोंइरं
सुगंधहूवैसौहैंवैसीयेंवै ॥ ७८ ॥ सप

नाइक सौं कहति हैं ॥ कवि ॥ कंचन कंज
कुरंग कलानिधि कंबुकी भाई सुभाइ ह
रीसी ॥ तानवना गरकी नि सिधौं सरहेंडु
ति नैन नमो क धरीसी ॥ अंगनि अंग उमं
गें अछे ह प्रभाकी तरंग सरंग यरीसी ॥ पा
तरीवाकी अगे ठि ऊछ विपुंजनुला गति
देह भरीसी ॥ ५ ॥ दोहा ॥ अंग अंग प्रति
विं व परि दरपन से सव गत ॥ इहरे तिहरे
चो हरे भूषन जानें जात ॥ टीका ॥ यह नाइका
के अंगनकी उजराई सधी नाइक सौं कहें स
धी सौं नाइक नाइका सौं कहें सधी सौं कहें स
सव भांति संभवतु हैं ॥ जौ नाइका सधी सौं
कहें तौ रूप गरवनाई होइ ॥ कवि ॥ वद
नु विला कि सुसि समिता लहें न क्यौं हूं लाच
न नि ॥ ६ ॥ जात हल जात है ॥ नागरिन वे

लीनषसिषलौनिकाईभरीवानिकुवि
चित्रलषिलोचनसिरातहै॥ क्रमप्रान
प्यारेअतिउज्जललसतवाकेमुकरसे
गतमहासाभासरसातहै॥ अंगप्रतिवि
वपरिकेऊदांनयेकयेकएकएकभूष
नअनेकजानेजातहै॥ २२॥ दोहा॥ बाल
ध्वीली॥ तीयतुमेंवैरीआपुछियाइ॥ अ
रगटहीपांनूससीपरगटहोतिलषाइ
टीकायहनाइकाकेअंगकीदीपतिसर्षी
नाइकसांनिवेदनुकरतिहैनाइकहूकहैं
तांसंभवै॥ कवित्त॥ लौनैतनावाशीव
नवाशीमेंनिहारीप्यारीषुभिरहीवाकीउ
जियाशीमेरेमनमें॥ कहैकविक्रमअंसी
ललिततनुनाइलषमेंरेजानदांमिनीदुरी
हैजाइधनमें॥ छविसांछ

नुकीसुकचतैवैदी आ^{पु} अंगनिदुरा इति
यगनमै ॥ अरु अरगटहति परां रदी
पकलौ जातिजगमगिरही अलिनी भव
नमै ॥ २३ ॥ दोहा ॥ मानहु विधितन अ
छ छवि स्व छरा विके का ज डग पग पों छ
नकौ किये भूषन पाई जाद^{यका} यहनाइ का
केतनकी छवि सषीनाइ कसौ कहति है
अरु सषीकौ वचन सषीसौ ताइ ककौ
वचननाइ कासौ हहोतु है ॥ कविना ॥ लु
हीनीन्यौ लोककी लुनाइ लुटिलाइ दे
षरूपकी निकाइ नइलातललचा यह
तेरेदुति आगे आलीकचनके गहनै ये
फीके लागे असे अगातन छवि छाये है ॥
डीठके पुर^{रु} हीतै मै लेहोत अंग अंसी
उ^{रु} ^{रु} इत विरंचनै बनाये है ॥ त

नकीनिकाई स्वच्छराषिवेके हेतु ये तौं ड
गनिकों मानों पग पौं छनावना एहों च्छ
दोहा ॥ यत्राही तिथि पाई यति वाधर के व
रुपास ॥ नित प्रति पूम्यो ईरहति आनन
आपउजास ॥ यीहा ॥ यहनाइ काके मुष
को प्रकास सधीनाइ कसौ निवेदनु कर
तिहो भाइ कहूं सधीसौ कहें तौं सुमिरनजा
नीयै ॥ कविना ॥ येते मान आननकी आ
पकों उजासुर है येह आसुपासु अतिचांद
नीविहारिकें ॥ तिथि निरधार करवें कों केते
सुधरगन कविबोल बूझवे ऊरहत विचारि
कों ॥ यात्राषोति देषिना मुनिथिकों वनावें
फिरि पूम्यो ही कहत वह कों मुदनिहारिकें
कवह कपह त्रादेष कवह वरुन प्रभा कहित
सकुचेत एक वात निरध

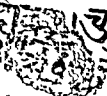
लीनें ऊं साहस सहस लीनें जतन हजार ॥
लों इन लों इन सिंधु तन पैरि नया वत पार
थिका ॥ यह नाइ काके अंग की सुंदरिता दे
षिकें नाइ ककेने त्रय कित कैं रहत हैं सुना
इक सषी सौ कहें सषी नाइ क सौ कहें सषी
सषी सौ कहें ॥ कवि न ॥ जातन की छवि
कों कवि देषत के ते कितो उपमानुवता व
त ॥ तातन की छवि देष वे कौतव नै त लगे
नइ तै उत धावत ॥ साहस कोरि सयानघ
नै बहु भांति अनेक उपाव वनावत ॥ सोभा
के सागर मांर परे अपै हेरत कैं सैर पार नपा
वत ॥ २६ ॥ दोला ॥ सहज से तु पच तोरिया
पहिरत अति छवि हति ॥ जल चादन के दी
पला जय ॥ तितन जोति ॥ शीला ॥ याना
इका के ॥ ३ ॥ शी यति सषी नाइ क सौ कहें

नाइकुसधीसां कहैं तौ पूर्वी नुराग जानी।
यै जौ नाइकासधीसां कहैं तौ रूप गरवना
हो ॥ कवित्त ॥ कनकवरजतनकानक
विचित्रवालवालमके उरवोजआनदके
चतिहैं ॥ वाके आगैं औरनके गातकी नि
काई लागै मतिके निकटधरै लागति ज्यौं
पोतिहैं ॥ जबपहरति पचतोरीयाकी सा
शतवतनकी यौं सहजजगमगतिजेति
हैं ॥ क्रमप्रानप्यारे ध्विच्छाजतविसाल
जलचादरि के दीपति ज्यौं परगटहोतिहैं ॥
२७ ॥ स्वप्नदरसनाइहा ॥ देखौं जगती
चैसीयैसां करलगी कपाट ॥ कितकैं आ
वतिजातिभजिकोजानै किहिवाट ॥ ये क
यहस्वप्नदरसनुनाइकासधीसां कहति
हैं ॥ कवित्त ॥ रंचकनीदप



गङ्गा निरि कै ष गि कै ॥ हरि हं सै रसि कै व
र सै वत रा इ महारि ससौं प ग कै ॥ जागौं
तौं डीठ परै न क धू त्यों ही क पार लै गे रहि
कै ॥ यह जाननि को आवतु धौं कित क
पुनि जातु क वै कित कैं भ गि कै ॥ २४ ॥ दो
हा ॥ सो वत सपनें स्यां मघन हिलि मिलि र
हत वियोग ॥ तव ही टरि कित हू गई नी दौं
नी दन जोग ॥ टीका ॥ यह स्वप्न दर सनु
नाइ का सषी सौं कहति हैं नी द की निद्रा क
रति हैं ॥ कवि ने ॥ आली वि छोर भयों तव
तें धू निया वहु भांति वियोग नईरी ॥ आ
जु ल लाभ न मोहन सौं सपने में अचानक
भेंट भईरी ॥ में सुविधा वहरा इवै कौं हिलि
कै हिय सौं रसके लि ठईरी ॥ नी द हूं नी द वि
लाइ कैं ॥ गि क हूं भाजि गई सु गे ईरी ॥ २४ ॥

साक्षात्तरसननाइका नाइ क कौं होहा
लटकिलटकिलटकनुचलनुइदतुमुक
टकीछौंइ॥ चटकभस्यौंनटमिलियौं
अटकभटकवटमौह॥ टीका॥ यहसाक्षा
तदस्सनुजैसीध्विसौदेध्वौंहेनाइकुतैसै
हीनाइकासषीसौकहतिहैपूर्वानुराग॥
कविने॥ लटकिलटकिचलिनिरषतुवा
रवारफेरिफेरिग्रीवाछाहमंजुलमुकटकी
केसरकीधौरपरकलितरुचिरभालकुंड
लललितसोहेवनमालटटकी॥ कंगईवि
पनमंगअटकभैरवहीतैनेननिमेषुभी
सोभामोहनवानटकी॥ भूलीसुधिधरकी
रीलोकलाजंसटकीरीअटकीहियेमेंफ
रानिपीरेपटकी॥ ८०॥ साक्षात्तरसन
नाइ क कौं नाइ का कौं दो॥ चुनरीस्याम
तारनभसुषससकीउ



लो

तुनीदो निरधिनि सासीनारि ॥ टीका
यहसादातदसनुजैसैनाइकादेवीहै
तैसैहीनाइकुसधीसौकहतुहै ॥ कवि न
अनंतपीनउरोजनकोकनुकीछविमाह
सुपावतुहै ॥ सुषुसोहृतुसौमुजुन्हैयाह
सीदुतिदीपकोमोदुबठावतुहै ॥ सुसुन
हनुसोसुनु ॥ कबिक्रमविहाजतिचूनरी
स्योमसतारकक्योसुलषावतुहै ॥ वहजा
मिनोसीनवनागरिदेषतनीदज्योनेहद
वावतुहै ॥ ६१ ॥ दोहा ॥ ध्यानगुनाइकाको
सनिकजलचषरषलगनुउपज्योसुदि
नसनेह ॥ क्योननृपतिकैभोगवैलहिसुद
ससबुद्धेह ॥ टीका ॥ यहद्रष्टानुगहैनाइ
काकेनेरूपजनसहितदेषिनाइकके
अनुगहै ॥ ज्योसुसधीनाइककेअनुग
उपज्योदेषिनाइकासौकहतिहैनाइकाप

रकीयाना इकह सषीसा कहें तों संभवें ॥
कवित्त ॥ देषीयै कवनिता विचित्र बरवा
निकसौ जाकी जोति हीसौ जगि मगिर ह्यौ
गहु हौ ॥ विहसि विहसि मुख बोलति सरस वा
नी वरसतु मां नौ अमी बूंद नु कौ मेहु हौ ॥ क
हें क विक्रम क्यौ न भूपति कें भाग करै रज
धानी सकल सुद सुपा इदे दुहौ ॥ नैन मीन
लगन पै अंजनु लसनु संनि अं सै सुभजो
समै उपज्यौ सुने हुहै ॥ ८ ॥ शां प्रशां नुरागना
इक कौ दोहा ॥ मोह सौ तजि मोह डग चले
लाल उहि गै ल ॥ छिन कुछ इछ विगुर डरी
छले छवी ले छेला ॥ यिका ॥ यह इच्छा नुरागु ह
ना इक कौ देषिना इका कौ अतुराग उपज्यौ
हंसो ना इका सषीसा कहति है ना इका परकी
या उठा ॥ कवित्त ॥ जाधरी लै नी कौ मंत्र
डार दीनी उान रूप की मि ॥ ९ ॥ धरी तै क

तमलहैं॥ ज्यों ज्यों हठु करिरो कराषी आ
ट अंचल की त्यों त्यों चलु करि कैं उतही कौ
लहहैं॥ माहसौ जुह तौ ना तौ पल कि मैं करि
हां तौ छोडि सवता तौ वा की गैल ला गि च
लहैं॥ नंद कौ कुमार आली वी सविसेठ गुह
रो देषत ही देषि मेरे दोऊ नैं नछलेहैं॥ ८३
दाह॥ चितवनि भोरे भाइ की गोरे मुह मु
सकांनि॥ लगनिल गी आली गरैं चितष
ट कति नित आनि॥ टीका॥ यह नाइ का की
चेष्टा नाइ कसपी सौ कहतुहैं पूर्वा नुराग
हहैं अरुदस अवस्था के भेद मै सुमिरन जा
नीयें॥ करित॥ भूलतिन कैं हं वष भानत
नया की वानि वह अगरानि अगुरीन चटका
इकें॥ वह गोरे वटारारे वदन की मुसकांनि व
हचहच॥ नवन देषी भोरे भाइ कैं॥ घूंघटु
करनि॥ वलु उसारि वहल टकनि मिल

निसजनीसों लपटाइकें ॥ अंसीभांतिज
 वतेंमैंतिरषीहीतवहीतेंपलपलमांरु
 षटकनिचितआइकें ॥ ८ ॥ धा॥ दोहा ॥ इती
 भीरहूंभेदिकेंकितहूहैंइतआइ ॥ करैडी
 ठिजुरिडीठिसोंसबकीडीठिवचाइ ॥ टीका
 यहनाइकाकेंचितैवेकीचतुराईसषीस
 षीसोंकहेंनौहोइनाइकापरकिया ॥ क
 बिना ॥ सोंतेंसेगातसुहाईसीवेंसमनेहस
 नीरसकौबरसावें ॥ बाहकेचाइनुकीचतु
 राईकहलौकहीकहतैनहिआवें ॥ भीरभ
 ईअतिभारीतऊमनभायांकरैकोऊभेदुन
 पावें ॥ ध्यातगहेंजुरिडीठिसोंडीठिफिरैसबकी
 वहडीठिवचावें ॥ ८ ॥ धा॥ दोहा ॥ गडीकुटुमकी
 भीरमैंरहीवैठिदेंपीठि ॥ तऊनेकपरजातिइ
 तसजलहसोंइडीठि ॥ यहनाइकाकेंनेहकी
 निकाईअरुचितैवेकीचतु ॥ इकुंकहतु

हनाइका परकीया ॥ कवि न ॥ प्यारी प्रवी
 नसनेहसनी नषते सिषलों सुषकी नि
 धित्मोही ॥ कैसैं ऊं मो उरतैन ट भरें जुचु
 भी चितचाहनिनेहनिचौं ही ॥ वैठिवधगुर
 नारिनुमंजऊनारिनचाइषरीसकुचौं ही
 लालपगी पलयेकतऊपरिजातिउतैवह
 दीठिरमोही ॥ ८६ ॥ दोहा ॥ नहिनचाइचि
 तवतिदुगनिनहिवोलतमुसिका ॥ ज्योमैं
 रुषरुषांकरैंत्यांत्यां चितचिकना ॥ यिका
 यहनाइकाकीचेष्टानाइकुसषीसाकहतु
 हवहरुषाईमेरचितकौचिकनावतिहें ॥
 कविने ॥ जोरतिनलोचननचाइनहचाइभ
 रमृदुमुसिकानिकै नभावदरसानुहें ॥ बोल
 तिनकहंमनमोहनमधुरचैनमोरतिन
 भकुटीमोरतिनुगातिहें ॥ कहैकविक्रम
 वाकीग ॥ गोवाविकछूसहजवसीकर

कौंपत्रजान्यैजातुहो। ज्यैहीन्यैरहतिय्या
रोशधारुषरुषौकरिन्यैहीन्यैषरौईष
रौचितुचिकनातुहो। ई। आ। दो। हा। ॥ चितई
ललचौईललचौहैचषनुइरिधूंघटपट
मांहा। छलसौंछलीधुवाइकैंछिनकुछवी
लीछांहा। पीका। ॥ यहनाइकापरकियाहैचै
षाजुकरगईसुनाइकुसषीसौंकहतुहै।।
कविता। पूरनसुधानिधिसौंबदनुदिषा
इकरिधूंघटकीआरकीनीकधूकलजाइ
कैं। धूंघटकेपटमैकैंनिरषीनिसंकचित
वनललचौंहीचाहचौकनीजताइकैं। कहैं
कविक्रममृदुमुलकिअलीकीआरच
लीकाहूछलसौंछवीलीछाहछाइकैं। हाहा
कहिकोहीजाहियेछविसौंहीवहमेहीनैन
टरतिरहीजुरीछाइकैं। ई। या। दो। हा। ॥ त्र
वलीनाभिदिषाइकैंरिसिरुडकिसच्चि
समाहि। गलीअलीकी

लीविधिचाहि ॥ टीका ॥ यहनाइ काप
रकीपाकीजुचेष्टादेषीहैसुनाइकुसषी
सौं कहातुहै ॥ कवित्त ॥ आजमें अचान
कविलोकीबुजबालयेकवाकीडुतिरहो
मेरउरमेंविहारिकैं ॥ दामिनीलहेंनचा
रुचातुरीकलाइतीककामहंकीकामिनी
करोरिगरोंवारिकैं ॥ त्रिवलीउधारिकैंदि
षाइकेंगभीरनाभिघूंघटुनिहुटेकीनौंस
कुचिसलारिकैं ॥ भातिभलीसां करीग
लीमेंगजगामिनीअलीकीआटगेहेंग
ईचलीयौंनिहारिकैं ॥ टट्टी ॥ दोहड़ ॥ डगकु
डिगतिसीचलिठडुकिचितईचलीनिहारि
लियेंजातचितचोरटीयहेंगोरटीनारि
टीका ॥ यहनाइकाकीचेष्टासषीसौं कहतु
हेंनाइकु ॥ कवित्त ॥ मनमथवामसीचप
लअत्रिगरेचषअधरअरुनडुतिअति
सरस ॥ सौंनैसेसदसतनलौंनैसेओ

जवनै कौन की नम निलमि वे कौं ललचा
तिहें ॥ इग ये कडि गति सी चली फेर ठाडी भ
इ वं हरि विलोकि चली मुरि मुसिकातिहें
जोवन भरोर भरी गोर दी भयं द गौं न कौं न
यह चोशं टी चुरा यैं चितु जातिहें ॥ १०० ॥
दाहा ॥ भौह उचैं अंच रु उल टि मौर मो
रि मुह मोरि ॥ नीहि नीहि भी न र गई डी ठी ठी
सी जोरि ॥ दी का ॥ यह नाइ का की जु क्रिया
दधीहें सो नाइ क के चित मै व सीहें सु वार वा
र सधी सौं कहतुहें नाइ का परा की था ॥ क्वि त्त
रूप की अमर राधा ठा ठी निजु ग्रह द्वार जा
की ध्वि पर तै वारी य करोरि कै ॥ मोहि दे वि
नै सकुल जाइ कै च ठाइ भौह वाइ चित वनि
मां रु ली नौं चित चोरि कै ॥ मौरि मौरि मुहं
ज मुहां नी अं गिरां नी पुनि ~~सु~~ सल लित
नै न वदुरारे टोरि कै ॥ नीहि न त ~~सु~~ आई भौं न

भीतरसरोजमुषीडीठिसौंमिलाइडीठि
तीकौनेहुजोरिकै॥१॥ दोहा॥ अंचतिमी
चितवनचितैभईआंअप्रलमाइ॥फिरि
अकनकौमृगनमनिदुगनिलगनियां
लाइ॥यीका॥यहनाइकाकीचित्तवनिदेषि
ताइककेचित्तमैवसीहंसुनाइकुसषीसौं
कहतुहैकैवैसैईफिरचित्तवैयहअभिला
षहै॥कविन॥षिरकीउधारिजवनागरिनि
हरीइतठोडोंवनवारीमनमथध्विछाइकै
अंचतिमीचित्तवनिभौंहनिमरोरिकरिल
गनिलगाइचित्तुलैगईचुराइकै॥कहैकविक
स्मइंदवधूकौवदनुलविनेदलालरह्यौठ
गकीसीमुरिषाइकै॥उतचित्तवतुसबका
जविसुराइकैसुफिरिअवलोकिवेकीआ
सउरलाइकै॥२॥ दोहा॥ वेठादेउमदाहउ
तजलकवडवागि॥जाहीसौंलाग्यौही
योताहीसौउरलागि॥यीका॥यहनाइक

कौं-आलिंगनुकरतिहैंसोसधीप्रगटक
 हतिहैंनाइकासों॥कविता॥-अंगमरोरि
 भुजाभरिभैरुतिमोसोंकहाइठलातिहैं
 ठाली॥पांणीकीआगिसिराईपानीसोंरी
 तिअलीकवतेंयहचाली॥चाहउत्तेंउम
 दाहभलीविधिठाठौहैंदेखिवहेंवनमाली
 जाहीसोंतेरोंमलग्योहिमकौंहितुताकेहि
 येंकिनिलागतआली॥३॥दोहा॥देख्यो
 अनदेख्यो॥कीयोअंगअंगसवैदवाइ॥
 वैठतिसीतनमेंसकुचिवैठीचितेंलजाइ
 दीका॥यहनाइकापरकीयाकौंचितेंकै
 लाजकरवोंदेख्योसुनाइकुसखीसोंकह
 लुहों॥कविता॥सोहतिसरूपसनीवैठीही
 छवीलीराधाहैंहैतहानिकस्योअचान
 कआइकौं॥मेरीओरदेखिअदेख्योअनदे
 ख्योकरिमुसकानीअंगअंग॥३॥लदिषा

इके ॥ ये रति सीतल नमै सकुचि मन अंचति
सी चितवन चाहि वैरी सिमटिल जाइके ॥
वह मुसकानि चितवनिसकुचनिक्यो हूं
रति नरही मेरे हिये मडराइके ॥ ६॥ दा
हा ॥ चिलकचिकनई चटक सांलफति
मटक लो आइ ॥ नारिस लोनी सांवरी ना
गिनिलो डि सिजाइ ॥ टीका ॥ यह नाइका की
सांवरी छवि दे पिनाइक आसक्त भयो सु
मधी सां कहतु है ॥ कवि न ॥ चिलकति चा
रुचिक नाईकी चटक भरी चलतिलफ
ति जै सै लगल चकति है ॥ सांचली सलोनी
नी अतिलोनी अजो हौनी वै सोभासनी
सी समनि सहितल सति है ॥ कुटिल सुभा
इ चितवनि प्रेम विषमरी नागिनिये ॥ इ
हिव जनी रिव सति है ॥ मन कौं इ सति अरु
तन कौं ॥ अवे लागतनु जंत्र मंत्र अ

दधुतगतिहैं॥५॥अथनेत्रलगनिदेहा
 मेंहीजान्योलेइननुजुरतवाठिहैंजोति
 कोजानतुडीठिकिरिकीहीहोति॥यीका॥य
 हनाइकाअपनेनेत्रनुकीआसक्तिसधी
 सोंकहतिहैंअनुयहकहतिहैंकेंजवतैंअं
 षिदेषींतवतैंऔरकछूसूझतुनांहीं॥क
 विना॥जादिनतैंआलीतैंकहीकिमनमों
 हनकेलोचनसलोंनैदेषीअतहितुवाठि
 हैं॥तादिनातैंमैंहंजानीचारियहनेनभये
 जातिकोंप्रकासकछुअधिकारचाठिहैं॥
 जोरतिहिनैनविधातनमेंवगरिगईमद
 नहुतासनुवरतुजाठिजाठिहैं॥कौनयह
 जानतुहोंडीठिहीकौंडीठिपीरहोतिकिरिकि
 यीकोउसकतुनकाठिहैं॥६॥दोहा॥त्पों।
 त्पोंप्रासेरहतुज्योज्योपियनअघाशसुगु
 नसलोंनैरूपकौंजुनचषव॥७॥काश॥यीका

यह नाइका के नेत्र लगै हैं सो सषी सों कह
ति हैं ॥ कवि न ॥ हरि मुष चंद त्यों चकोर
कें रहति जां निलोचन कमल गति भौर
की गहत हैं ॥ देष तही देष तरहति दिषसा
धलागी होत अनमेष यों विशेष उमहत
हें ॥ टों नों कछू कृष्ण प्रान प्यार कों सलौ नो
रूपता तें न बु रुति त्रया कलन लहौ तहें ॥
त्रपतन होत क्यौं हूं मां ईरी नयन मेरे पि
यत अघाइ त्यों त्यों प्यासे ईरहत हैं ॥ ७ ॥ दो
हा ॥ अलि इन लों इन सरनु कों परों विषम
संचौरु ॥ लगै लगायौ एक से दो उन कर
त सुमौर ॥ टीका ॥ यह अयने नेत्रनु की अ
वस्था सषी सों कहत हैं नाइका कहै वानाइ
कु कहें ॥ कवि न ॥ सरुजा कें लागै ताहि सु
धिन रहति कृष्ण जोहन तुता के उरं चक
विधौ न ॥ तिन तें अधिक कुसमायुध

के पांचौं वांनजिनके लगे तै टरै मुनिनुक
 ध्यानहो ॥ कृष्णप्राणप्यारकी धृष्टि जिय
 जानि अलोसवही तै विषयविमयनन
 वांनहो ॥ दुहुन विकल करै जतन लगै न
 आन दुहुं भातिगे हुन लगा अहं मयानं
 चा दोहा प्रगन लगतु वेधनु रि ये हि विक
 ल करत ॥ अंग अंनि ॥ ये ते र म व ले विष
 मई क्षण तो छन वांन ॥ यि न ॥ यर ना इ का
 के ने व दे षि ना इ क को विक ल ता भे इ म् य
 यो ना इ क सो क इ ति इ अ य वा ना इ का ना
 इ का मो क ल इ ॥ वा इ न ॥ मो र क यो न वि
 ना जि वि ले शु रि रे इ च ले इ इ नै र अ य र
 नं त नु अ ति अ च क ल गे रि य अ य न वं
 इ पि रे न इ के रे अं स वं अं ग य व ल इ
 य र य न वि य अ इ ल अ व न र य नि ग र
 य व न वि इ नं स र न च न इ इ क र

हा ॥ सोरहा ॥ कोडा आं सू वू द क सियो कर व
रुनी सजल ॥ की नै वदन निमू द डग मलंग
शरै रहत ॥ टीका ॥ यह ना इ क कौ देखि ना इ
का के ने ने त्र विव सभ ये है अरु पर त है ॥
सधी सधी सौ कहै ति है सधी ना इ का सौ क
है ॥ कवित्त ॥ तै त व तै वृष भान सुता हरि
के डग नै कं निहार हरै ॥ वे त व तै न हले
न चले रहे वा ही चित्तौ न की चाह भरै है
कोडा किये अ सुवान की वू द जं जी र व जी व
रुनी ज करै है ॥ नै क अ वें इ न की सुधिले
हुम लिंग म नौ मुह मुं द परै है ॥ १० ॥ दोहा ॥
कहत सवै कवि ॥ कमल सै मो मत नै न प
षां न ॥ नतर कु क न इ न वी य लग उ तै प
जत विरह क सौ न ॥ टीका ॥ यह ने त्र लग
नि है ॥ यह वचन ना इ कु कहै तौ व नै ना
इ का कहै तौ सं भवै ॥ कवित्त ॥ वर नि वर नि

द्रग कहत सकल कविकुरंगमीनयं
जनसमान है ॥ कहै कविक्रमरचिप
चिचतुरानन नै लोचनये पाहनवनाये
मरे जाँन है ॥ कमलसौ कमल लगाइ दे
षों कै यों वेर एक आँक कौं हं ब्रह्म उपज
तुक्रमान है ॥ लागत ही वियतै नतव
ही उपजि उठलगति अगनियानै प्रगट
समान है ॥ १११ ॥ दोहा ॥ सब ही त्यों स
मुहालि छिनु चलति सब नुद पीठि ॥ वांही
त्यों ठहराति यह कविलनवालों पीठि ॥ टी
यहनाइ काल छिता सषीनाइ कासौ क
हति है सषी कौं वचन सषी सौं हं होइ ॥ क
वित्तविलाल मन मोहन की छवि परतै तौ
वतिरी के ही मोहि वहरावति है भोरी
ज्यौं ॥ प्रीति उन अंतरकी प्रगटि लोकि
यति सौं हकी ये कै सै निवहति चोरा चोरी

ज्यों। सबसैलषतिमितैकाहसौनतेरीडी
पीठदेचलतियुनिसवहीकीआरीज्यों
इतउतहेरिचित्तचोरहीकोआरआइर
हतिहैठहराइहैमंत्रकीकटोरीज्यों॥११२
दाहा॥ ठरैठारतैहीठरतइजीठारठरैन
क्योंहंआननआनसौनैनालागतनैन
येका॥ यहनाइकुआपुनैनेत्रनुकीआस
क्तिकहंतुहै॥ अरुनाइकाकौंभ्रमुहैकिना
इकुआरआसक्तिहैसुनाइकाकौंभ्रमुइ
रकरतुहैजौनाइकानाइकसौकहैतौउ
राहनासंभवै॥ कदिन॥ औरतैवानपरी
सोपरीनटरेवहकोटिउपाइकरियेहं॥ क
सकहैजिनरीहिरचेतितनैनचलैनेक
हंललचैहं॥ सौंहीठरैजिहिंठारठरैनहिं
इससैठरठरैसपनैहं॥ आनकीयेकहौं
आननआनसौंयेदगनैकनलागतक्यों

हं॥१३॥दोहा॥हरिछविजलजवतैपरैत
वतैछिनुविसरैनु॥भरतठरतवूत्तर
तरहतघरीलौनैनु॥दीका॥यहनाइका
अपनैनेत्रानकीआसक्तिसधीसौकर
तिहै॥कविता॥अनुनिख्येमेंधुजराज
कोंकुवरकोरुजाकेअंगअंगआलीम
नहिरेहैतहै॥कृष्णप्रानप्यारेकोइहाइवौ
निकाईदेषोंकोरिरतिपतिअतिलाजनि
मरतहै॥ताकीसोभासलिननैजवतैन
घनपरैतवलौघरीलौछिनुनविधुगल
है॥अैसेभयेरहततहिल्लनअनेकभाइ
भरतठरतमुनिवूत्तरइत्तनदा॥१३॥
दोहा॥नैतलगेनिहलमननैनुनधुइ
टहंप्रान॥कामनआयेकइनेरयंके
मान॥दीका॥यहनाइकाअदापरै
यासखीमीछादनिहैनाइ

कविता ॥ नैननि अँसौं गह्यो हिनको पनु
चैन लहें जव लौं हरि हरें ॥ प्रांन धुटें हंन वा
नि धुटें जव क्यो नह सें उपहास घनैरो ॥ को
कुल कांमि कहों वपुरी गई लाजल जाईय
आवति नैरो ॥ तेरे भट्ट अव सैं कसयां नन
ये कह कांमन आवत मेरो ॥ १५ ॥ दोहा ॥
ललनति हारे रूपकी कहों रितियह कौन
जासौं लागत पलकु पललागत पलकु
पलौं न ॥ यिदा ॥ यहनाइ काकी अवस्था
सखीनाइ कसौं कहति है ॥ किजव तेनु मदे
षहौ तव तैवाके पल कहं नाही लगत ना
इकाहं नाइ कसौं कहतौ संभवे ॥ कविता
वारक देखै सुधो नरहें दिषसाधलगे
कुलकांमि भगे ॥ मोहनी रितिकछु मन
मोहन रावरे रूप किधौ उमगे ॥ कौन ठगे
साल ॥ कित काहर में नध सीकर मंत्रप

अथवाना इकुसधीसोंकहें ॥ कवित्त ॥
लागतिनपलकललकरूपलषिवकी
वाहीध्यानपगतिजगतिदिनरातिहें ॥ ज्यों
ज्योंतिरयतित्योंत्योंउमगतिभूंषीक्यों
हंहोतिनअहूषीषरीषसीललचातिहें
आठभयेंवरतिविषमविरहागनिमें
मीनजलहीनकीसीगतिदरसातिहें ॥
सिरज्योंनसुषइनुहुषिहाइआषनिकों
दषेंनअघातिअनदषेंअकुलातिहें
१७ ॥ दोहा ॥ दषतकधूकोंतिगुइतैदषों
नैकुनिहारि ॥ कवकीइकटकडठिरहीर
दीयाअगुरिनुफारि ॥ टीका ॥ यहनाइ
काकहूकैनाइककोंदषतिहेंसोसधीना
इककोंवतावतिहेंसधीकोंवचनुनाइक
सोंप्रीतिकराइवोंप्रयोजनु ॥ कवित्त ॥
मनहूतैअनमनमोहननुमूंरीछविने

ननुमेषुभीव्रजवालरिज्वारिकैं॥वगर
कौवासुसासुननदकौवासुनातैनिरषिस
कैनप्यारीवदनुउधारिकैं॥विनुदषैकल
नपरतियातैदेषिवेकौकर्योहैउपाऊदेषै
इतधौनिहारिकैं॥कवकीनिमेषभूलिलो
चनलगाइइतउटिरहीटाटीकरपल्लवसौ
फारिकैं॥श्वेदोहा॥चकीजकीसीकैरही
धूमैवालननीठि॥कहूँडीठिलागीनगीकै
काहूँकीडीठि॥टीका॥यहनाइकालधित्त
हैसकीनाइकसौकहतिहैसकीहसौकहै॥
कविने॥आनुचकीसीजकीसीकहाक
छुअगसहरारिजुराईसीहेरी॥धूमैहूँनीठिक
हैमुषवैनहलैनचलैजनुचित्रउकेरी॥मेरी
नषैयहतेरीनईगतिमोमनसोचसमृत्ति
येरी॥डीठिलगीकिधौंकाहूँकीतोहिकिडी
ठेलगीकहूँकान्हसौतेरी॥२०॥दोहा॥

नहुननैननिकोंकडू उपजीवडीवलाइ
नीरभरेनितप्रतिरहेतेउवनप्यासवुजा
॥ येका ॥ यहनाइकाअथवानाइकुआ
पनैनेत्रनुकीआसक्तिसषीसौकहंसषी
सषीसौकहंतौसंभवै ॥ कतिन ॥ येकप
लानल गैपलकैललकैलषिवेकहला
गीचटी ॥ नीरभरेनिसद्योसरहेनमिटै
तुउभूरिबषाउपटी ॥ आठहूजामतपैत
रफेउपचारहूसौनिघटैनधयी ॥ यहमी
तिलगीनहिआंषिनुकोंकोउपावकया
धिप्रलैप्रगटी ॥ २१ ॥ दोहा ॥ केवांआव
तिइहगलीरहेचलाइचलैन ॥ दरसनकी
साधैरहसुधहोइननैन ॥ येका ॥ यहना
इकाअपनैनेत्रनुकीइसासषीसौकह
तिहैकैदेषौतौलाजसौंदेषिनाहीसक
तिअनदषैअकुलातिहैमध्यापरकीया

॥ कविना ॥ काहू अलौव दुवेरंगली इहिं आव
तुचारुसिगार कियैं हं ॥ दषिवे कौं तवहांत
वहां ललचा इरहें नचलायें च्लैं हं ॥ ला
ज अचानक आइहें पछितातयहें अप
नैमै नमै हं ॥ सोहें चितैवकी साधैरहें उरस
ध विलोचतहोतनकै हं ॥ २२ ॥ दोहा ॥ साजे
साहन मोहकौं मोही करत कुचै नै ॥ कहा
करै उलटे परे यौ नै लौ नै नै नै ॥ टीका ॥
यहनाइका प्रोठा परकी यानाइक कौं दषि
नेत्र अकुल जहै सो सषी सौ कहतिहै ॥ क
वित्त ॥ भूतिहौ सतिभाइ सषी यहसौ
षइहें सिषइक हि कौं नै ॥ मै सजे मोहनमे
हिवे कौं वह अजन साजवनाइक लै नै ॥ दष
तही ललचा इरहें अवये अपनै सपनै हं
नहौ नै ॥ मोही कौं दैन लगे दुषनै नये ज्यौं
उलटे परजातहें यौ नै ॥ २३ ॥ दोहा ॥ लौ भै

लोभलगेहरिरूपकेकरीसांठजुरिजाइ
हैंइनयेचीवीचहीलोचनयडीवलाइ ॥ शिक
यहनेत्रलगतिनाइकाकौवचनसषी
सौं ॥ कविन ॥ नंदकिसोरकीमोहनीमूर
तिदेषतहीअतिमांमनभाइ ॥ लौलगि
लोभलगेइगआगेंइजांइमिलेमिलिसां
२मिलाई ॥ आपनोस्वारथसाध्यांसवैवि
धिहैंइनवीचहींवेचीरीमाई ॥ कैंसीकरों
नकछूवनिआवतिनैतनुकेमतमेंतौंठ
गाई ॥ रध ॥ दोहा ॥ जसुअपजसुदेषतन
हींदेषतसामलगात ॥ कहाकरोंलालच
भरेअपलनैनचलजात ॥ टीका ॥ यहनाइ
कासषीसिछादेतिहैंतासौंअपनेनेत्रनुकी
असक्तिकहतिहै ॥ कविनसासुरिसातिहु
कैंननदीतऊतसिषत्रैसषिसौषकेवैना
हैंवृजवासुत्रवाईरीमाईचहंआरचलेंउप

हासकीसैना॥ देवतसुंहरसांघरीमृ
तिलोक्तअलोककीलीकलषैना॥ कै
सीकरौहटकेनरहैचलिजाततऊलवि
लालचीनैना॥२५॥ दोहा॥ नैनानैबून
मानहींकितोंकह्योसमुद्रा॥ तनमनह
रैहहसैंतिनसोंकहावसाइ॥ टीका यहना
इकाअपनेनेत्रनुकीआसक्तिसधीसोंक
हतिहैं॥ कविता सहीयैजगकेउपहासनि
तैरहियैगुरुलागनिमांरुगसों॥ उरुआ
नियहैअपनैउरहोसमुद्राइरहीनहिनैक
त्रसों॥ अरुरंचकमेरौकह्योनकरैतनुहं
मनहारैतऊनलेसैं॥ यहनैजगह्योसज
नोइननैनियैहरिहरिहसैंइहसैं॥२६॥
दोहा॥ सकैसकाइनतमविरहनिसादिने
सरससनेहो॥ रहैचहैलागीइगनिद्विप
सिषासीदेह॥ टीका॥ यहनाइकुताइका

कौंधांनुहंकरतुहैतकविरहघटनुनाही
षानाइकुसपीसोकहतुहै॥कवित्तमृग
लोचनकेविधुरैनुभईगतिमानहिजाति
उचारी॥सुददसापरप्ररननेहविनात
थलीउंनअंतरधारी॥जइपदीपसिषा
समनैननुलागीरहैतनकीइतप्यारी॥त
दपिसूकैकधूनहीयोंभरिपूररह्यौं॥विरहा
तमुभारी॥२७॥सोहा॥लाजलगा मनमा
नहींनैनामोवसनाहि॥येमुहजोरतुरंग
लौअचतहंचलिजांहि॥रोका॥यहनाइ
कासपीसोआपनीआसक्तिनेत्रनुकी
अवस्थाकहतिहै॥कवित्त॥दषतवातर
नागरकीछविफांदपरहटकेनरहंही॥
लोचनलोलतुरीमुहजोरसुलाजलगा
मकोमानतनाही॥अचतिहोअपनेइ
तकोबलियेवलुकेंउतहीचलिजांही॥कै

सीकरौं नहिं मोवसये कुलकांनके चारु
कतैन डरां हीं ॥ २५ ॥ दोहा ॥ चित्तलगनि
फिरिं फिरि चित उत ही रहनु दुयी लाज की
लाव ॥ अंग अंग छवि मौर रमै भयौं भौं
रकी नाध ॥ ही काय हताइ कुनाइ काके
अंग अंग की छवि परी भौं है सुअप्रने
चिनकी आसक्ति सषी सौं करतुहें ॥ २६ ॥
विद्या गोवतु महा निरंजित रूपको म
लिन भयौं तरल तरंग हनु नकुं नकां भा
उहें ॥ अंग अंग छवि को अंग अंग भा
भौर चयल कटा सत सुख को चित नद
है ॥ चलियै न सकतु ननु देवां हीं नद
रकितिवृकाज मिश्र ननु नो ननु ननु
तिन क्यौं हं कुलकांनके चित नद
धीरज प्रवल पतन ननु ननु ननु ननु
दोहा ॥ ३० ॥ ३० ॥ ३० ॥ ३० ॥

ते ॥ जकन परत च कई भई फिरि आव
ति फिरि जाति ॥ ये का ॥ यहना इका परकी
या मध्या है सो या की विवस्था सषी सषी
सों कहति है जो सषी ना इ कहूं सों कहें तो
संभवें ॥ कवित्त ॥ तव तै अट को नटनाग
र सों तव तै न क धूम त जावति है ॥ इराति
नहीं छिनु एक कहनि सिवा सर ज्यों बहरा
वति है ॥ कवहं इत तै उत धावति है कवहं
उत तै इत आवति है ॥ च कई जिमि आवत
जात क धूप ल कौन कहं कल पावति है ॥ ३०
॥ ॥ को जां नै कैं हें कैं हबु ज उपजी अ
ति आ गि ॥ मन लागें नै न तु ल गें चलौ न
म गाल गि ना गि ॥ ये का ॥ यहना इकु अ
घवाना ॥ इका के द्रष्टा नुरा गु तै विरह की
अ गि निसौ मन आ कुल है सो सषी सों क
हैं हों ॥ कवित्त ॥ दो सैं न धूम वरैं वितु ईध

नुउन्नतहैं प्रगटै न सिषाहैं ॥ नैं सुकतै न
निलागतहीं मनु आनिलगें सबु अंगनि
दाहैं ॥ लोचननी रटै नंबु मूं उपजीवत
मैं कोउ आगि महहैं ॥ देवें हें जी ठि परै न क
छू अवजाने को आगें धो कैं कैं कहहैं
३१ ॥ दोहा ॥ उर न टरै नीदन परै रहै न का
ल विपाकु ॥ छिन कछाह उछ कैं न फि
षरौ ॥ विष मछ विछाकु ॥ दीका ॥ यहने
त्रलगनिहें सुनाइ क अथ वानाइ कास
की सां कहै है कि छवि कैं छकु षरौ वि
मुहें सो विषता वर्जन करै है ॥ कविज्ञा ॥
सुधिकौ न धरै नीदनै सुकौ न परै महभ
पतै न डरै सुषनिकरै नुबाकु है ॥ कहै क
विक्रम वैया ॥ कृपे कवेर छ कैं सुतौ उछ
ननै कौ न सकौ परिपा ॥ कुहौ सीरौ ल
वरै निस दिन तरफें पलकनि गति ह्यै

धरैकाहूकौनधाकुहै॥ औरमत्तवारेल
तोंमेरेसुत्तवारैयहसवहीतैंविकटविष
मछविछाकुहै॥ ३२॥ दोहा॥ उडीगुडी
लषिलालकीअंगनांअंगनामां॥ वौ
रीलौंदौरीफिरतिध्रुवतिछवीलीछाह
दीका॥ यहनाइकापरकियाप्रोटाहैसु
नइककीचंगकीछांछुयैतेनाइकके
मिलईकौसुषमानतिहैसवीसवीसौं
कहतिहैं॥ कवित्त॥ नंदलालनवनाग
रिपैनिजरूपदियाइठगौरीसीनाई॥ वा
हिजारेतवनैग्रहतेनविलोकवैकोअति
हिअकुलाइ॥ प्यारेकीचंगइतेमैंउडील
षिमोदभरीनिनुअंगनआई॥ होतगु
डीकीजित्तैजित्तुछांछुहतिवैतितछीवैको
उलतधाई॥ ३३॥ दोहा॥ चलतघरघ
रघरतऊघरीनघरठहराइ॥ संमदिउ

ही घर कौं चलै भूलि उही घर जाइ ॥ इहां
यहनाइ का प्रोटा परा की या हो ॥ जहां चि
तुला ग्यो है तहां जाति है संधी संधी सों क
हति है ॥ कविता ॥ बाल विधीर सके च सकें
व सकें न सकें मन कौं सम भावै ॥ होत घ
नै घर घोरुत ऊ घर ये क घरी रहि वैन हि
भावै ॥ रैन दिना कल कान फिरै न कहूंक
ल कानु लषे नहि पायै ॥ जान चलै तौ उही
घर आवति भूलि परै तौ उही घर आवै
॥ ३४ ॥ दोहा ॥ ह्यातैं कं कं तैं इहां नै कौं धर
ति न धीर ॥ नि स दिन डाठी सी फिरति
वाठी गाठी पीरा ॥ टीका ॥ यहनाइ का के चि
तमें लग निल गी है सो या कौं मनु कहूंक
ल पावतुं ना ही या की दसा संधी संधी सों
कहति है ॥ कविता ॥ सो भा मत मोहनी की
पर मर स्या ल चित्तु भी बुजवाल कैं नहि

न बिसरें कहं ॥ वर सत जल तर सत इगद
षिव कों कहं ॥ असी लगनि दुरा अतै दुरे
कहं ॥ घर नै व गर आवै व गर तै घर घावै
फिरै ज्यों विकल पनु कलन परें कहं ॥ वाढी
मन मथपी रनै स कों धरै नधीर जढी सी
फिरति ठाढी छिन न रहें कहं ॥ ३५ ॥ दोहा
पलनि चलै ज किसी रही थ किसी रही उम
स ॥ अवही तनुरित यों कहामनु पठयों
किहि पास ॥ दोहा ॥ यह चित्त लगनि है
सधीना इक सों कहत है ॥ कविना सासन
उसा सति हे वास की सखारहन असी कें
कें कोन के धौ हित मै हितै रही ॥ कित हैरी
तरों मतुरी तों सों लगत तनु अवही त सु
धि बुधि कहि कों वितै रही ॥ चित्र कें सी
लिषी इरी ज कित अचेत भई पलक निल
गति भूली च कित चितै रही ॥ कां हं हे रिह

रिपतिविसरीसवैसुरतिहैंतौतेरीयह
गतिदेषिथकितैरही॥३५॥दाहा॥ज्यौ
ज्यौआवतिनिकटनिसित्यौत्योंषरीउ
ताल॥रुमकिरुमकिटहलैंकरैंअगीर
हचटैवाल॥दीका॥यहनाइकाप्रोदाहै
सासधीसधीसोकहतिहैं॥कवित्त॥गौने
भयेंदिनकैउभयेहियमैपियप्रमकीजो
तिसीजागी॥वासरज्यौवहरावतिनीठिधि
धीचसकेरिसमैअनुरागी॥आवतिज्यौ
ज्यौनजीकनिसांतियत्योंत्योंउछाहउमंग
निपागी॥सात्वरकाजकरैंग्रहकेखतीरति
केलिकैलाहकलाशी॥३७॥दाहा॥भृकु
द्यमटकनिपीतपटचटकलटकतीचा
ल॥चलचषचितवनिचोरिचिनुलीयों
बिहारीलाल॥दीका॥यहनाइकाप्रोदा
हैनाइककीसाभादषिमोहितभईसुअ
पतेतनकीब्रजिसधीसोंकहतिहैं॥कवित्त

कहिवेकीहोइतैंकहैंरीयेकवातकाजिवनि
दनिवानिकसोंकान्हइतकैगयों॥सांवरोंस
लौनौतनसुदहसुभगसोभासदनविले
कतमदनमहुतैगयों॥चलनिकीलटक
निपीरेपटकीचटकतिभोंहनिकीमटक
निसोंचेटकसोंकैगयों॥चपलचषनिच
हचहीचितवनिचाहिअलोरीविहारीला
लुचोरिचितुलैगयों॥३५॥दाहा॥धुटेन
पईयतुवसिछिनकुनेहनगरयहचाल
मास्योंफिरिफिरिमारियतुषनीफिरेंषु
म्याल॥धोवता॥यहलगनिकोंवर्ननुहेजा
कैलगतिहेलाकौअधिकदुषुहेजाकील
गतिहेलाकेकधूमनहमेंनाहीसुनाइका
अवस्थानाइकसषीसोंकहतुहै॥कवि
ला॥छितुवसैधुटियैनविनुवसैचटपटी
नेहुनगरीमैयहअटपटीरीतिहै॥लीज
तुछिडाइमनुरतनजतननाहिअतनुमही

पतेहं अधिक अनीतेहो। मारेहोकां मा
 जेपतु दुस्री भयों अनी फिरेजीतेहोकोत
 रअरुहारेहोको नीनेहो। परवमकेनंत
 ऊपरवसपरीयनुत्तहंकेधुलोकरनो
 ककीनमीतिहो। ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥ ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥ ७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥

मैनमतवारनाहक विचारों मनवांधिली
जीयतुह ॥ ४० ॥ दोहा ॥ मै तो सैं कै वां कल्यो
तूजिनइरूपत्पाइ ॥ लगालगीकरलो
इननुउरमैलाइलाइ ॥ दीका ॥ यहलगनि
हनाइकाअथवानाइकुअपनैमनसोका
हैंसषीसोकाहिवोसंभवतुनांही ॥ कवित्त
तासैंमैंकहीहीकैऊवेरसमजाइमननेनु
केमतलागैभारीषताषाइवो ॥ तवतैनसि
षषोनीइनहिंकीमतिठानीअवकलहा
तपरबसपछिताइवो ॥ लगालगीइनकी
नीउरकोलगाइहीनीलगनिअगनिता
तैकहांभगिजाइवो ॥ कीजीयतुजतनुसी
रोत्पोत्पोहोनदुषरीरोनिमिदिनुअतनु
सतावैतनुताइवो ॥ ४१ ॥ दोहा ॥ सारीज
रीनीलकीओरअइकयुकैन ॥ सोमनुप्र
गुकरवरगहतअहअहरीनेन ॥ दीका
यहनाइकाकेनेत्रदेपिनाइककोमनुह

परहनुनाहीसषीसौकहैंहेंकरवलकैं॥क
विज्ञावाइचदेवनकेवनमेंविहारकरैका
इकेनरोकरहैंविक्रमअकथके॥भुकुटीकु
दिलचालअंजनअसितवासतरकराछ
वानगहैंआयुधसुहृथके॥सारीनीरीअ
दकैकैआवनुअचानकहीयेरतअचूक
योहेदोरहतनथके॥मोमनकुरंगकोप
करलेतहथाहथीराधेतेरैनेनयअहरी
मनमथके॥धर॥जमकिचढतिउतर
तिअयानैकनथाकतिदेहा॥भईरहतिन
टकोवटाअटकीनागरतेहा॥दीका॥माइ
काप्रोढानाइककीसोभादेविआसक्तिभ
ईसोदेषिवेकौउतरतिचढतिहैंसुघाकीति
वस्यासषीसषीसौकहतिहैं॥कविज्ञाको
नूरकौबदनविलोकिकैविकानीवालना
दिनातेदेषिवेकेजतनकरतिहैं॥सुरभीच
राइवृजआइवेकीवेरजांनिरसवसहोति

सबकाज विसरतिहें ॥ सांकगुरजनकी
निसाककै नटाढीरहै छिनइतछिनउनया
विधिठरतिहें ॥ नटकेवटाज्मानटनागर
केनेहपागी ऊंचेअथाममकिचढतिउ
तरतिहें ॥ ध३ ॥ हाहा ॥ अथपूर्वानुरागके
जेतवहोनदिषादिषीभईअमीइकआंक
दगैतिरौछीदीठिअवकैवोछीकोइंक ॥
दिका ॥ यहपूर्वानुरागुजेचितवृनिसंजोग
मेंसुषदाईतेवियोगमेंसुधिआयेसाल
तिहसुनाइकाअथधानाइकुसयीसोक
हहविरहकीदसअवस्थानुमैसुमिरनुक
होये ॥ कविता ॥ रंगरंगीलीभलीविधिसौ
बहुभातिनकसुषदेतहजेही ॥ तेईवेकुंज
भयेप्रतिकूलविलोकहियैदुषसूलसने
ही ॥ नेहकेआदिरसीलेचितौनिहंतीइक
आंकअमीसमतेही ॥ वीसविसेविषसाइ

कहैं उर सालत वांकी विलोकन वेही ॥ धध
दाहा ॥ नैं कौं हूं ई न जु दी करी हरष जु दी
तुम लाल ॥ उर तैं वासधु यो न हीं वासुधु
तैं हं माल ॥ दी का यह पूर्वा नुरा गुना इका की
प्रीति सषीना इक सौं कहति है कि तुमारी
मया सौं अंसौं मानति है तौं तुम सौं कहा
कहैं ॥ कवित्त ॥ ज दिन वाहि अलीनिके दे
षतरी निहि यै हिनु मानिके भारी ॥ अ नैं हि
यतैं उतारि ई देई तुम फूल की माल रसाल
विहारी ॥ ता दिन तैं वह वारि न वारि कौं प्रा
न नुं हं तें लगी अति प्यारी ॥ वा सु गई कुं भि
लाई गई यै करी नत ऊ उर तैं छितु न्यारी ॥ ध
दाहा ॥ धिन धिन मै षट कति सु ही यषरी
भीर मै जात ॥ कही जु चली विनु ही चितैं अ
ठनि मै ही घात ॥ ये का घटना इका पर किया
हैं का हूं भीर मै ना इक नैं देषी हैं सु गानैं जु प
र धि का की मिसु इनि देषी यै यै वात न मु

नीसुसषीसौं कहतुहो॥ कवित्त॥ आजुमि
लीव्रजवाल अचानक सो मतिवाके मने
हगहीहै॥ जानिहती अतिभीरमैं सुंदर मो
तनहे रिहियै उमहीहो॥ ओठनिहीमैं गड
जुकधुकहिमैं नसुनीपछिता आयही
है॥ ध६॥ १॥ वनतनकौनिकसतुलस
तुहंसतुहंसतुइत आइ॥ डगषंजनगहि
लैंगयों चिवनिचैपुलगाइ॥ येका॥ यहना
इकाप्राटाहंसो छवि सौं श्रीकृष्णदेवहै तैं
सैही अपनेनेत्रनुकीलगनिसषीसौं क
हतिहो॥ कवित्त॥ आजुकडौवनकौइत
कैंवनिवांनिकसौंजसुदाकौंकरुई॥ मो
रकिरीटलसैं मुरलीलकुटी अरुपीतप
दीछविद्वारु॥ माटिंग आइभस्यौरसभा
इहरैमुसिकाइमुख्यौंसुषदाई॥ चोंपकी
चाहनिचैपुलगाइकैंलैंगयों तैंननमो
लनिमाई॥ ध७॥ १॥ जवजववेसुधिकी

जीयें तव संवही सुधि जांश। अंधिनु अंधि
 षिलगी रहें अंधि लगी रहें ॥ दीकाय
 हपूर्वी नुरागनाइका अथवानाइक सषी
 सां अपनी वात कहें है ॥ कवित्त ॥ यह श्री
 तिकीरीति अनीं षी कधूक हूं जांनी नजा
 तिकू हागति है ॥ चितचाह कीचों पचटीयें
 रहें अरु प्रेमविधा उरपागति है ॥ नित
 अंधि निसौ वेइ अंधि लगी रहें अंधि न
 कें सैं हलागति है ॥ धचा दोहा ॥ जहां ज
 हां ठाठौं लष्यो स्यां मु सुभगसिरमौ रु
 विनु हूं ऊन छिनु गहिर हनु द्रगनि अजौं व
 हठौं सौ ॥ शिवा ॥ यह पूर्वी नुराग कृष्ण देष है
 तई हों रश्री कृष्ण की भावना करिकें नेत्र
 नुकों आग्रहनु करति हैं सुनाइका सषी
 सां करति है ॥ कवित्त ॥ केलिसुधासाग
 रमैं गेलिरंगरलीपरि पूरन विविधिक

सुधिभाग सिंह २
 सुधिभाग सिंह २

रती जु यों मनोरथनु ॥ तन मन वाट तो
उम गि अनुरा गु भा गु ला ग तु हो म द्य वा स
ची को अनु हं तै अनु ॥ कृष्ण प्रां न प्यारे के
दुहाइ अति छवि छाये जिन जिन कुंज नि मि
लत है शीसां मधनु ॥ तेई तेई कुंज अब उ
नहू विलोके विनु माई गहि राष ति घरी क
लौं अज्यौं दगोनु ॥ ध दी ॥ दाहा ॥ सधन कुं
ज छाये सुषद सरसि जसुर भिस मीर ॥ म
न कें जातु अजौं वहें वा जमुना के तीर ॥
॥ टीका ॥ यह पूर्वा नुरा ग है सो जमुना के
तीर संजोगु मैं जु चित की व्रति हो तिहीं
सुवही भावना कि रिवें सै ई हो तिहें सोना
इका सषी सै कह तिहें ॥ कवित्त सधन
निकुंज छाये सुषद सुहाये अरु मंडित
सरस गुंज पुंज मधुपनकी ॥ प्रफुल्लित
मंजु अर विंदन के वंद्य प्रावें त्रिविधि वि

॥ १ ॥
गारलें सुगंधकुसुमनकी ॥ ललितल
लेतं छवि वलितं लहलजं तिजे हुती वि
हार भूमि नंदके सुवनकी ॥ कृष्ण प्रांन
प्यारेकी सौ वेई जमुनाके तीर अजह
निरषिवहें गति होत मनकी ॥ ५० ॥ हो हो
फिरि फिरि बूझति कहि कहा कल्यों साव
रंगात ॥ कहा करत देखे कहां अलीच
ली क्यौं वात ॥ टीका ॥ यह पूर्वा नुराग स
धौ सौं नाइका कौं वचनु ॥ कविता मदन
गुपाल कौं विलोकि छवि छकी बालप
गी प्रेम पूरन स म्हार विसराईरी ॥ वेई वा
क बूझ फेरि बूझ फेरि बूझ फेरि बर बर
निवेकी रट सौं लगाईरी ॥ हाहा कहि सां
वरै कुवार तो सौं कहा कल्यों कै सौं सौं
जुवा कै संग सुषदाईरी ॥ करत कहा हो
हि ठौर कौं न वानिक सौं कै सी कै सी भांति

निहारी ॥ ने दुकहं नदनं नदनसौ ल गि जै
हैं तों फेरिन कैं हँ धु डारी ॥ वे चति प्रांन
न कैं पर हाथ फसं मति प्रम फदां वृज
नारी ॥ ५२ ॥ नाइका कौ वचन सवी
सौं दोहा ॥ चित वितु वचलु नहर तह
ठिलालन डग वर जोर ॥ सावधान केव
र पराये जागत के चोर ॥ दीका ॥ यह नाइ
कानाइ के नेत्रनुपें आसक्त कें सुनाइ क
के नेत्रया के मन कैं जोर वारी हरतिलेत
हैं सो नाइका सवी सौं कहति है ॥ दोहा ॥
राषत सलूक मिलि मदन महीपति सौं सु
तनु सर कि जाइ कानन की ओर है ॥ चप
रि हरत वृज वालन के मन धन मानन म
ग रि भरे जोवन मरोर है ॥ जागत हं मुसं
सावधान कौ विवस करै चपल चितौं नि
सर वेधत स जोर है ॥ मो सौं कहि आली

मनुससिसूरसमेत ॥ टीका ॥ यहनाइ
काकेलटेलौपरलालवैदीहैनापैवारधू
टहै ॥ सुसोभासषीनाइकसोंकहतिहैअथ
वासषीसषीसोंअरुकविहकीउक्तिहैइ
कविज्ञा ॥ नवनागरिकेमुषचंदकीचारु
प्रभासरसीरुहतेसरसीपुनिवैदीविराज
तिभालयैलालविलाकविलोकतकाहि
करैनवसी ॥ अरुलापरस्यांमसुदससि
रोरुहधूटिधयेअतिश्रापससी ॥ मनो
नैआइनिगहैअहिआहराहनेयेकतहीं
दोउभांनुससो ॥ ६ ॥ दोहा ॥ पचरंगरंग
वैदीलसतिउदतिउमगिसुषजोति ॥ यहरे
चीरचीनोदियाबटकचोंगुनीहोति ॥ टी
का ॥ यहनाइकानाइकनेजैसीधुविसोंद
षीहैतैसीयैभांतिसषीसोंकहतुहै ॥ क
विज्ञा ॥ ललितललारपररसैपचरंगवैदी

षरीऊगउठतिअमंदमुषजोतिहै॥षजन
सेअंजनसहितअनियारेनैनअधरअरु
नगारेगरेंकाशीपोतिहै॥गौहैलषिवकी
ध्विसौहैवेउठौहैकुचलचकतकटिमुनि
मनरसभातिहै॥गहरैसरूपतनपहिरेंचि
नांठीचीरचौंगुनीतिकईकीचटकचारद
तिहै॥२७॥सोरहा॥मंगलविंदुसुरंग॥मुष
ससिकेसरिआउगुरु॥इकनारीलहिसंग
रसमयकियलोचनजगत॥श्रीका॥यहसि
षनषमैललाटकांअंगारहैसुसषीसषीस
कहतिहैकविहकीउक्तिहोइ॥कवित्त॥मंग
लविंदुसुरंगविराजतुभामिनिभालमहा
ध्विछायौं॥आननचंदुकलापरिपूरन
केसरिआउमनांगुरआयौं॥कसकहैइक
नारीमैआइमनांपरिपूरनजोगवतायौं
नैनभसेसकीवरषाकरिचौंनसमूहहियैउ

मगायौं ॥ १८८ ॥ डिठौ नावने न दोहा ॥ लौने
सुहडीठिन लगै यों कहि दीनो डीठि ॥ इनी
कें लागन लगी दियें दिठौं ना डीठि ॥ टीका
यह डिठौं ना कौं वरन नुहें सुनाइ कुनाइ कासैं
कहें सषीसैं कहें सषीनाइ कासैं कहें ॥ क
दिल्लाते हिल बरति को हुते लाजति ब्र
जाते औपसि गारकी अते ॥ नौं हाने को
वरनी न परे छ विमोहन त्याइ ही मालली
अते ॥ सुंदर आनन डीठिन लागै कस्यो अ
दिन्यौं हितुमानिहि अते ॥ तो मुखये अ
चलागन लागीरी इनी कें डीठि डिठौं ना
दोअते ॥ १८८ ॥ दोहा ॥ विधलियसैं हसि
कैं कस्यौं लष्यैं डिठौं ना दीन ॥ चंदमुखी सु
षचंदतैं भलौं चंदसमकीन ॥ टीका ॥ यह
डिठौं ना वरन ननाइ कुनाइ कासैं कहें अथ
वाश्रंगारकता सषीसैं कहें ॥ कवित्त ॥

प्यारीकों चारु सिगार निहारि हीयें पतिकों
अति मोद भस्त्रों है ॥ चाहि चषो इक हीं मुसि
का इस ही विधि रूप सके लिध स्यों हैं ॥ जामु
षकी फल के जु प्रभास कलंक मयंक धिरा
जिद स्यों हैं ॥ सामुष तै वडि ठां ना दें आनु भलै
यह चंद समान क स्यों है ॥ १८० ॥ मुष वर्ननं
क्षहा ॥ हाहा वदनु उधारि दुगु सुफल करे स
वकाइ ॥ राजु सरो जनि के परै हसी ससी की
हाइ ॥ योका ॥ यह मुष वर्ननु है सुसधी नाइ का
सोक है है न बोटा के प्रसंग में वने मानु छु जावे
सधी क्यो ॥ इ कहै तो वने ॥ कविता ॥ लोचन ल
हको फलु सुफल हमारे करि प्या ॥ शिपान प
ति ॥ को सने हर सलीत करि ॥ ते ही पाई परम
निकाई ॥ अवधि अवये तीव्र षभा ॥ नकी कु
वारि ॥ अरवी न करि ॥ टारि पर घूंघट को हाहा रि
उधार मुषु निज छवि पां निग्रु में पीके नै नमी
न करि ॥ कंज छवि छोन करि ससि हिमली नि
करि सौं तिन को दिन करि प्यारे को अधीन क

७२ ॥ भरे जांनि पूरन कला निधि सों कि लमि लातु सर र सु धा निधि सों लि

नधि वर विवकीर की प्रभानि दर वदनु दु
राइ वेंठी नीने नीने चीरमें ॥ १६ ॥ वांती
वर्न न दोहा ॥ कि यहा इल चित चाइ लगिव
जि पाइल तु व पांइ ॥ पुनि सुनि सुनि मुषम
धुर धुनि कैं पां न लाल लल चोइ ॥ टीका ॥
यह नाइक की आसक्ति जांनि सषी नाइक
सों प्रीति बटाइ वे कों कहति है वानी वर्न नु है
॥ कवि न ॥ गज गति तेरी है री लटूत वही ते
भ यों तो पै सुनी पाइल की मन क मु का ईरी ॥
त वही ते वा के उर लागी अति चर प दी तु व मि
लिवे कों लल नु है क न्हो ईरी ॥ वीन क सुर नी हूं
ते म धर सर स धु नि का लि कहते री उ नि वा
नी सु नि पा ईरी ॥ का हे ते न वा के उर म द न म रु
र उ ठे या ही ते हो क ह न ज रु र तो सों आ ईरी
१६ ध ॥ दोहा ॥ छिन कुछ वी ले लाल वह न ह
जां लौ व तरा न ॥ ऊ ष म हू ष पि यू ष की तों
लगि भू ष न जा त ॥ टीका ॥ यह नाइक की
वानी की मधुराई सषी नाइक सों कहति है

॥ कविता ॥ जाकी सुनें धुनि वीनु कहा गहि
 लाजिय कीवन भागति है ॥ जो सुनिकें क
 विक्रम कहें मुनि की मनसा अनुरागति है
 जौ लौं छवी ललला तुम सो वह वालन वा
 तनु पागति है ॥ तौ लौं मय्य घपियूष की ऊ
 ष की भूषन कें सै हला गति है ॥ १५ ॥ किना
 रीवन न दोहा ॥ जरी कोर गोर वदन वटी धरी
 छवि देखु ॥ लसति मनो विजुरी किये सारद
 ससि परवेषु ॥ दीक्षा ॥ यह नाइका के मुख पर
 किनारी की सोभा सधी नाइका सै कहति है ॥
 कविता ॥ आजु मैं निहारी ब्रुषभान की दुलारी
 इति धारी अति सकल सिगारतन साजिके ॥
 जगमग जोतिन वजोवन की देखत ही डग नि
 कां गयो दुषदं दसव भाजिकें ॥ तन सुषसा
 रीतापे कंचन किनारी गोर आनन के चरू
 को देखी छवि छाइकें ॥ सरद की पून्यो के
 सुधाति धिके आसुपासुमानो रस्यो दं मि
 नीको मंडल विराजिके ॥ १६ ॥ भां हवनन
 गा मै न नि नो र र र र र र र र र र र र र र र

॥ दोहा ॥ नासामारि नचाइ दग करी क
 काकी सांहा कांटे लौक सकतहि यें वडी
 कटी ली भौह ॥ दीया ॥ यहनाइ काकी भौं
 ह नचाइ के कीचे दृष्टी सोनाइ कुसपी
 सो कहतुहें ॥ कवित्त ॥ मोतन हेरि परांसि
 निसौ वन नलगी वनितार सछाकी ॥ येक
 रतीरतिकी इति होति नवाकी निकाई नषे स
 मताकी ॥ नौक चटाइ उचाइ के आठनचाइ
 करी दग सां कहका की ॥ वाछविकी वेकाटी
 लीसी भौहें करे जे मसूलसी सालत वाकी
 ॥ ६७ ॥ अथ ननु वर्ने न दोहा ॥ वारें वलि
 ता दगनु पर अलिष जन मृगमीन ॥ आधी
 डीठि चित्तौ नौकिये लाल आधीन ॥ दीका
 यहनाइ काके नेत्रुकी अधषुली चितवनि
 दधिनाइ कु आधीन भयो सुसपीनाइ कसा
 कहतिहें ॥ कवित्त ॥ कारे रुषकारे रतना
 रे अनियारे सोहें सहज डरारे मन मथमत
 वारेहें ॥ लाज भरभरे भारेचा पलनिहारे ता

रे सांचे के सटार प्यारे रूप के उज्यार हो ॥ श्री
धी चित वनि में आधी न कि यों तैरी हरि टों
नै से वसी कर के लौने धे निहारें हैं ॥ कमल
कुरंग मीन बंजन भव र बुष भांन की कुव
रि तेरे नैन निषे वारें हैं ॥ ६ ॥ दोहा ॥ चमच
मात चंचल नयन विच घूंघट पट जीना ॥ मा
न दुसुर संलिता विमल जल उछरत जुग
मीन ॥ टीका ॥ यह नाइका के नेत्रन की सो
भा सषीनाइका सौ कहें नाइकुहनाइका सौ
कहें सषी सौ कहें ॥ कविता ॥ रूप की रसा
ल आ जुदषी वृजवालयक के तीसो भास
नीवाक सौने से सरीर में ॥ टाखों नटर तुव
हमा उमाहिये ते क्यो हूं वैठी मुषठां पिगुरले
पानकी भीर में ॥ कहें के विह्वल अति चपल
बिसाल वाके लोचन जुगल मलकत जी
नें चीर में ॥ क्यो नमनु होइ छवि निरषि आ
धीन विविमीन उछलत मानों सुरसरि नी
रमों ॥ ६ ॥ दोहा ॥ करचाह सौंचु टिके के व

रउडोहमेंन ॥ लाजनवायेंतरफरतकर
 तषुंदसीनेन ॥ ^{दिका} ॥ यहनाइकाकेनेत्र
 लाजश्चौरचाहतेदाऊनकेवसषुंदसीक
 रसहेंसुसषीसोनाइकसोंकहतिहेंनाइ
 काकूकहसषीसषीकूसोंकहो ॥ ^{कवित्त} ॥
 नेननवनागरिकतरलतुरंगअंगध्वि
 कीतरंगरंगनिधरकधरैधरें ॥ मदनुप्रवी
 नतिहेंफरिवोसुधावतुहेंधुंधटकीश्च
 रश्चसोकोतिगुकरैकरें ॥ कीनेचा ॥ उश्च
 उगीसोचुरकिचपलहोतघरहीउजोहते
 हीउमगभरैभरै ॥ लाजवागवसयेतर
 फरातताईभरैकरतदुषुदीसीपगहरेंह
 रें ॥ २०० ॥ ^{दिका} ॥ सायकसमघायकनय
 नरंगेत्रविधिरगगात ॥ ऋषोविलषिदुरिज
 तजललषिजलजातलजात ॥ ^{दिका} ॥ यह ॥ १७
 नाइकाकेनेत्रनुकीसोभासषीनाइकसो
 कहेनाइकुनाइकसोकहेंसषीसोनाइकु
 कहे ॥ ^{कवित्त} ॥ साइकसेघाइहेतीषनत

रत्नद्वयसंतस्यामश्चरुनविधिरगेगातहं
कहं कविक्रमजाकेउरमैभिदत्तताहिसु
धिनरहतगातघुंमिघननैतहं॥ येनैपर
भायेहं विषमविषश्चजनसायाहोनेंवि
सषविथाउरसरसात्तहं॥ सफरोविलोकि
जलविलविदुरतिमुगभटकतविपल
यजातजलजातहं॥ ३॥ दोहा॥ धरजीन
सरमैनकेश्चैसदेषुमैन॥ हरिनीकेनैना
नुतैहरिनीकेयनन॥ दोहा॥ यहनाइकाके
नेवनुकीसोभासधीनाइकसांकहतित
कधिज॥ येरेकितयननकमेरकीनै
कजपुंजअममाकोनैश्चरिचकलगन
हं॥ साहितविसालयेरसालसानसोनि
नुकादपमनुहृतकरतचितचैनुदोत्त
पलकटाकुवरजीततमदनपरसुयक
निकरश्चांरदेषश्चैनैनहं॥ कोनइए
दंदननीकवृषभाननदनेकेहरिनीकेन

नहें ॥ २ ॥ दोहा ॥ सरसिगार मंजन की ये
 कंजन मंजनुदन ॥ अंजन रंजन हं विना
 षंजन गंजन नैन ॥ टीका ॥ यह नाइ काने
 त्रनु की सोभा सधी नाइ कसौ कहें नाइ कु
 नाइ कसौ कहें सधी सौ कहें ॥ कवि ॥
 कंज कुंरंग गुमानु गंजन की मन मंज
 नहें अनियार ॥ षंजन मीननु के मधु मंज
 न अंजन हं विनुय कजगार ॥ लाज समा
 ज सुसील हे सीर सरंग भरे विधि मैन सु
 धार ॥ कथ कहें उपमा का ही ये तिय या
 जग मंदग उजार ॥ ३ ॥ दोहा ॥ जोग जुग
 तिसिषये सबे मनं महा मुनि मन ॥ चाह
 तपिय अद्वैतता सबतु काननु नैन ॥ टी
 का ॥ यह नाइ का केने त्रनु की सोभा अरु
 तरु नाइ का विला सुपिय की चाह सधी ना
 इ कसौ कहति है सधी सधी सौ कहें ॥ क
 वि ॥ लीनों उपदेश महा मुनि मीन के तनु

कोजोगकलाकुसलविमलविलसतुहें
तनमनमोहनसौयेकभयौचाहतहेंका
ननकोसेवतजुगतिजोतिवतहें॥ऋष्म
प्रांनप्यारेकीडुहाईजिन्हेंदेषतहीविरह
कलेसदुषसकलनसतहें॥सरलहेंसु
भाइउरमांमधरेंस्यामछविप्यारीतेरें
नमनहरतमहतहें॥ध्वा॥पुतरोवनन
दाहा॥सबश्रेगकरैराषीसुधरनाइक
नेहसिषां॥रसजुतलेतिअनंतगतपु
तरीपातुररा॥दीक्षा॥यहनाइकापुत
रीनकोसोभाअरुसनेहकोअधिकई
लषीनाइकसोकहतिहें॥कदिताचारुप्र
भाअंपलकेंमलकेंमृदुपीतपुटीयह
सुधरीहें॥नाइकनेहसिषांमवरसभेद
सधईप्रवीनकरिहें॥ऋष्मकरेंअति
चाइनिमोंगतिलेतिमनेंबहुभाइभरी
लेतरिमांमनेंअतिचातुरप्यलुगगइ

॥६॥ लागत कुटिल कटाक्ष सरक्यो
 न होइ बहाल ॥ कठतु जुहिय हिंदु साल क
 रित ऊर हत नट साल ॥ टीका ॥ यहनाइ का
 कनेत्रनाइ कके हृदयें चुभेहें सो सधीना
 इकासां कहति हेनाइ कु सधीसां कहें सधी
 नाइकासां कहें ॥ कविता ॥ भिदं सधती
 रते तो तनको बढावै पीर जानी यह वात
 जिय सकल डरातहें ॥ लागे ब्रजनागरि
 के कुटिल कटाक्ष सरक्यो नहो ॥ हिविकल
 विलास सब गतहें ॥ विक्रमनिधान अ
 निपारथ के वान हंतरे मरजां न इनके
 अनौष उत पातहें ॥ देखीये नद्या उरक
 ठत दुसाल करिये ते पर देखो नट साल र
 हिजातहें ॥ ६ ॥ नासावेध वर्न न हो ॥ वे
 धत अनियारन यन वेधत करिनि ॥ नष
 धु ॥ वरवट वेधतु माहियों तो नासाको वे
 धु ॥ टीका ॥ यहनासाके वेधकी सो भा नाइ
 कु सधीसां कहतुहें ॥ कविता ॥ अनियारन

इकासौ ॥ कवित्त ॥ आजुसिगारव न्यौतिय
 तरै जगमग जोतिसमूहकरै ॥ दषत
 आरसीवारहीयै हरिकौ हरिक्यौ नहरै ॥
 वसरिके मुकती की प्रभा अति उजल अं
 निपरी अधरै ॥ होशुन चूतौ लग्यै मृग
 लाचनिक्यौ पटसौ अथपौ छिपरै ॥ २
 कण्वन न दोहा ॥ इहाइ हिंदही मांती सु
 गथत न थगर विनि सांक ॥ जहि पहिरै
 जमदग प्रसतिल सतिह सति सीनां
 का पीका ॥ अहेनाइ का की नथ की सो
 भां सपी कहति है अयोक्ति कविता हर
 सांवनै ॥ कवित्त ॥ सुरनिसमेतना कथ
 हीतै कहत मुकत निजुत मुकत पुरी सीद
 रसति है ॥ कहै कविक्रम मन मोहन कां
 माहिबे कां माहिनी की सिधि मानौ सोभा
 सरति है ॥ तो पहिरते जगनयन प्रसति
 साभा सरसति अंस मानौ नासिका हस
 ति है ॥ अहेन थउरमै नि संकतंग रचकरै

ईमुकताकेगथसहतिलसतिहै॥
सीकवर्ननं दोहरा॥ जटितिनीलमनि
जगमगतिसीकसुहाईनाक॥ मनोंअ
लीचंपककलीवसिरसलेतुनिसाक॥
॥ टीका ॥ यहनाइकाकीनाइकमैसीकह
ताकीउपमाकविउक्ति॥ कवित्त ॥ पूरन
मयंककेकिअंकमेलसतुकीरुनेकनिर
षतुहीरुरितुचितचेतुह॥ प्रफुलितुपंक
जपेसाहेकरहाटकिधांतिलकसुमनसु
षसोरभसमेतुह॥ नीलमनिजटतध्वी
लीतेरीनाकपरसीकयोसतिमानो
साभाकोनिकेतुह॥ मरेजानमुकलित
चंपककीकलिकापेवांसाअलिसावकु
निसंकरसलेतुह॥ १५॥ लोणवर्ननं ॥ द
हा ॥ ॥ जदपिलोणललितोतंऊतूनपह
रिइकअंक॥ सदांसंकवदीयेरहेरहंचढी
सीनांक॥ टीका ॥ यहनाइकाकीनाकमै
सीकवर्ननं दोहरा ॥ जटितिनीलमनि

नाइकासांक्षेहकहतिहैं॥ कविज्ञ ॥
 किधोंहैंबंदनछविदीपकोंसुमरजाकी
 जगरमगरजातिपूरनप्रकासिका॥
 किधोंकविक्रमचारुचंपककीकलि
 काहसहजसुगंधनिकसतिजाकेस्वा
 सिका॥ जदपिलवंगअतिललितौंस
 नितकृतंमतिअहिरिडरपतिउरदसि
 का॥ मानकेभरमलियेमोहनविलाकि
 रहमृगनेनीनिरषिचठीरीतेरीनासिका
 ॥ ११॥ तस्योत्तवर्तनं॥ दोहा॥ लसनसेत
 सारोठयोंतरलतस्यानाकांन॥ यस्यांमो
 सुरसविसलितरविप्रतिबिंबयहांन॥ धी
 का॥ यहतस्यांनावर्ननहंसषीकांचच
 नसषीसांनाइकहूकांचनसषीसांक
 विहूकीउक्तिहोइ॥ कविज्ञ॥ छविसांनिहा
 रीवुषभांनकीदुलारीआजुसकलसिगा
 रसाजवन्मोहेंसुठानको॥ कहेंकविक्रम

चारुप्रभाकीनिकाइलषैगरवविलाति
सुरपुरवनितात्रिको॥ सोहनुसुदमअति
जिनैसैतसारीदृष्यांतरलतस्मानाहल
कतुवाकेकानको॥ मेरेजानदेवनकीरु
लमलातुपेपीयेजूपस्यैहैप्रगटप्रति
विबभानको॥ २१२॥ कर्मधूषनवर्नन
दहा॥ सालतिहेनटसालसीक्योहनि
कसतनांहि॥ मनमथनैजानैकसोपु
भोषुभोजियमांहा॥ दोका॥ यहनाइका
कोषुभीकीसोभानाइकुसंधीसांकहतु
हं॥ कविनाशधिकाप्यारकेआननपेध
वितीनहंलोककीआनिगुभीहं॥ मैंनिर
धीजवतैतवतैमतिमेरीलुभाइतहांहि
चुभीहं॥ रूपकेवौहिथकानमेंवाकेंवि
रात्रतिवोपअनपलुभीहं॥ सालतिह
सुमनोजकेनजकोनैकाममनोउरमां
मभीहं॥ १३॥ तद्विधनवर्नन॥ हाहा॥ त
निविचकी हां

कांन ॥ लाललालचमकतचुनीचोंकाचि
 न्हसमानं ॥ यिका ॥ यहतरिवनकीसाभा
 सधीनाइकसोंकहें नाइकासोंकहें अरु
 नाइकसधीसोंकहें तोरूपगभिंताहोइ ॥
 कवित्त ॥ श्रीजुकीवनकवरनतनवनते
 तरीछविकीछटानुकीघटासोउमगति
 ह ॥ दमकतिसरससिगारअपजावनु
 कीजोवनकी कांति जगजातिसीजगति
 ह ॥ कनकतस्याननुकोललितकपोल
 निकीदुतिमेंसमाइगयोअदभुतगतिह
 क्रमप्रानप्यास्कीसों चारुचमकतियतों
 लालुलालुचुनीचोंकाचिन्हसीलगतिह
 मुरासावर्ननं ॥ ॥ ॥ लसोंमुरासाति
 यश्रवनयोमुकतनइतियाइ ॥ मानोंपर
 सकपोलकरहस्वेदकनछाइ ॥ यिका ॥ य
 हमातीकोमुरासानाइकाकेश्रवनमेंहेंता
 कीसाभादधिसधीनाइकसोंकहतिहअ
 थवानाइकाकेकपोलयैस्वेदधिसधीना

इकसौ मुरासा कौ वन नु करि कहैं तौ लछि
ता जो नोयै ॥ कवि च ॥ प्राजु न च ना गरी
की आगरी विला की छवि देखि के कौ नैन
ललचा इललकत है ॥ कहैं कवि कृष्ण वही
वांनिक विला कठ गरी रूप गे तव तै लंग
तपलकत है ॥ तरुनी के अवन अमोल मु
कता फल के करना भरन अंसी आभा छ
लमुकत है ॥ मर जांन परसि कपोल इन्ह
के उर उलख्यो प्रसव देत ई बूद फलकत है ॥ १५
पुसिकान वन न ॥ होहा ॥ नष सिष रूप भर
परतो मांगत मुसकांनि ॥ तजत न लोभन
ताल चीये लल चौ ही वीने ॥ छीका ॥ यहना
इका अथ वाना इकु मुसिकांनि देखां चाहत
हं मुअपनैने तनु की आसक्ति कहतु है ॥
कवि च ॥ देष नही अनमेष रहे ॥ उमड सपर
न विचारत गौं ॥ रावर रूप अनूप सौ पू
रहैं जउन षत सिष लौं ॥ मांगत है इत
न परतो मधुरा मुसकांनि अर्धांत न ल्यो

हं॥ नैनभये अतिलालची ये ललचां निकी
 वां नित छांऽत कयां हं ॥१६॥ तस्य वर्ननं ॥
 दाहा ॥ नैक हसां ही वां नित जिलष्यां परतु
 मुषनी ठि ॥ चां का चमक नि चो धि में परी
 चां धि सी डी ठि ॥ पीका ॥ यह अकार नि हां
 सी जां नि गुरु सधी नाऽका सां सी छा के प्र सं
 ग में चां का की चमक की वडा ई करे अथवा
 नाऽकु द्दनाऽका सां कहें तो सं भवे ॥ करित
 सी स फूल दमक तु कि तिल कु रल मला
 तु जो ति को समूह जगम गतु अमं दु हे भा
 ल की चिलक चारु रल क कपो लनु की उम
 ण्यां परतु अति दु ति न को वुं दु हे ॥ हा हा वलिन
 क मु सि कां नि कां नि वां नित जि च कि त हे र
 तु च तु र न द नं दु हे ॥ चां का की चमक की च
 षनु च ष चां धी हो ति चा ह्यां न परतु नी के
 चारु मुष चं दु हे ॥१७॥ तस्य वर्ननं ॥
 डार हा डी गा ड ग हि नैन व यो ही मां रि चि
 लक चो ध मे रू प ठ गु हां सी फां सी फां रि ॥

देवा ॥ यह ठोड़ी गाऽ कौं वन नु नाऽ कुं जा
कासा कहें संकीसा कहें सवीनाऽ कासा
कहें ॥ कवित्त ॥ कसनु केवन के उपकूल
तहें भुकु ये गिरि आर विचारा चारु लिला
रुसिगार की चौधि में देतु प्रचंडऽ क्षानहि हा
र ॥ फांसी गार सुसिकानिकी चारिके ठोड़ी की
गाऽ कु आवागहि डार ॥ प्यारी महाक्ष गुतै रौ
सरुप देयात जिनै न बरोहिनु मार ॥ १८
लीला वन नंदो हा ॥ ललित स्याम लीला
ललन वटी चिकु क छवि इने ॥ मधु घ्रा क्य
मधु करुप स्यां मनौ गुलाव प्रसून ॥ दीका ॥
यह नाऽ का की ठोड़ी पै लीला की साभा सपी
नाऽ कासा कहति हैं ॥ कवित्त ॥ कुंकुम गारि
कियां मनौ देह महा सुकुमार सुगंध कांभ
ना ॥ रूप सुधा भस्यां चंद सो आननु पीत व
मन कौ ललचौ ना ॥ ठोड़ी की गाऽ मै स्यां
लखिंडु निहारत रुस्य के मन सो ना ॥
मधुपान गुलाव के फूल में मत्त पस्याम

भारकोना ॥ कंठवर्ननं ॥ चहा ॥ षरील
 सतिगोरोगरं धसतिपांनकीपीक ॥ मनौ
 गुलीवंदलालकीलाललालडतिलीक
 ॥ यहा ॥ यहकंठवर्ननहसुकुमारसधीन
 ॥ कसाकहं अथवाना ॥ कसाकहं ॥ कवित्त
 पारमेंपारितीहरीलधीनषतसिषला
 सुनिका ॥ इभरीहो ॥ कसरिकीसुकुमार
 मनो कुचिवुजसां अपिविरंचिकरीह
 गारीकीगारगरमनमाहतिसाहतिपीक
 कीलीकषरीह ॥ चारुगुलीवंदलालकी
 लालमनौडतिकीप्रतिलीकपरीह ॥ २०
 कुचवर्ननं ॥ चहा ॥ कुचगिरिचटिअति
 यकितकचलीडिठिसुषचाड ॥ फिरिनटरी
 परियेरहोपरीचिवुककीगाड ॥ दीका ॥ यह
 अंगदषतदषतदष्टिठोडीकीगाडमेंजा
 ॥ परीसुटरतिनाहीसुनाइकुअपनीअ
 वस्थाना ॥ कसाकहं अथवासधीसांक
 हो ॥ कवित्त ॥ डीठिनदीचिवलीतरनीठि

यहकेचुकीकेवीचकुचसोभाउप
मानेहतिनकीप्रभादपिनाइकुनाइकासो
कहेसधीनाइकासोकहेनाइकसोकहे
कावित्त... कंचनवरनमनहरनअजेल
गुरुवैसेगोलगारेसीसस्यामताधरतह
उन्नतकररषरचीननेलुनाईभरमदनव
सीकरसेमनकोहरतह॥ कुचनिनेचीर
सतकंचुकीतिलोहीमांफप्यारियेदुराय
तेदुरतउघरतहोकहेकविक्रमजसंसुक
विकेआंकतुमेश्रथउमगडीहिप्रगटपर
तुह॥ २२३॥ उरवसीवनेतहोता॥ उरमानि
ककीउरवसीइतुघटतुडगदागु॥ मलक
तुवाहिरभरमनातियहियकोअतुरागु
यका॥ यहउरवसीकोसोभासधीनाइ
कसोकहेतिहयाकेअतुरागकीपूरनता
प्रगटकरतिहसधीनाइकासोकहेतोति
यपहुसंबोधनुहोइनाइकालछिताजानी

॥ कवि ज्ञान ॥

प्रां। श्राजुकिनिकारवरनतनबनति सौ
पंरूपकी तरनि अनंदुवरसायें ॥ अंग
अंग आभूषन जोति जगमगं अं सो तो व
नावरति रंभा हन पायों ॥ मंनिक की ल
सी उख सी तिये उर पर इगनिको दुष दं दु
दषतन यों सो ॥ अंग अंग आभूषन जो
ति जगमग सो ति अं सो तो व नावरति रंभा
हनया यों ॥ मंनिक की ल सी उख सी ति
य उस्प मंनिको दुष दं दु दषतन सा यों
ह ॥ मर जांन पूरन कं अंतर को अनुरागु हिये
भरिवा हरि छल कि छ विछायों ॥ २२ ॥ हा
थ व न नं हो हा ॥ व डे क हा व त आयु सो गर
वण पी नाथ ॥ तो व दि हो जो राषि हं हा थ नु
ल धि म नु हा थ ॥ यो का ॥ यह ना इ का के हा
थ की सो भा स पी ना इ क सो कहति हो ॥ क
वित्त ॥ चा हं ह्ये बिनु की छ वि पै र द हो ति र तो
पल हू की र जाई ॥ करि फरी नु हं थे सु थरी
अगु रो नु भरी अतिको मल लाई ॥ राषि हं हा
थ न वेली के हा थ ल वें मनु तो व दि हो चं नुरा

ई ॥ रूपसयाननुका अपन मन स्यामनि
 संक करौ गरुवाई ॥ २५ ॥ नषरु
 चिचुनेरुं डारिकें ठगुलगाइ निजुसाधार
 को राविल ठिलें गयो हथा हथी मनु हाथ
 थिका ॥ यह हाथ की सो भाद विनाइ क को
 मनु या के हाथ ना हीर ह्यो सुनाइ कु आप
 ने मन की गति सधी सो कहै है नाइ काइ सो
 कहै है ॥ कविता ॥ बूंदल से महदी के सुरंग उ
 ही अरु नाइ करंगर चैके ॥ रषव सी कर मनु
 दिषाइ के साथ लगाइ लियो अपन के चारु
 नष छिति चूरु डारि अधीन कियो बहु भां
 ति भुरे के ॥ राष हयै नर ह्यो मनु हाथ हथा
 हथी हाथ गयो सु मिले के ॥ २६ ॥ अगुरी व
 ने न दो हा ॥ गौरी छियु नी अरु न नष छल
 स्यां मध विदेइ ॥ ल हतु मुक्ति रति पल कु प
 हने न न वे नी सइ ॥ किका ॥ यह नाइ का की
 अगुरी नु की सो भा नाइ कु कहतु है नाइ का
 सो ॥ कविता ॥ कौवरी गौरी ल से छि गनी अ

रुलालप्रभानयकीसुषदैनी॥ताप्र
मछलाकीफकीछविनेननुकांनपि
तेअैनी॥लोचनसंतरहंगतिमुक्तिनि
षकदषतहीमुगनेनी॥नोकग्यांमवि
नतिराधकेतीरथगनकीगतित्रयनी

२७॥लौटवननंशु॥बहननिकामि
यकोरइचिकठनगानभुनसलामु
लुटिगौलौटनयेदुनरोदुनकुनकुन
हीका॥यहनाइकाकीलउविधेनाइ
नेदषाहेसुमश्रीसाहसुनद

नआनुलधोबुप्रभान
हीचहुंकेलनिकी
यांभुजावरचोटनि
दितोकादिनकच
भाभुनसलनिकी
विलाकनसि
रयातत
तपट

लषिललनाकीलौट॥यिका॥यहनाइका
कीलौटकीसोभानाइकनैदधीहेंसोसषीस
षीसोकहतिहै॥कवित्त॥जातिहींवालगली
मेंअलीसगआवतमांहनदेष्यांअगोंटें
ज्यांकीयेंघूघटहथुउठाइकेंस्योउसरीपर
कीगुजरोंटें॥साछविमोपेंकहीनपरेंकधु
कारिनुकोरिथें॥लुरीसुषमोंटें॥लालल
थ्यांअतिमाडुहियेंनवनागरिकीनिरषीज
वलौटें॥२६॥दोल॥लगीअनलगीसी
जुकरिकरीषरीकटिपीन॥कियेंमनौवे
हीकसरिकुचनितंबअतिपीन॥यिकायहना
इकाकेअंगजोवनकेआयेतेघटिवठिकेंग
यहेंसुसषीनाइकसोकहतिहैकविहकीउ
क्तिहाइ॥कवित्त॥रूपसांचेठारेरचिपचिकें
सुधारेविधिअंगअंगसकलसुदसरसभी
नहें॥तापेंतरुनाईनेवनाईकधुऔरेंवि
धिपीनकरेपीनअरुपीनकरेपीनहें॥शा
लिछांडिलोकुअरुसुद्धिमकोराष्यांताहि

लचकलजानिकै जतन असेकीनेहं॥ क
रिहांकीकसताकीसाधिकैकसरिमांनै
उरजनितंवअतिपीनकरिदीनेहं॥ ३५॥
॥ लहलहाततनतरुनईलचिलगलौंलफि
जाइ॥ लगेलांकलाइभभरीलोइनले
तलगाइ॥ धिका॥ यहनाइकाकीनुसा
भादेधीहंसोनाइकुसपीसां कहतिहं
कचित्त॥ लकलकैतनभैलहलहाति
तरुनईताकीनुइअरुनईरहीहं॥ वि
द्याइकै॥ कुचनुकेभाखपिलगलौंलफ
तिजवचलतिगयेदगतिरहतिभुभाइकै
कहैकविक्रमनषसिषलौंलुनाईभरी
मांनौंमहामोहनीनेदहधरीआइकांस्
इमलसलुअतिचारिकौसांआकुअसे
नगेलांकुवारीलेतिलाइनलगाइकै॥ ३६॥
हाहा॥ बुधिअनुमानप्रमानश्रुतिकि
नीठिठहराइ॥ सूछमगतिपरबुलकी
बलषलषीनजाइ॥ रीका॥ यहकटिवने

५

लि कै ॥ मानिक पवारी विवाके सेपटतर हो
 त जैसी दुति सहज उठति जलु उलिकै ॥
 चाइ निसों पाइ निमहावर लगी वैको वाड़ी
 र कुराइ नि निकट अनुकालिकै ॥ कहै काव
 क समचारु चारन विलोकत ही नाइ नि वि
 चारी गड़ी सब सुधि चूलिकै ॥ २३५ ॥ दोहा ॥
 अरुनवर तरुनी चरन अगुरी अतिसुकुमा
 र ॥ युवति सुरंग गसीम नौं चपि विद्धिय
 निक भारा ३६ ॥ दोहा ॥ यह चरनांगुलीन
 की साभाना इकु सै सी सां कहतु है नाइ काह
 सां कहतु है नाइ काह सां कहै ॥ कविता ॥
 मंदगत हरे कलहं सने लहन कल समद
 गये द्वां गरव गरुतु है ॥ कस प्रांन प्यार
 चारु चरन निहारै वाके जलज समूह तजि
 लाज हि धरतु है ॥ अतिसुकुमार तरुनी के
 पगु अंगुरी नुं असें अरु नाइ को उजा सुध
 रतु है ॥ ॥ मर जो नय स्यां विद्धियान
 को अपार भार ताही ते अम गिरंगु नि यु स्यै

परतुहै ॥ ३६ ॥ दोहा ॥ यगभंगमगभ्रग
मनपरतचरनभ्ररुनडुतिऊलि ॥ ठौर
ठौरलषीयतउठडुडुपरयासेफुलि ॥ पेका
यहनाइकाकेचरनभ्ररुनाइकीअधि
काईहै सोसषीसौकहतिहैनाइकुनाइ
कासौकहंसषीनाइकासौकहंसषीसौ
कहै ॥ कवित्त ॥ पलिकातैउत्तरिप्रवीन
प्राणप्यारीधामंधरनीमैसहजचलतिमं
दगतिहै ॥ क्रमप्राणप्यारेअसौकौतिक
निहारैतवचरनभ्ररुनडुतिअतिउभग
तिहै ॥ जहीजहीआडीछविपरतिअडौ
गीआनितिनकीरुलकजगजोतिसीज
गतिहै ॥ लहीतहीडुपहरीयाकेदषीयतको
नकीनमतिदेषप्रेसौपगतिहै ॥ ३७ ॥ दोहा
साहतअगुटापाइकेअनवटजस्यौजरी
इ ॥ जीस्यौतरवनडुतिसुठरिपस्यौतरनम
नापाइ ॥ टीका ॥ यहनाइकाकेअंगार
काअरंभहैसुयकहीअनौटपहस्यौहै
ताकीउपमासषीनाइकसौकहतिहै ॥

अथवासधीसौंकहिवौसंभवेतुहै॥
वित्त॥ प्यारिसिगारसवांरनवेठीअया
नकआयौंनहांदधिदांनी॥ ज्योहीकुती
अरुत्प्योहीरहीनवनागरिस्थांमकरूप
लुभ्यानी॥ नीकौंजराउअनौटलसंप्रग
कैअगुठांउपमांसुवषांनी॥ याइपस्यो
हंमनौंरविआइकैतेजकीहांनितस्योना
सांमानी॥ ३५॥ सुकुमारशरवर्त॥
शरवर्त॥ सरसकुसुममडरातिअलिनु
किमपटलपटातु॥ शरसतिअतिसुकुमा
रतनुपरसतुमननपत्यातु॥ यैतु॥ यह
सुकुमारताअधिकहैविसेषकैअरुकी
ऊकसधीनाइककौंअमग्यनमित्योजा
नतिहैसुनाइककीसधीभ्रमरकेप्रसंग
करिअन्याक्तिसौंवाकौंभ्रमुनियारनक
रतिहै॥ कदित्त॥ सुषकौंसिगारउपवनको
सिगारचारसौरभविविधिउमगतुजाको
गातुहै॥ सरसकुसुमनुसरसअतिसोभा
सांन्योनिरषिलुभ्यानोंअतिदेषेनअघातु

हो। कहें कवि क्रम अतिरीत पद्यों आसपा
सरहें मडरा नौ नइ पटिल पटातु है ॥ दरसत
वाकौं तनु अति सुकुमारता तं परसतु वा
को मनु क्यो हंनं पस्यातु है ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ अ
यन भारस सारि है क्यो इति न सुकुमार
सूधे पां न परत धर सो भा हो के भाग ॥
दोहा ॥ यह सुकुमारता है सो सयो सयी सां
नाइ का सो कहति है प्रयोजन युत है कि भय
न परतु विलंबु न होइ या न विने वन राउ
यातौ विगिंचले ॥ कविता ॥ विग्धा विग्धित ग
अति सुकुमारतनु अण्णानि इला कर्कान्ता
इको सकेलिहो ॥ इत्यं प्रान्णारको साने ग
येदुति गयो मेग्यन सो हनं न ननि सभं
हो सो भा हो के भाग सूधे प्रगने परन परग
दर लचकतिल गंजा न वनिह दिनु
तोहितु का गिदु न लु लो लो इति कं धं अ
ननु के भाग थामे न निहं ॥ ३५ ॥ कविता
मवग जोइं वागदु इत्यं न वनिहं ॥ ३५ ॥

लगे गुलावकी परिहें गत षरें ट ॥ ^{दिका} ॥
 यहना इकान बोठा विश्रधान बोठाना इ
 काहें सयन मेथिरताना ही यातें सषी इ
 रुदिषावेंतुं इ सयन करावतिहें ॥ ^{कवि} ॥
 मेंवर जीवहु वार अहनहिमान तित्वक
 हा करेंगी ॥ लेतिकरौट इतें मुरिकां अ
 रवीर उरकों लौं इतक धरेंगी ॥ कामला अ
 पने अंगनिहारितवें सुकुमासि सुकौं सल
 रंगी ॥ पांषुरी गत गुलावकी जों गडि जें ह
 कहें तों षरें ट लगेगी ॥ ४१ ॥ ^{दिका} ॥ नज
 कधरत हरहिय धरी नाजुक कमलावाल
 भजत भारभयभीत कें घनचंदनवनमा
 दल ॥ ^{दिका} ॥ यहना इकके हृद मैजुना इ
 कावसतिहताकी प्रीतिकों अधिकार सषी
 सषी सां कहतिहें ॥ ^{कवि} ॥ निजुभक्तिहि
 कहितकों कमलापतिसततचित्तविचारु
 करें अतिचंदतु अंगलगावें नहीं बहु फूल
 निकीनहिमालधरें ॥ अरु जो कवहु कसि
 रुसजें कवि कसत ऊकलकें संपरें ॥ इहसा

सुफल अथ कहैं कविक्रमरिस आतपुनि
वाशये ॥ धध ॥ ॥ दीयों अरधुनी
चौ चल्या संकटुभांन जाइ ॥ सुचिती है आ
रां सर्वे ससिहिलोके आइ ॥ दीजा ॥ यह
नाइकाके मुषकी सोभासधीनाइकसोक
हतिहैं ॥ कवित्त ॥ पूजिसिंसांकरु अरधु
दीयों अरवनीचौ चल्या अलिसंकटुभांन
आंरनकी सुचिताई मिटजिनसाधउपास
मनारथदांन ॥ चंदउतांइततामुषचंदुकि
तेविनवै चितसाचसमाने ॥ वे अपनेवुन
पूरेकरैजुरहीचकि आंचिरदेउचांन ॥ ध
पा ॥ दीजा ॥ तूरहिहोहोसबिचषांचठिन
अथवलियाल ॥ सबहितुविनहोससिउ
देदीजतु अरधुअकाल ॥ दीजा ॥ यहनाइ
काके मुषकी सोभाकी अधिकाइहैं सुसधी
नाइकसोकहतिहैं ॥ कवित्त ॥ होहो अथ
चठिहोससिदषनतूं सजनीरहि आंगनही
तिन ॥ आंरकितीकयुतीकयुतीवनिता
सबदषतिचंदउदांछिन ॥ तोमुषदषिउछ

हमरीसवदेहिगीअधुमयंकउदविनु। औ
रनुकेमैतिभंगकरैमतिहोहिगोयातकुमा
नैकल्योकिनु॥ धक्षादोहा॥ कहलडतेइगक
रपरलालवेहल॥ कहंमुश्लिकापीतपटक
हंमुकटवनमालादीका॥ यहनाइकाकेन
त्रदधिनाइककीजुदिसाभईसोसधीनाइ
कासो कहतिहै प्रयाजनुकितेरीचाहहैतै
चलि॥ कवित्त॥ तूचित्तईजवतैतवतैउह
भातिरखोचितुचतुरखोहै॥ पीतपटीलकु
थिकितहैअरुमारकिरीष्टिकहंविसख्योहोला
डिनीनैनलडतेकहाकरेदधितो लालविह
लयखोहै॥ ध७॥ दोहा॥ पियमनरुचिके
वांकठिनतनरुचिहातसिगार॥ लाषकरे
आंधिनवटवटवठायोवारा॥ दीका॥ यह
नाइकासिगारकरतदधीसुसधीनाइकासो
कहतिहै॥ अथवासोतिकोअंगरदधिया
कईधीभईसोसधीसोकहतिहैयातैअमग
वितानहोइ॥ कवित्त॥ वैखोकुंजसदनविह
लाकितुहंतुचंमगुतरानामुमोहुरठतुवा

रही ॥ उच्चलिहिलिमिलिमानरगरली
 श्रीलीमरोंकह्योमानिअनगवतिकहारही
 पियमदनवसकरिवोइहैकठिनअरुत
 नदुतिसरसतिसाजेऊंसिगारही ॥ कहै
 कविक्रमकीजोलाघकजतनतऊला
 चननवढतवढायैवढेवारही ॥ ४८ ॥
 मनोरथोदोहा ॥ गहलीगरवनकीजीयेस
 मेंसुहागरियाइ ॥ जीयकीजीवनिजेठसो
 माहछाहसुहाइ ॥ दीक्षा ॥ यहसधीकीसि
 छाह ॥ अरुजो जेष्टाकनिष्टामेदमे ॥ यासो
 नाइकाकोहितुदेविसौतिकहेतौहसंभवे
 ईषीसंचारीहहाइ ॥ कवित्त ॥ अलिहैसम
 गावतुतोइयहेतजिमानुमहासुयदेहिहमे
 फलुकेपानलहेवतिजोवनकोमनमाहन
 सोमिलिकेपानरमे ॥ लडवावरीपाइसुहा
 गसमेजिनयेतोगुमानधरेंजियमे ॥ सबकी
 वहजेठमेजीवनमूरिसुछाहसुहाइनमाह
 समे ॥ धरे ॥ अथवित्तिकोदोहा ॥ सघनकुंज
 घनघनतिमरुअधिकइंधरीराति ॥ तऊन

ॐ रिहैस्यामयहदीपसिधासीजाति॥रिका
 यहनाइकुनाइकाकुंजमैविसंकवेरह॥
 सागुरुसधीनाइकसांकहतिहायाकांदा
 पतिवनेनुकरिसीछाकहतिह॥अथवा
 नाइकुअंतरंगसधीसांकह॥क्रियाका
 कुंजमैतूलैचलितहामयोकांकहियांस
 भवै॥कवित्त॥रैनअधेशिनरम्यांपरंक
 रकुंजसवतरुपुंजनिडाइ॥धमिघनंघु
 मडेघनदृदअमंदभईतमकीमरसाशाप्र
 चकसाजिसिगारकैजदपिआईमसंकि
 कोयैचतुराडी॥दीपसिधासमदापनिना
 लतऊयहवालदुरेनदुगई॥अथ॥पि
 लिवो॥इहा॥फूलोफालोफलुमोदिरन
 सुविमलविक्राम॥धोरुतरंयोशरिच
 लततोहिपियापाम॥इक॥अरमनोइव
 सधीनाइकामांकरनिघे॥इहने॥निरक
 निकाइलेगोविकाइहनिघेनेइअप
 वलाकशुभगंकरयोअरगे॥नेनइह

आगे रति नरती कुलागें सांची कहि कौलें
 अंसां हठ उर धरैगी ॥ फूली फाली फिरति
 सिगार सजै सांति तेरी तिनके गुमान क
 हितें धौंक वहरैगी ॥ भोरकी तरैया समद
 धिधैगी प्यारी सब हितु करि जव तू प्यारै अ
 रवैगी ॥ ५॥ सिगारिकों दोनू तन भू
 षन अंजन दगनु पंगनि महा वारि रगुत
 हि सोभा कौ साजीयतु कहि वै ई कौ अंगु ॥
 टीका ॥ यह नाइकाके अंगकी सोभाविक
 सोभा सधी सां कहति हैं ॥ कविता सहज अरु
 नगुल फनितें अयते छटा तिनके निकटक
 हाजावक कौरंगु हैं ॥ गानकी गुराई अंगोंके
 चनके आभूषनकी केसल गतरंचे सोभा
 कौन संगु है ॥ अंगजनहं आजै विनु नैन
 कजरारदेषे संजन अनेक निको होतु म
 नुभंग है ॥ तोतन सिगारक धूसोभा कौन
 साजीयतु साजीयतजांनि अहिवांत ही कौ
 अंगु है ॥ ५॥ दोनू ॥ वैदी भालत सोल मु
 यसी ससिलि सिले वार ॥ दगराजै अंजै

दृगञ्जाजैराजैधरीयहीसहजसिंगार॥ दी
का॥ यहनाइकाकीसहजकीसोभासधी
नाइकसौकहतिहै॥ कविनातेदीछविछा
जतिहैललितलिहारपरनीकीनवजा
वनकीजातिनिरषतिहै॥ सिलसिलेस्प
मसटकारेसुकुमारवारनिमिषिमिवारपा
तिसरनिसरतिहै॥ अंतमुहअधरअतिअ
रुनतमोरभरषंजनुसेदगनुमेंअंजनुध
रतिहै॥ सहजसिंगारयेहीराजतिअपारदुति
सौतिनुकीअधिनुमेंछारसीपरतिहै॥ ५३॥
दाहा॥ परेपातरीकांनकीकांवहांउंवांनि
आककलीनरलीकरैअलीअलीजियजां
नि॥ दीका॥ यहनाइकाकेसनमेंनाइकका
आमासक्तिजांनिभुमुभयौहंसुसधीनि
वारनकरतुहै॥ कथित्त॥ वातकहैकोऊज्य
हीजोआइकैतूमनसाइसुचेतिकैजांनिहै
जांनिपरीषरीकांनकीपातरीसिधीकित
कहिधौयहवानिहै॥ छेडिकैकैपांमृदुमा
लतीवेलिभलीरसरूपरली॥ निह

कंपकिसोरीदरसकेपरलजायलाल
 दीका ॥ यहसात्विकभावसषीकोवच
 नसषीसों ॥ कवित्त ॥ लोपसुम्योवलि
 कोमघवातवकोपकेमघसवेसुकला
 य ॥ गंधनुकांन्हधस्यो जवहीसवकेउरके
 भयभूरिभगाये ॥ यानिडगोडगुलातलथ
 गिरिलोगसथे वृजकेअकुधलाये ॥ गोप
 किसोरीनिहारकेकंपितगातपरनदला
 ललजाये ॥ २५ ॥ दोहा ॥ सुरतिनताल
 नतांनकीउठ्ठांनसुरठहरा ॥ येरीरागुवि
 चारिखे गोवैरीवोलुसुना ॥ दीका ॥ यहसा
 त्विकभावनाइकाकोवचनसषीसों ॥ व्र
 रुसषीकोवचनुनाइकासोंहोइतौलहि
 तासषीसषीसोंकहेतौसंभवेपरकिय
 कवित्त ॥ लेकरवीनपुवीततियासुरसा
 धिकेगांनुकोंठाठठयोंहों ॥ धारयेआइके
 ताहीसभमनमोहनकाइकांनामुलयोंह
 तांनकहूंअरुतालकइसुरतौकधअर

तं श्रौं भयो हो। वैरी अचानक वो लसु
नाइ के नंद को रागु विशाग यो है ॥ ५६ ॥
दाहा ॥ ध्यान अं न ठिग प्रान पस्ति मुदि
तर हति न रंति ॥ पल कु क पति पुल क
नि पल कु पल कु य सी जति जाति ॥ टी
का ॥ यह नाइ का विरहिनी ध्यान कर मि
लति है ॥ तव ही सात्विक भाव हो तु है सु
सधी सधी सां कहति है ॥ सधी नाइ का रु
सां कहें तो संभवे ॥ कविना ॥ वाहिर के वि
धुरंगति अं सी भई सुवषां निक हो लै मि
की जा ॥ ध्यान हो ध्यान मे चंद मुधी मिलि
प्रान पी वै र संग मे सी जा ॥ रं न दिनार ह
मादरी वर का है ॥ बियागि तिके यां त न छे ज
कंपित है कव ह लल कं क व ह पुल कं क व ह
कप सी जा ॥ ६० ॥ दाहा ॥ स्वद सलिल रा
मां च कु स ग हि दु ल ही अरु ना था ॥ हियै दि
यां स ग सा थ के ह थं ले वा ही हा था ॥ टी का
य ही विवाह समं य दोऊ न के अति सने ह के

अधिकार तें सात्विक भाव भयो सो सषी
सषी सो कहति हे ॥ कवित्त ॥ मंडप मंड
ली तीर थ साधिक वेद विधानु सो दानु दि
यो हे ॥ स्वदुभयो सो ई नीरु न थो उन हे पु
लकें कुस पुंजली यो हे ॥ मैनु सुनिंदु प्र
याग पक्षी रसके ति हि ये अभिलाष कि
यो हे ॥ दो उन लें अपनो अपनो यो दियो
ह थ ल वाई हा थ हियो हे ॥ ६१ ॥ दो हा ॥
त थो आंच अति विरह की र ह्यो प्र म र स
भी जि ॥ नैन नु के म ग ज लु व हे हियो प सी
जि थ सी जि ॥ दो क ॥ यह ना इ का अ थ वा
ना इ कु वियो ग ते अ सु वा व हे ति हे ति न के
उ त्र छ कर ति हे सो स र वी सो कहें स षी स
षी सो कहें ॥ कवित्त ॥ जा दिन ते न व ना ग
रि को म नु नंद कि सार के ने ह ग ल्यो ॥ ता दि
न ते दिन र ने ठ र अ सु वा नि को यह भे दु
ल थो ॥ आंच त थो विरहान ल की हित
के र स मे अति भी जर ह्यो ॥ ता ते प सी ज प

सीजहीयोंविपनेननुकेमगनीरुवयों॥ २४
 दोहा॥ मैंयहतोहीमैलषीभगतिअपू
 खवाल॥ लहिप्रसादमालाजुधौतनुके
 दंबकीमाल॥ यिका॥ यहसात्विकभावस
 षीकौवचनुनाइकासोंपरकियालछिता
 होइ॥ कवित्त॥ कोरिधवारिनपैमपगीरगंल
 लनकेरगलालभईहौ॥ मैंनिरषीयहतोतन
 आजुअपूरवभक्तरसालभईहौमालप्र
 सादकौपावतहीसुवदेहकदंबकीमालभ
 ईहै॥ ६३॥ नाइकाकौवचनसषीसोंदोहा
 ठौरीनाइसुननकीकहिगोरीसुसकालि॥
 थोरीथोरीसकुचसोंभोरीभोरीवाल॥
 यिका॥ यहनाइकाप्राढानाइककीजुच
 षादधीहैसोसषीसोंकहतिहै॥ कवित्त॥
 जादिनतंबहसांवगौनैसुकनैनमिलेसु
 सिकाइगयोंहै॥ तादिनतैकविक्रमकह
 मनुवाहिकेहाथविकाइगयोंहै॥ थोरीसी
 लीजगहंहितचीकनी

गया है। कौन नुको श्रववातियकी सुनि
बई की ठेरी लगाइ गयो है ॥ ६४ ॥ दोहा ॥
जों लों लषांन कुल कथा दिकतों लों टह
राइ ॥ देखें आवत देख ही क्यों हूर लों न जा
इ ॥ टीका ॥ यहनाइ का प्रोटा श्रपनी इठ
ता सषी सों कहति हैं श्ररुनाइ कको स्वरूप
श्रसो सुंदर है सो देखें तें क्यों हूर लों ना ही न
तनाइ का कों वचन सषी सों ॥ कविता ॥ जो
लों न डी टि घरे मन मोहन हों नुवधो सषी तें
लों सयानहि ॥ शिकजु हानि पतिव्रत को क
रिले कुल कों निकथा के वषांनहि ॥ शिकजु
हानि पतिव्रत कों करले कुल कों नि ॥ लोच
न क्यों हून श कर रहे जव देखति वा मुद मूरति
कों नहि ॥ देखें विना तर लों परे क्यों हूर मरां
ल्यों किति सांचु के मानहि ॥ ६५ ॥ दोहा ॥
न सको क सु करि ल्यों वस करि ली नो म
रा ॥ भेहि दुसार कियो हियो तन दुनि भ
सार ॥ कविता ॥ यहनाइ का की लन डु

नाइकुसवीसोंकरतुहों। कवित्त ॥ राधि
कारंगभरोंकोंमनोंविधितीनहंलोककों
रूपदिषायोंई ॥ लाहिअलीअवलोंकत
हांविविनैननुग्रंमपियूषयियोंई ॥ जद
पिकेतेरसोंकसुकेंधरिकेंअतिधोरजुम
रंहियोंई ॥ तद्विवातनकीदुतिभेदक
मारनेंभेदुदुरासकियोंई ॥ ६६ ॥ दोहा ॥
तोतनअधिकअनूपरूपलग्नोसबज
गतुहों ॥ मोदगलागरूपद्रानिलगीअ
तिचरपरीतिहंनानाइकाकेरूपसोंनाइ
ककेनेत्रलगेहंसोअपनेनेत्रनकीतल
फनिकरतुहें ॥ नाइकाकौवचननाइकासों
सुंदरनाकीतुहोंपरमाअधितेंरतिकीदुति
यांइतुपेली ॥ कोरमनीरमनीअतिहंपु
राधिकेतोसमहोइजुहली ॥ तोतनसों
लुनाइकीषानिलग्नोतिहंलोककोंरूप
वेली ॥ त्योंतिहंरूपलगममनेनलगीम
मनेननित्योंतलवेली ॥ ६७ ॥ दोहा ॥

सहितसनेहसकाचसुषवेदकंपमुसिका
नि ॥ प्रांनयांनिकरआपनेपांनधरमोपां
नि ॥ टीका ॥ यहनाइककोपांनदेतनाइका
कंसात्विकभावभयोअरुनाइककेप्रांन
वाचिहसतिकेदेषिविवसभयेसुसषीसा
नाइककहतुहे ॥ कवित्त ॥ वामुगलोचनि
कसवअंगअनंगविलासवसीकरहे ॥
स्वदसकाचसनेकविक्रमसनेहभरसुष
पुंजघनेरे ॥ कंपनगातकधूमसिकातच
टाइकेभौहविलोचनफरे ॥ मोकरपांन
यहितसोउनिप्रांनलयेअपनेकरमेरे
दृ ॥ टीका ॥ ऊंचेचितेसराइयतुगिरहक
बृतरलेत ॥ फलकनइगमुलकितवदन
तनपुलकनकिहेत ॥ टीका ॥ यहन
ककोकबृतरदेषिनाइकाकंसात्विकभ
वभयोसुसषीनाइकासोकहतिहेपावि
चालछिता ॥ कवित्त ॥ अंमरमेसाभा
जिउडा ॥ नहेपारावतवाजीकरेरंगमे
गिरहआछीलेतहे ॥ तिहेसवकोऊने

ऊंचे करि चाहतु है री म्मिरी मिसु धर सरा ह
 त सह तहं ॥ चाहि वों सरा इ वों विसरि गयो
 तोहि प्यारी देषत ही देषि रही हर चित
 चेत हा ॥ फल कित नैन मुल कित है अध
 रतर सांची कहि अंग पुनि कित किं हि ह
 तह ॥ ६५ ॥ दोहा ॥ रहै गुही वौ नील षे गु
 हि वें के त्या नारा ॥ लागे नीर चुचां मजे नी
 ठिसु काये वार ॥ टीका ॥ ॥ यहना इकु स
 षी भेष के केना इ का के अंगार कर नला
 ग्यां वें नी गुहत सात्विक भाव भयो सो तव
 ना इ काने जां न्यां सोना इ क सो कहति है ॥
 कवित्त ॥ गोपी कौ वेषु वना इ गुपाले जू श्री
 वष भान सुना टिग आये ॥ हो सजि जो न
 तिनी के सि गारु कहै सु करों कहै वैन सु हा
 य ॥ वें नी गुहा वत प्यारी क ल्यां सु धरा पन
 य कित ते तु म पाये ॥ नीर चुचां न लगे अ
 वही सट कारे से वार सुनी ठ सु काये ॥ ३०
 अथ लीला लला ॥ दोहा ॥ राधा हरि हरि रा
 धिका वनि आये संकल ॥

शिरत सुसहज सुत हलत ॥ धीका ॥ यह ॥
लीला ह्यरति विपरीत समय सपीस
धीसा करति है ॥ कविज ॥ दषिवे को दे
द्वपे एक मन एक प्रांन रूप सील वे स
नचातुरी समत है ॥ जे सद्राज सांच मत
राच प्रीति रंग आनु लो नदषक ह्ये स
हिय हत है ॥ राधामाधो माधो राधो अ
लिवदलिले वनिवनि आय कुंज कलि
कनिके तरे ॥ कहै कवि कृष्ण राउ सहज
रतिक शिरति विपरीत के विविध सुष
त है ॥ ७१ ॥ दत्त ॥ नैक उतै उठि बैठी येक
रह गहि गे ॥ धुटी जाति न हरी छिन कु
हरी सुषन दे ॥ धीका ॥ यहना ॥ के
बिना ॥ काके सात्विक भाव भयो सु
ना ॥ कसो निबदनु करति है ॥ ना ॥ का
देह के अधिक्य तो ना ॥ कसो कहै
विज ॥ आनु लो के सह जाति परी न
जवतर सरीति चला ॥ दषितु ह्ये

अवहीकर पक्षवधर न स्वजजला ॥
वेहदुनेक उते उठिके उधरीयह आवति
पमंकला ॥ जात छुयो अवहीने हदीम
हदी छिनुसूकनद कुलला ॥ २७२ ॥ १६
॥ परत हींगरे गरै यौं दुतिदारीवा
ल ॥ मनोपरसिपुल किल भईयो लसि
रीकीमाला ॥ लीका ॥ यहनाइककेस्यर
ससोनाइककेसात्विक भावभयासो
सधीनाइकसोकहतिहा ॥ कविता ॥ मार
भसहित चुनिचुनिके कुसुम बाध-आप
नेकरनमनमोहल गुनोवनासिमतोत्रा
इदीनी अनिलीनी अति-आदरयो पहि
रीहियमै प्रानप्यारीहितुमरसा ॥ २७३ ॥
प्रानप्यारवाके गोरगरे लही छिनुसूकन
नवलदुनिरही असाध विच्छेद ॥ नरेना
नलालनालमिरीकील लितनालदुल
कितभईवाकतनकोपरल ॥ २७३ ॥
राहा ॥ हितुकरितुम

माकीवाइ ॥ दलीतपतितनकीतउ
लोयभीनाहाइ ॥ ^{श्रीका} यहनाइका
विजनाकीनाइलगेनाइकाकेसावि
रुभाउभयोसुसधीनाइकासांकहति
इ ॥ कविज ॥ मोरपधौवनिकोरचिके
हितुकेंपठयोतुमप्यारविहारी ॥ ताहि
विलाकनहीतियकेतनसापरीउमग्यो
मृदुभारी ॥ हांतोंविलोकिअचंभांरही
अवलोनकहातिअंसीनिहारी ॥ वावि
जनाकीवियारलगंवहहाइपसीनाव
नीरमेंनारी ॥ २७ ॥ दोहा ॥ इहिवंसत
नषरीअरीगरमनसीतलवान ॥ कहिको
रुलकेदधीयतपुलकिपसीजेगात ॥
^{श्रीका} ॥ पहनाइकासाविकभावदेवि
सधीनाइकासांकहतिपरकीयातधि
ताजानीये ॥ कविज ॥ साहतुसमानसम
यहतांवसंतरितुनाहिनंगरमुअरुसीर
नअतिहें ॥ कहकविक्रमवलिरुमसां

1
 चीकहिकाहैतैछवीलीभईतेरीअंसी
 गतिहै॥कवहुंतपतगातकवहुंपुलकहो
 तकवहुंपसीजिआवैकवहुंपैकैतिहै॥जो
 नीहैरीजानीहितसानीअरगानीरहिदेधि
 दधिदानीप्रेसरसमेंपगतिहै॥आ॥मृद
 षडदोहा॥तजिसंकसकुचितनचित
 तियाकुकुषाकु ॥दिनदिनदाछकी
 रहतिधुरितिनछिनुछविछाकु॥दीदा॥
 यहनाइकाकोछविकोग।वुहैसोसषीसषी
 कहैनाइकासोसषीकहैमदहाउजोना
 ककीछविकीछाकुसषीकहैतौलछि
 ताहोउ॥कविल॥कध्वूतवातहिउत्तरु
 तिनलाइटकीअनिमेषतकै॥अरुकांनि
 रैनअलीनिहंकीतजिलाजगराषनिकै
 निकै॥सबसंकतजीसंकुचैनहियैमुहआ
 सुवाकुकुवाकुवकै॥रहरैनदिनावुषभा
 सुताछविछाकछकीनछिनानछकौ
 भ्रमहाडा॥दो ॥र दहैदीठि ॥ १॥
 मथनीयावारि॥

ईविलोचनहारि॥ दीक्षा॥ यहनाइका
कौविभ्रमहाउदेषिसषीनाइकासौक
हतिहंसषीसषीहंसौकहो॥ कवित्त॥
पासदहैडीधरीधैरहीजलसोभरिक॥
जुमथांनीलईहो॥ थांभसौनेतीखपेदि
दईउलयेपरैफेरतितामेरईहो॥ मोहितो
लागतिनीकीमहाउरपूरनप्रेमकीरीतिठ
ईहो॥ सांवरोमूरतिकौरिठबारनईतूंवि
लावनहारिभईहो॥ ७७॥ कुवित्तहाउ
हाहा॥ लहिसूनैघरुकरुगहतदिषादिषी
कीडीठि॥ गडीसुचतिनाहीकरतिकरल
लचौंहींडीठि॥ दीक्षा॥ यहसुरतारंभस
मंनाइकाकीजुचयादबीसुनाइकुसषीसो
कहतुहंपरकियाकुहुंवितहाउ॥ कवित्त॥
दषांइदषीकीईईठश्चानकडीठियरीश्च
किलीग्रहमांही॥ साहसुकश्चपनउरमेश्च
तिमैठगजाइलईगहिवांही॥ लैसिसकीरु
हराइकरैउहितीश्चननैनकियचहंघांही

कैललचावतडीठिकरीवहनाहीहियेतैरै
अवनाहो ॥७५॥ दोहा ॥ हरबिनबोली
लघिललननिरषअमिलसंगुसाथु ॥
आंघिनहंमहसिधस्वोसीसहियेधरिह
थु।दिको ॥ यहयोधकहाउनाइकाप्रोढाप
रकियासुनाइककोजुदधिचेष्टाकीनीसो
सधीसधीसोकरतिहो ॥ कविता ॥ उमि
लसाथमंदेविगुपालहिगोपकुमारक
रीचतुराई ॥ वैनकधूनकरहंमुषतैलविपु
लीमनोनिधनीनिधिपार्श ॥ हाथुधस्वो
हियेपरिलैपुनिसोसछियोरसरीतिव
टाई ॥ आंघिनहंमकधूविहसीपियकोजि
यकीसवगतसुताई ॥७६॥ दोहा ॥ लवि
एरजनविचकमलसोसीसंधुवायोस्योम
हरिसनमुषकरआरसीहियैलगाईवांस
कविता ॥ सहनाइकाप्रोढापरकीयाहूज
पथाकीनीसुसधीसधीसोकरतिहो ॥ क
वेता ॥ आजुहुहंमिलिकंसजनीकछुसेन

नुहिं मन कौं समुत्तयों ॥ गोरी लषी गुरनार
नुपै सर सीरु हसौ सिरु स्पाम धुवायों ॥ सो
लषिके वृषभानु सुता दियो उत्तर भेदु सुका
हन पायों ॥ कृष्ण कहै हरिके समुह करि दर
पतुवां मरि घसों लगायों ॥ २८० ॥ दोहा ॥
सुनिपगधु निचित ईतै न्हात दियै हीं पीठि
चकीरु की सकुची इरी हसी लजी ली डीठि ॥
५ ॥ दोहा ॥ यहना इकाना इका जा समैना
इक नै देधी ता समै कीरु चेषा उनी की नी सु
ना इकु सषी सों कहतु है ॥ कखिन ॥ कामकी
वां महतै अथि समल सें दुति जावन की रस
सां नी ॥ न्हाति ही डीठि दियै अकिली सकिली
धुनिपोपग की परिचां नी ॥ जाछु विसो चित
इइहि और सुकें सों हमो पै न जाति वषां नी ॥
चां कीच की सकुची इरी पी कर डीठिल जो हीं
गु की सुसिकानी ॥ २८१ ॥ दोहा ॥ कालम
वां रसों तिकें सुनिपरनारि विहार ॥ भौर सु
अनर सुरि सरलीरीरु पीरु इकवार ॥

यहनाऽकी वरुनाऽ कता सुनिके माऽ वा
केंदुषुभयो अरुसौतिका वागि वथा भड
सुनिसुषुभयो सो सप्रामयो सो का नि
हा कविना वैदी मयो नुमयो जभोप्यो गी
गारक सा जनु सो मरमो ना का कयो नु
सौतिन के आ सरं आ निवधु वंग य रधि
दुनी सो मुनि कं व विक्रम वरु रर्या वि
नयो हु ल सो अ कु लो ना य क री व र ल
मो सु ग लो च निर्ग र्हि सु प्रो सु प्रो का ना रि ग
ना ॥ २४ ॥ दा ॥ य निर्ग र्हि कं ल भो यो
वर्षे मयो न यो सु मि का ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥
२८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

ससरोज मुषी इति पुंज निकौ उमगावति ली
तहां क्रस अचानिक अनि गही चही भौह
नुसौं डर पावति सी ॥ अरु अंधनि मैल प
यवति सी अंधनि ना करि ना क्य ठावति
सी ॥ २५ ॥ दोहा ॥ सकुचि सुरत आरंभ
ह विछरी लाज लजाइ ॥ ठर कि ठार छुरि
ठिग भई डी ठि डि ठाई आइ ॥ दोहा ॥ यह
प्रोदानाइ का कौं मुरत सषी सषी सौं कह
ति है ॥ कवि च ॥ अति अभिराम स्यां मा स्यां
मरति मंदिर में विहरति उमगि अनं ग रं ग भ
रि कौं ॥ रन षट् न रट्ट न चं वन अधर पां न
आलिंगन करत अनेक भाइ भरकैं ॥ सुरति
के आरंभ की लाज लजवंती सषी निकट ल
जाइ जिय गई कहं टिकैं ॥ ठाठ सुहिये में ग
हिनि धरक कैं कैं आइं ठाठ भई निकट ठि ठा
ठी ठठरि कैं ॥ २६ ॥ दोहा ॥ दीप उजे रैं हं प
निहिर हल वसंतर तिका ज ॥ लपटि छवि
की छटनुने

तवर्णननाइकाकेतनकीदीपतिकों आधि
क्यसषीकोंवचनसषीसों ॥ ^{कविता} तैसों
ईमकासुरतिमंदिरकेदीपनुकौतैसों ईस
मूहजगमगातितनकौ ॥ ^{तैसीयेंसुधा}
निधकेसुषभीनिरषजोतिमौहनकेमन
भाऊऊमग्यों अतनकौ ॥ प्रीतमविहारी
लाललैवैकोंसुरतिसुषनिजुकरवसनुरु
टकिहस्यौतनकौ ॥ छविकीछटानहींसों
रहीलययाइराधामगनहंतनकीधुरीन
लाजंतनकौ ॥ २२७ ॥ ^{सकौनुकौलपि}
सल ॥ पटकीटिंगकतटापियति सोहति सु
भगसुवेष ॥ हदरदछदछविदेतयहसदर
दछदकीरेष ॥ ^{दोका} यहसुरतिकौचिह
दुरावतिहैनाइकासुसषीनाइकसौकरति
हैलछिता ॥ ^{कविता} आजुभटरतिरंगके
मंदिरत्नमनमौहनकेसगजागी ॥ केलिवि
लासहुलासतिकोंवडभागिनितैरिऊयों अनु
रागी ॥ टंकतिक्योंपटकीटिंगसों अतिसोह

तिवारुप्रभानिसौंयागी॥देतिमहाछुविकी
हृदकौयहरेषरदछुदकीसहलागी॥२८८
दोहा॥॥सुरतिदुराईदुरतिनहिप्रगटकर
तिरतिरूप॥धुटेंपीकअंरैउठीलालीअ
ठअनूप॥रीको॥यहसुरतिकेचिहदेवि.स
धीनाइकासौंकरतिहैपरकीयाजोनाइका
सधीसौंकरहैलौअन्यसंभोगदुखिताहोइ
कवित्त॥भूषनचारुवनाइसजेकचफूल
गुहफिरआडवनाई॥होलौंकरापछहैंप
रराधिकेलीककपोलकीपांछिकेंआई॥
दंतकरैरतिरंगकीभांतिसुषंमकीशिनदुर
नदुराई॥पांनकीपीकधुटेंअधरानियेंअ
रंकधूप्रगटीअरुनाई॥२८९॥दोहा॥मा
सैमिलवतिचातुरीतूनहिभांवतिभेऊ॥
करैदेतुयहप्रगटहीप्रगटौंपूषयसेऊ॥
टीका॥यहनाइकाकैसेदलसिसधीसुत
रभयोजांनिकरतिहैलछिताजांनियै॥क
वित्त॥अनुपगीसुषपुंजमैप्यारीसुकुंज

मैंकेलिषीमनभाई। पीक गईधुरिआठ
नुपैप्रगटीमुषमंडलपैअरुनाई॥ मोद
कीवातकहैकिनिभांमिनीमोसैंबलाव
तिक्रौंचतुराई॥ तोतनुदनुकहैप्रगटैयह
पूसकेपासपसेउमैनाई॥ २८०॥ दोहा
आजुकधूआरैभयेवयेनयेठिकठेन
चितकेहितकेचुगलयेनितकेहोहिंनै
न॥ दोहा॥ यहनाइकाकेनेत्रदषिसषी
कहैतौलछिताहोइजौनाइकानाइकसौंक
हैतौबंदिनाहोइ॥ कवित्त॥ आलिनुकेर
समेविषकेरंगिलालकरंगसुरंगभयेह
दतकहैचितकेहितकीचुगलीठिकठेन
नयेईठयेह॥ निंदतहैअरविंदप्रभाअनुर
गपसामैपागिमयेह॥ हेहिनयेनितके
सजनीआआजअप्रवआपधयेह॥
२८१॥ दोहा॥ जदपिनाहिनाहोनिहीव
दनलगीजकजाति॥ तदपिभौंहोसी
भरीहोसीयेहराति॥ दोहा॥ यहसुर

तारंभनाइकाप्रोटासधीकैवचनुसधी
 ॥कवित्त॥ वैठीसिंगारसजैंबुजनारि
 अचानकमोहनआयोंतहांही॥ पांनिग
 अवलोकिअकेलीआंलौंकिककेलि
 चितचांहीं॥ जइपिवानवनागरिके
 पलागीयहैजकनानननांहीं॥ तइपिहं
 सीभरीभ्रकुटीनुमैवीसविसेठहरानिहेंहां
 ही॥ २२॥ सुरतांत॥ दोहा॥ सकुचिसरकि
 पियनिकटतैसुलकिकधूलनतोरि॥ करआ
 चरकीआटकैजमुहंतीमुहंमोरि॥ दीका॥
 यहसुरतांतनाइकाप्रोटासधीकैवचनस
 धीसौं॥ कवित्त॥ केलिकलाकुसलकुरंग
 नयनीपिकवैनीजाकीछविपररतिवारि
 करोरिकै॥ सैनसुषपागीअनुशगीपति
 गजागीमैनकेविलासिसौंलेतचितचो
 रिकै॥ सरकीसकुचमनमोहनकेनिकट
 कधुकिमुलकिअगिरानीतनुतोरिकै॥
 भावहमोपैक्योहंजातिनवषानीकर

आंचनकी और जमुहानी पुहमारिकें। दो
वमकनसकहंसीससकमसकजप
दलपयंनि॥ येजिहिरतिशोरतिमुकतिश्री
रमुक्तिकिहंनि॥ दीका॥ यहसुरतचने
ननाइककौवचनअथवाकविकीउक्ति॥
कवित्त॥ किलकनिमुलकनिहेरनिहरनि
चितुचमकतमकमकनिमुसिकानिहै॥
हिलनिमिलनिअरुरसंधीकसकनिसक
निससकरूपटनिसुषयंनिहै॥ लटकनिस
टकनिदुरनिमुनिकलकुंजनिफनिचर
चपयंनिहै॥ अंसीरतिरतिसेईमुकतिव
हवतिहैसातौसातौअतिहंनिहै॥ २६
दोला॥ लषिलषिअधीयाअधषुलीनु
गमारिअंगिराइ॥ अधिकउठिलेठकिल
किआलसभरीजमाइ॥ यहसुरतांतता
आठासकीकौवचनसधीसां॥ कवित्त॥
सुषपागीअनुरागीहरिसंगजागीसाभ
सांनीअरसांनीअगरातिहै॥ विद्युती-

पुकी आवति पलक मन मथकी जलक अ
 निर सवर साति है ॥ ललित कपोल निषे
 सतिनी की पीक लीक दोऊ भुज जोरि मुह
 जोरि ज मुहाति है ॥ अध बुली अंघनि सौ
 आली तन प्रव लोकि आधी अटि ज हील
 र किलेट जाति है ॥ २४५ ॥ दोहा ॥ नीहि
 नीहि उठि वैठि हूं प्यो प्यरि पर भात ॥ दोऊ
 नींद भरे धरे लागि लागि गिर जात ॥ दोहा
 यह सुरतांत नारका प्रोठा सधी कां वचन
 सधी सौ ॥ कवित्त ॥ बुध भान लली बुजरा
 जल लारति संगर में नि सि संज गें ॥ कवि
 कस करे कविकां म कला वहु भा इ विलास हि
 ये उम गें ॥ अठि वैठत से जपे नीहित ऊ उठि पें न
 सकें अति प्रेम पगें ॥ सुष ॥ नींद भरे उपूर सात
 धरे वहु के गिरि जात गारें ही ल गें ॥ २४६ ॥
 कवित्त ॥ रगी सुरतर ग पिथ हिये लगी अ
 गी सवराति ॥ पै इ पै उ पर ठ दु के अं उ भरी
 अ गति ॥ टीका ॥ य रतां

सषीसौजौसषीनाइकासौकहेताला
ताहै॥ कवित्त॥ सवरैनजगीहरिकंठ
लगीरतिरंगरीअलसातपरीहै॥ डाय
कचलेरि केचितवैमुरकेअगरतिम
रोरभरीहै॥ विधुरीअलकेछलकेअमवा
रिमुकीपलकेसुषठारठरीहै॥ लगीपीक
कीलीककपोलनिनीकीलसेअतिसार
सलौटपरीहै॥ २५७॥ योंदल
लिपतुनिरदईदईकुसुमसोगातु॥ कर
रदेषांधरधराअजौनउरकौजातु॥ शीव
यहनाइकासुरतमेंमुदितअतिविक
इहैसौसषीनाइकासौकहेतिहै॥ क
वेंसअलवेलीमूडवेलीसीनवेली
लईगुपालसुलेकितनेउपाइके॥ र
लकितभएनिरदईकेलिकरेयोंक
तिविसराइके॥ केसीदलमलीमू
सीपांषुरीसीपरीहैअचेतसवसु
के॥ वनीयाकहाहैंकहोंछविया

अनहंनमिटतुनिकटदेवैः आइवैः ॥ २८ ॥
॥ १० ॥ लहिरतिसुषुलमिये हिये लकी
लजोही नीहि ॥ पुलतिनये अनवधि मति
वहै अध सुलो डी हिा दीका ॥ यह सुरमा
तनाइ काका वचन सपीयां ॥ कवि च्या कलि
कला सुषु मलि प्रभानन सी पर जं कपं राधि
काप्यागी ॥ अंकल गी न कुला जपरी पति
नाग्नि वा इ महा छवि धारी ॥ नां दत्तितं वक्रां
महं हिये तवनें मुकभो ॥ इत्याइ निरगि ॥
वे उनेदी कधीया अधधानी चिते न दिव्य
तयं न दिव्यो ॥ इटी ॥ राग ॥ विन नार
ति वि नगी न की करी वर मपि यथा ॥ इत्याइ
नये न दिव्यो ॥ उने रिये न नार ॥ इत्याइ
यार गी न दिव्यो ॥ नये न दिव्यो ॥ इत्याइ
इत्याइ ॥ इत्याइ ॥ इत्याइ ॥ इत्याइ ॥ इत्याइ ॥
इत्याइ ॥ इत्याइ ॥ इत्याइ ॥ इत्याइ ॥ इत्याइ ॥
इत्याइ ॥ इत्याइ ॥ इत्याइ ॥ इत्याइ ॥ इत्याइ ॥

प्यारीकेपरसपाइरतिविपरीतकीपिवा
रंविनतीकरी॥प्यारीमुसिकाइश्रुतबो
लेसिवभायोदियोपीतमकेजियबोह
याहमेसहीकरी॥३००॥रतिविपरीति
रतरनधीर॥करतिकुलाहलकिंकिनीग
घोंमोनमंजोर॥जेका॥यहविपरीति
रतिवर्ननुहैनाइकाप्रोटासधीकोबचन
सधीसों॥कबित्त॥श्रीवृषभानुसुता
नजोतिजगरतिलाजरगीजनुजागी॥
हविलासनिहासनिकैहरिसाजनको
साजनलागी॥धीरमहामतिसंगरमे
रतिरचीश्रुतिराजनलागी॥मोनुगा
छियानतहीरसनारसहीरसवाजन
३०१॥जेका॥मेरेवृरुतवातलेकत
वतिवाल॥जगजानीविपरीतरति
डुलीपियभाल॥जेका॥यहना
ठारतिविपरीतकीनीसधीसोंइ

सो प्रवीन सखी जानि लई सो भाइका सौं क
 हति है ॥ कवि ज्ञ ॥ हों हिनु कै वलि वृत्तुंते
 कहं नूवहरावति वांतह मेरी ॥ पूर्वों कों चं
 उदो नुकरै तव कै सैंदवै किये औट ह धे
 शी ॥ तै हरि सौं विपरीत करी कहि क्यौं दुरि
 हैं अवतौं ह मेरी ॥ नीकै हीं जां निपरी संव
 कों पियं भाल लखै विदुली तिय तेरी ॥ ३०२
 दाह ॥ रवनिक ह्यौं हटि रं नि सौरति वि
 परीत विलास ॥ चित इकर लोचन सतर
 मगर सलजज सहास ॥ यिक ॥ यह नाइक
 नै रति विपरीत की वात कहि सो नाइका नै
 बितमै निमै बेशकी नीसो सघी सघी सौं
 कहति है ॥ कवि ज्ञ ॥ ब्रषभानु मुतान दने
 दल्लार सकेलिक लानि प्रवीन घरो ॥ तिह
 मंदिर में अति प्रेम योग रतिकंत विलासकें
 रंगदरे ॥ रतिकी विपरीत करौं रमनी ह
 सियों जव प्यारे निहारे ॥ तप्यारी
 के ये लखि नै नति

लाजभरे ॥ ३ ॥ सहीरगीलेरति
जगेजगीपगीसुषचैन ॥ अलसौहेंसौहेंकि
थेकहेंहसौहेंनैन ॥ दीका ॥ यहनाइकाके
नत्रनुकीसोभादेविसषीसषीसौंकहतिहें
लछिता ॥ कवित्त ॥ मोहीसौंधवीलीसरे
शितिकेयोंछपावतिहें ॥ आननयेंउमगिअरु
नप्रोपजागीहें ॥ अंगअंगसिथिलअनंग
सुषसंगसनैरंगसनीरुधमअतुरगीउ
लागीहें ॥ लसतहसौहेंअलसौहेंयेचप
लचषसौहेंकियेकहतेप्रगटैप्रेमपा
हें ॥ कहिनपरतिअतिअदभुतछविय
हंतुरगीलेरतिजगेअनुजागीहें ॥ ३ ॥
जुगलअरुअनचननलेह ॥ नितप्र
केतहीरहतवेसवरनमनयक ॥ चवि
जुगलकिसोरलषिलोचनजुगल
दीका ॥ यहजुगलकिसोरकिसो
भाअरुदोऊनकेहितकेअधिक
षीसौंकहतिहें ॥ कवित्त ॥ नितश्री

सुतानदलालविराजतहैछविपुंजछये
कविकृष्णकहैमनसीलवहैक्रमचातुर
ताइकरंगरये॥सुषदेषिसिहावतिसवै
सजनीविधिसौविनवैअभिलाषनये
यहरूपविलोकवैकौतनमैप्रतिरोधन
लोचनकौनभये॥१०५॥दोहा॥मिलि
परछाहीजौनूसौरहैदुहुंनकेगात॥हरि
राधाइकसंगहीचगलीमैजात॥तीका
पहदोऊनकौमिलिवोगलीमैजातयेक
तहीजानपरतहैसषीसषीसाकहतिहै
निमिचारुकौमिलनु॥कविनादोऊरस
भीजेरूपरीमतरुनाईभरदुहुंकेसनेहने
हउमगतगातहै॥दंपतिकरतचतुराईके
चरित्रचारुऔरकौनजानैयेप्रवीननुकी
वातहै॥जहांपरछाहीतहोयाशियैविलो
कियतुजौनकौप्रकासुतरांकान्हूलषा
तहै॥दोहा॥तजतीरथहरराधिकात
नहुतिकरअनुरागु॥जिहिव्रजकेलनि

कुंजमगपगमगहोतुप्रयागु॥ दीका॥ य
हजुगलछविवर्ननुहै॥ कविता॥ तीरथनि
सटकतुकाहेकोत्तंभटकतुकोंश्रटकतु
वनसोभाकीहिलगमै॥ राधावनमाली
कीसरसगोरस्यामदुतिसकलनिकाई
कोलसतुसारजगमै॥ तासोंकरप्रीतिय
हनिगमप्रसिद्धिविधिसंकरसेतिनहंतै
जागध्यानअगमै॥ उगडगप्रतिहातप्र
गटप्रयागमैगजिनकेपरतकेलिकुंज
कुंजमगमै॥ ७॥ दोहा॥ उनकोंहितुउ
नहीवनेकोअकरोंअनेक॥ फिरतुकाक
गालकभयोंदुंहं देहज्योंयेक॥ दीका॥ य
हदोउनकेहितकीअधिक॥ इसषीसषीसै
कहतिहै॥ कविता॥ आजुलौंअंसेनदेष
कहूंउनहीपैवनेउनकेहितकेपन॥ औं
रअनेकउपाइकियेहूँयेहोहिंनअंसेस
नेहसनैमन॥ कोउनजानतदोऊहंयेक
होश्रीश्रृषभानसुतामनमोहन॥ वाइस

गलकज्योंसजनीफिरवोंकरेयेकहीजी
बहुतन ॥ ८ ॥ प्रेमगर्विताहो ॥ वि
घसोंतिनुदेषतदईअपनेहियतेंलाल
फिरतिसवनिमेंउहउहीउहीमरगजीमं
लादीका ॥ घटनाइककीमालापाइ
अतिप्रसन्नभईहेंसोसधीनाइकसोंक
हतिहेंप्रेमगर्विताहो ॥ कबिता ॥ सोंति
केलषतमनभावनमंथाकेंहीनीउरतें
उतारियरगटकीनीरतिहें ॥ तबहीतैर
हसतिविहसतिहुलसतिविलसतिलस
तिगुमानभरीअतिहें ॥ मनमेंमुदिल
लीतममेंसमांतिनांहीबलतिचित्तों
मिअनुरागउलहतिहें ॥ मरगजीमाला
सिंउरधरेंवालाबहउहउहीमालिनुके
इमेंफिरतिहें ॥ ८ ॥ दोहा ॥ अपनेकरगु
आपुहीहटियहराचहिलाला ॥ जौल
रीऔरैबहीवौलसिरीकी
घटनाइकनेअपनेहा

सिरीकीमालापरिहाइताइयाइयाकीसा
भाअधिकभईसधीनाइकासांकहंसधी
सांकहं॥कवित्त॥आपनेहाथनिवीनके
फूलबनाइगुहीमनलाइकृनाई॥माल
सुवांलसुवांलसिरीकीमालसुगंधभ
सिअतिहीछविछाई॥आलनिकेंगनमे
लसिकेंहसिकेंहठिप्यारहियेंपरिहाई॥
आपअनूपलहीतरुनीवरनीनपरैअ
नुरागनिकाई॥३१॥देहा॥६॥तीजप
खसौतिनुसजेभूषनवसनसरीर॥स
बंमरगजेमुहकरीउहींमरगजेबीर
रीका॥॥यहनाइकाप्रमगर्विताम
गजेबीरतैसरतकांगवुभयोतातैअं
रुनकीनांसासधीसधीसाकहतिहं॥
वित्त॥सौतिनुहुलसिगुनगौरिकें
बुसाधिभूषनुवसनबहुभातिनुसु
हंतिलकतमाखैदीवेसरितसांन
जिअंजनसांआजेचारुलोवनअ

॥ क्रमप्रानप्यारकेरिजाइवकीहोती
इंचपलकटाइहाइभाइनसोंठारह
थेकरातिरतिमरगजेचीरहीसोंस
वहीकेचीनेमुहफीकेकरडारहें ॥३११॥
आंरोंगतिआंरवचनभयोंवदनुरगत्र
कांघोंसकेंतपियचित्तबढीरहेंबढांह
त्योरु ॥ रोका ॥ यहनाइकानाइकके
मंगवताकेकाइकोमनआंनतिना
होसुसधीसधीसोंकहेंनाइकाइसोंकहें
वने ॥ कचित्त ॥ आंरहीचाखिविलो
कनिआंरहीदेषिकेंआंननुहंरंगुआंरही
लतिआंनहीभांतिगुमानसयोंनिध
धियाइकेंवोंरहि ॥ वृजेंहंवातहिउ
तरुदेतिनडीठिकंहंठहंरतिनठौरहि ॥ वृ
हंवातहिउत्तरदेति। नडीठिकंहंठहरावें
तिनेठौरहि ॥ द्वैकहिनातेंबढिपियकेचि
तप्यारीबढायेंहीराषति ॥ ३१२
दाह ॥ कियोंजुचि क

कर भरतार ॥ टट्टीये टट्टि फिरति टट्टत
लकलिलार ॥ टिका ॥ यहनाइ का प्रेम
गर्विता सषी कों वचन सषी सौ सनेहते
नाइ का सौ सात्विक भाउ भयां ॥
टाडी उठाइ कस्यो चितचाइ सौ नंदलाल
अतिहो अनुरागे ॥ भालल गावत ही
अगुरी कर कं पु भयां अतिहेत सौ पा
गे ॥ आने न आने मनेत वतै न गनेक
ध्रु प्रेमके आगे ॥ टट्टिये टट्टि फिरें मृग
लाचने टट्टोई ट्टी कों लिलार ये लागे ॥
३३३ ॥ गुनगर्वित ॥ दोहा ॥ सुधरसौ
तिपियवस सुनति दुलहिनु दुगुनदुला
स ॥ लषी सषी तनडी ठिकरि सगरवसल
जसहास ॥ टिका ॥ यहनाइ का गुनग
र्विता अघने गुनके गुमानते सौतिके
आगमके दुषुनाही मानति प्रसन्न
भई सषीकी आरचितवतिहे सषीके
वचनु सखीसौ ॥ कवित्त ॥ रूपकी राशि

सधीनुसमाजमेंसोहंसिगारसर्वेव्रज
 नारी॥काहकहीसुधरापनुकेतुवसों
 तिनैलीनैरिगाइविहारी॥घोंसुनिके
 अतिहिहुलसीगुनचातुरीकीपरमा
 वधिप्यारी॥लाजगुमानभरीमुसि
 काइकेरंचकडीठिअलीतनशरी॥३१ध
 पगुनगविता॥दोहा॥दुसुहसोंतिसा
 सुहियगनतिननाहा॥विवाहा॥धरैरु
 पगुनकांगरवुफिरतिअछहउछाह॥
 शिका॥यहनाइकाअपनैरुपकेअरुगु
 नकेगरवतैआरकौचित्तमेंआनतिना
 सोसधीसधीसोकहतिहें॥कवित्त॥
 नाहकेव्याहमेंप्यारीअछहउछाहभरीप
 टभूषनठानति॥आनतिहनिहचैअपनै
 जयकौवनिताकरिहेंनहिहानति॥रूपके
 जावनकेगुनकेअभिमानतैआनहिना
 मनआनति॥जदपि
 उरमैवहनाग

॥ जे १॥ नरिन सीस सावित भई लुयी
सुषनिकी मोंट ॥ चुप करीयें चारी करै
सारी परै सलौंटा ॥ ॥ ॥ यह सुहृत् की
सारी मरग जीदषिस वीनाइ कासो कह
तिहें लछिता होइ ॥ ॥ ॥ रसकी उम
गभरी रंगभरी साह तिहें अंग की सिष
लुदुति अमज लछाई है ॥ ॥ मति मुकति
अंगराति जमहाति सुसकाति अरसाति
सरसाति त्पानिकाई है ॥ ॥ मेटै लुयी सुषकी
प्रगट भई तेरे सीस क्योंतुं मुकरति मन
मथकी दुहाई है ॥ ॥ अबही तौ चुप करि रा
धये तौ करि चारी जेत ॥ आ जु सारी में सल
टपारि आई है ॥ ॥ ॥ मोहि करत
कन वावरी किये दुगवदुरे न ॥ कहें दे तर
शत करगनि चुरत सने न ॥ ॥ यह
इका केने त्रदषिस वी कहें तौ लछिता ह
जो नाइक के विधमान नाइक की सषी
नाइका कहें तौ घंडिता होइ ॥ ॥ ॥ सु

चिन्हचंतुराईसौलुकाइतनभूषनवना
इसजेवसननुरतहै॥ क्रस्मिप्रांनप्यारैके
सनेहसरसानेतातैंगतअरसानेरसउ
गदुरतहै॥ काहकौसयानीमोहियाव
करतअवकियैतैदुराउकहिकैसैक
रतहै॥ प्रगटपुकारैरगगतिकेकहत
तौलोचनजुगलमानौरंगनिचुरतहै
॥३७॥ तह ॥ लाजगरवआलसउम
मभरनेनमुसिकात॥ रातरमीरतिदेत
कहिआरैप्रभाप्रभात॥ दीका॥ यहने
त्रनुकौभाउदेषिसषीनाइकसौकहतौष
डिताहोइ॥ कवित्त॥ सारसनेसरसलस
तभरेआलसयेमहारंगमगनहरैहियैह
रिलेतहै॥ लालडोरराजतहैआरैआ
पसाजतहैफुलेमुसिकातहैनिकाईके
निकेतहै॥ मैनकीउमंगभरेजोवनके
गभरेलाजकीतरंगभरेगरवसमेतहै
नमघयागेनि - तेरेवातर

तिरमीरतिके प्रभात कहें दंतहं ॥ ३१२ ॥
कोरि जतन की जंत ऊना गरिन
हदुरे न ॥ कहें दंत चित्त की कने नई रुषाई न
न ॥ ये का ॥ यहने वदे विसधीनाइ का सो
कहति हं लछिता होइ ॥ कविने तें मनमा
हन सो मिल्यो मनु मै तव हीं सजनी लषि
पाई ॥ कविने तोहि हियो हितु मानिकें मो संच
लावति तंचातुराई ॥ कोरि उपाउक करे कि
निना गरिने हकी डीठि दुरेइके नदुराई ॥ न
ननु मां रुषाई भई यहदेह कहें चितकी
चिकनाई ॥ ३१३ ॥ दोहा ॥ मुहमिठास
गचिकन भौं है सरल सुभाइ ॥ तऊषरे
दरषरो विन विन हियो सकाइ ॥ ये का ॥
हनाइ का सादरा प्रोढा धीरा नाइ का कों व
नाइ का सो ॥ कविने ॥ वदन कमल तें
कहित सांने वै नमधुरे कठत श्री जीन
बुचावतुहें ॥ भृकुटी सुभाइ ही सरल ल
तिकरों सकों नरं चकु विलास द्द सातुहें
हकी निसानी अर सानी चित वनित्यो ह

संहनमापे यह भेदुलखीं जातु है ॥ ज्यों ज्यों
अतिषरें षरों आदर करत प्यारी त्यों त्यों मे
रों हियों षरों षरों ईसका तु है ॥ ३२७ ॥ दोहा ॥
षर अदव इटला हटों उर उपजावतु वासु
दुसह संक विसकी करै जें सैं सों ठा मिला सु
रीका ॥ यहनाइ का आकति धीरा गुणा
प्राढनाइ क का वचन सधी सों ॥ कवित्त
गं सुगद्या उर में जित नों क धूम तो न चूक
इती करी है ॥ वां निस जी इटला हट की अब
काहते साधौ न जां नि परी है ॥ वासु हियें
उपजावें धरों अति आदर सों अभिमान भ
री है ॥ सां ठि च वा वति मीठी लगे स दुकोऊ
क है विसही की उरी है ॥ ३२९ ॥ आकति गु
प्राधीरा ॥ दोहा ॥ नहिन चाइ चित वति इ
गनि नहिवाल ति मुसिकाइ ॥ ज्यों ज्यों रुष
रुषों करै त्यों त्यों चिनु चिकनाइ ॥ टीका ॥
यहनाइ का प्राढाधीरा आकति गुप्राणाइ का
का वचनु नाइ का सौनाइ का हूं सैं होइ सखी

कौं वचननाइकासौ ॥ कवित्त ॥ जोरतिनला
चननचाइनेहलाजभर अधमुसिकंतिके
नभाउदरसातुह ॥ बोलतिनकहमनमोहन
सोमधुरवेनमोरतिनभृकुटीमरौरतिनुगा
तुह ॥ कहें कवि ऋषवाकी गरवीलीवातिफ
धूसहजवसीकरकोमंत्र जान्यांजातुह ॥ ज्योति
ज्यांहीरहतिप्यारी राधारुषरुषोंकरें सोही
त्योषरें ईषरें चित्तुचिकनातुह ॥ ३२२ ॥
॥ जोतिप्रजियतुमभांउती राषीहियेव
साइ ॥ मोहिदुकावतिदुगतिहें फिरवहउ
कतिजाइ ॥ दोका ॥ यहमानभ्रमनाइकान
इककीं श्रोषनिमें आपनौ प्रतिविवदषि
श्रीरस्त्रीजांनिकें कहतिहें मानवतीहें ॥
वित्त ॥ नैकमनेंकरें पाइपरोहरिकाहेंके
मोहिदवावतिहो ॥ राजुकरें नितयाही
येंरहैयामेंकहाकहनावतिहें ॥ जोतुम
वसाइहिघेपियप्यारीतिहोरीकहाव
जोकतिरावरिश्रोषिनुश्रानिवहेंतिय

हिनुकावतिहै ॥ ३२३ ॥ अथ परस्परमान
दाता ॥ रुचिजीवो जरीजुरे कौन सनेह गर्भ
रु ॥ कोघटिये ब्रषभां ननी ये हलधरके वी
रु ॥ दीका ॥ यह परस्परमान सषी कौ वचन
सषी सौ ॥ कविता ॥ मानत कौ नह मारी क
हिं जह दोउन मां रु भरी गरुवा ॥ दोऊ धरे
अतिले ज भरतहां क्यो नवटै हिलकी सरस
ई ॥ कोघट है चिरजीवो करौ यह एक सीजे
रि विरंचवनाई ॥ है विलवे ब्रषभानु सुनाइ
तये हलधारी के वीर कनाई ॥ ३२४ ॥
दाता ॥ दोऊ अधिकारै भरये कें गोंगहि रा
ई ॥ कौन मनावै कामनें मान्यो मन टहरोई
दीका ॥ यह परस्परमानु है ॥ दोऊ अधिक
ई भर सुनाइ कामानवती ॥ नाइ कुरुपमा
नी ॥ अथवानाइ कौ मानुदषिवेकी गों
हो ॥ सषी कौ वचन सषी सौ ॥ अरु जों दोऊ
अन्यासक्ति होइ तौं ये ही कहि वौ संभवै
कविता ॥ आजु चलीरस हीरस मै रसवा

तदुहं नि क्यो कही आवै ॥ लं अपने अपने
रिसमें अरु ना यो हिये अव को सुर ना वै
दाऊषर अधिकाई भर गहें ये कही गो
को उभदन पावै ॥ कौन मन ना वै मन कहि
का मन मानौं दुहं न को मानु ही भवे ॥ २५
यां तडि टा इवो दो ॥ मानु करति वरज
तिर हो उलटि दिवावति सो ॥ करि रिसो
होजां इगी सहज हसो हो भो ॥ यो क ॥ य
ह माना इ टावति है सो मान धुडा इवो प्रय
जनु है सधी को वचन ना इका सो ॥ कवि
रुषां करो सधने न चटा इके वैन कहें सुषते
नषां हो ॥ मान कस्यो सुभली करि हो न मन
रां अर दिवावति ॥ मोह सो वूरे न का
रुदति सो दषां गी मन मोहन को मुख जो
हो हि गी के ससि सो ही सुहा गिल हां सी भ
जु सुभा इकी भो ॥ ३२ ॥ दो ॥ ॥
कैसे रुषस सि मुषी हसि हसि वोलत
गूढ मान कहि क्यो दुरे भये वूट रंगने

यहनाइकाकौंधीराकौमांनुसोसपीनाइ
कीनाइकासौकहतिहै॥कचिन॥ ऊपर
कौरसकौसौकस्यारुषुभाउकियेहितव
सरसाते॥सूधचितैहसिवोलतिभामिनि
बैनकठमुषभीठसुधाते॥५॥नेहकेचिन
जलायेसवैकहिस्वासदवाइकेतेहकेता
ते॥मांनरियेकौदुरैकहिकेवांनुमजीर
करंगभयेदगराते॥२७॥दीक्षा॥चिन
वनिरूषेदगनिकीहांसोविनुमुसिकांनि
मानुजरायौमानिनीजांनिलियौपिय
आंनि॥दीक्षा॥ यहनाइकायानवनीहप
मांनकेलछनप्रगष्टकरेनाहीपंप्रवांन
नाइकेनैजांनोसपीकौवचनसुथोमांम
पीनाइकाइसौकह॥दीक्षा॥वसतेचि
नोतिजैसैआगवितवतिलुपनरुचिक
इकोनीदगनुनियोनोह॥मधुरवचन
नोरोवोलतिविदमिपंमजससुषकोनि
पारवांनियदियोनेता॥

रिसदानी तें सयानी सो प्रवीन तुकी दीठिंतर
हति कै सें छां नीहें ॥ ३२८ ॥ कपटस
तर भाहें करी मुष अनघां हें वान ॥ सहज
सोहें जानि कै सोहें करति न नैन ॥ दीका ॥
घह मान परिहा सहें सषी कों वचन सषी सें
वीत मकी प्रीत की प्रीति लघि
बेको प्रांन प्यारि कधूकी नो परिहां सुजूहो
मांनु ठानि ॥ कहें क विक्रम उर ऊपर रु
ई भरि वदन विदो रिवें ही धरि कै कपोल
नि ॥ आं पनी अली तिहें सो जोरति न स
मुष वैन अनघा इवें की ज्यो ही त्यो ही
वांति ॥ भूकुटी सतर की नी कपट सो
अपे सोहें न करति द्रग सहज सोहें
३२८ ॥ ॥ मननु मना वन के
तरु ठा इरु ठा ॥ कोंति गला यों के
षि हि हरि रुवति जा ॥ ॥ ॥
को मान देखि वों प्रयोजनु हें सो
न जाननु हें तव ही फेरि रु ठा ॥ ॥

धीसंधीसांकहतिहै। कविना। रासभर्जा
अषियांनिहंकीअवलोकनिमांरुभक्ष्यं।
रसभारी॥याहीतैमांनहं।कोरुपदपिव
कीनदनंदरिहयैरुचिधारी॥रातिमनांशं
प्रियाजवहीतवसैकरंदनरुसाडवितांश
कौतिकलापोंहीरसकेपिमिहंकेगिमान
निराधिकाप्यारी॥३३थाश्रुति।वाहीनि
सितनामितैमांनकलहकोमनु॥धनप
धारेयाहुनैशौगुदहकांकुनु॥श्री३३॥यद
गदकापरकियाउपपत्तिकविगदगदवका
...नकोनांसुसुप्यय्यंकोकरान
॥कविना॥जातिजनोदुष्टममश्रीनि
रवमजानकोदुष्टममदुष्टममश्रीनि
॥वतिरजनोतेअयोनिजनअदुष्टम
अपचिहृगिकहुननरमनयाय
...मनानंशुकेनेनेद
...दुष्टममश्रीनि

गरा यो है ॥ ३३१ ॥ ३३१ ॥ माह सांवातनु
लग लगी जीभ जिहि नाइ ॥ साई लें उर ला
ईयें लाल लागी यतु पांइ ॥ दीका ॥ यह म
ध्रम मानु नाइ का सांवा तें करत जानाइ
का सां आसक्त होइ नाइ कने ता ही कौ नामु
ली नों सुनाइ कानाइ कसों कहति है ॥ क
विता ॥ कें तो राषों गाइ होइ प्रगट ही ये का भा
उजा संरंग म गि म नुर धो अनुरागिकें ॥ ३
घरी सि कर स प्रीतिकी धीवन वाकी भले
सुधिकी नीमा सांवा तिन हं लागिकें ॥ कस
प्रांन प्यार पूरी प्रीतिको धर मु यह पायो
अव मर मु भस् मु ग यो भा गिकें ॥ पाइ नु
पर ति हरि वा ही उर ले ये जा ही र म नी कौ ना
मुखों र स नामें पा गिकें ॥ ३३२ ॥ ३३२ ॥
अह कहै न कहा कथो ता सां नंद कि सार ॥
बड बोली कत होति वलि वड ड ग निके जार
दीका ॥ यह म नाइ वो स धी कौ व च न ना
का सो ॥ कविता ॥ सांची क हि मा सां अह का

ते कहतिनां हि तो सों कहा कस्यो मन मोहन
 लाईरी ॥ क्यो नूँ बडि बोल अँ सों बोलति गु
 मान भस्यो ये तीरिसरास तें कहा तें गहिया
 री ॥ कृष्ण प्रानप्यारों अति हितु के मनावति
 करि मनुहारि बहु भांति मै वनाईरी ॥ मानि
 कस्यो मरो वलि उलटनु करि जो पै लै ही खाई
 वडी वडी आंषि छवि छाईरी ॥ ३३३ ॥ दोहा ॥
 धि विधि कौन करै टरै नही परै हं पांति ॥
 तैं कितै लै लै धस्यो इतै इतै न मानु ॥ धर
 हमनाइ वों सखी कौ वचननाइ कासो ॥
 काचित् ॥ याइ पर मन मोहन हु बहु भांति हि
 रस भाइ भरतौ ॥ प्रीतिकी चोय चटाइ अ
 निकही समुगाइ विनै करिकेतौ ॥ लोच
 न तेरे तऊ नल च अनषां इनचे अति रास
 रचेतौ ॥ नै कचितै मुगनै न कितै तै धस्यो ॥
 भरि मानु इतै तनु येतौ ॥ ३३४ ॥ धर दोहा ॥
 इतिहासाइ उरलाइ उठिकहि नरुषों हवै न
 न कितै थ कितै कं थ कि लो

नैन विवत् ॥ यह मानुपरिहासनाइककेवि
ध्वमानसधीनाइकासांकहतिहेजोनाइका
कांअपराधदुरावकोकहेतोहसंभवं ॥
विक ॥ मानलियांहाइतोमनावेप्यारो
पांइगहिअंसपरिहासकोजतनकहाकी
जीये ॥ हाहातोहिसांहेअवसूधीकरभांहे
वंनकेहिनरुषाहेलालुछातीलाइलीजीये
हसियेहसाईयेरीसुषसरसाईयेरीरसुव
रसाइदुखुसांतिनुकांहीजीये ॥ ३३५ ॥
सा ॥ येरीयहतेरीईक्यांहेप्रकृतिनजाइ
नहभरहियराधीयेतूरुषीयेलषाइ ॥
यहमनाइवोसधीकोवचननाइकासां
कविन ॥ कानपरीप्रकृतिधुरायेंनधूट
क्यांहेज्यांज्यांकीजेउनीत्यांत्यांइनीपेधि
यतिहो ॥ क्रमप्रानय्योरकीदुहाइतेरीदेष
गतिमेरीमतिमतिसाचसांसनीविसधि
पतिहे ॥ जदपिसनेहरांउरमांवसाईप्या
रेप्रीतिसरसाईअरुनाइलेषीयतिहे ॥ ३३६ ॥

हंसहवांनिलगेथाकेभेदउपाइ॥हठुडग
गठुवैसुचलिलीजेंसुरगलगाइ॥दीक्षा॥य
गुरुमानुहंसधीनाइकसांकहतिहेंकेवाके
नुतुल्लारचलेंधूटेगेंसधीकोवचनुनाइ
सां॥कवित्त॥आजुसजोहठुकोगठुप्या
रीनेइवतधीरजकोनकोधीजें॥कोनइ
भांतिलगेसहवातनभेदउपाइथकेमांत
छीजें॥लोचनइतनक्याहंमिलेंहरिमांनि
मंत्रविलंबुनकीजें॥आपुनहींचलिये
वलिजांअंसुरंगलगाइलगाइजोलीजें
३३॥दीक्षा॥अमरसहंसपाईयतुर
सिकरसीलयास॥जैसेसांठकीगठिनगां
भरीमिरास॥दीवित्त॥घरमानवती
कीसाभासधीनाइकसांकहतिहेंप्रयाज
नयेहेंकेनाइकचलेंतोमानधूटे॥कवित्त॥
मांनिनीतिहारीमेंनयां ननिहारीकधूमा
पेनकवांपरतुसाभांको है॥नासि
कासकारिमुहंघो

च
लोचननुमांशुप्ररुनाईकांप्रकासुहं॥ रसि
रसालवारसीलीकीविलाकोधुविअनरस
हंमैअंमौरसकांनिवासुहं॥ ३३-२॥ यहा
हमहारीकेकेहहापाइनपारोप्योरु॥ लहिव
हाअजहूंकियेंतेहुतरेंगैत्पारु॥ यिका॥ य
हअतिपुरमांनुहंसधीकांवचनुनाइकासां
कवित्त॥ बंदकचूरसीचारुछवाअरुमाल
तीमक्षीफुलीसुषदाइनहं॥ हाहाकेहारिही
सजनीबहुभांतिनिहारिमनेबकीभाइनि
जीवनजोसगरबुजकोहारिप्रीतमसाऊप
स्योदरपाइनि॥ लहिकहाअजहूवलितह
सांत्पारुतरेंकियेंहुकराइनि॥ ३३-३॥ यहा
सांहेहहस्यानतेंकतीदाइसांहा॥ यहाक्याव
हीकियांअंधीगंधीभांहा॥ यिका॥ यहनाइ
कामानवतीसधीकोवचनुनाइकासां॥ क
वित्त॥ कतीभनुहारिकरिहास्यानदला
नुबुजवनित्तानिहालहोतिजाकेनैकचाहेतौ

हीतौ तू सयानी पर कहाचित आनी ये तेर ति
कसमांजविनु काज अवगाहेतौ ॥ सोहे हरि
को हमके ईती दाई सोहे नरुते म्यां मनु नल
क्यां रसके उमाहेतौ ॥ कियो कहा चाहे निहं म
ई क्यो न कहें अव अही म्वे दी भौहें कवि वेदी
अवकाहेतौ ॥ ३५ ॥ दाहा ॥ निरदं न ह
नयो निरधुभयो जगतु थयथानु ॥ यहनक
ह अवनौ सुनो मारि मारि यतुथानु ॥ धका
परमाने विरहसयो को वचनु नाइ का म्यां जा
रकके यठको सपीहो ॥ जो परकिया नाइ कइ
करिये तो करिये ॥ दवि ॥ अमो अथान
भयं मनमो धरनु तो विनु नं कनु अंगय ए
रह ताइ होइ तरसावनि वावये क्यो न करे
मिनि केन विरहहि तेयो नयो निरदं हिन
रिइ न्यो जगुहो इ प्रगे भयथारहि ॥ अमो
अमो सो नूनन नइ गनि अइ प्रगे अथ
मोनको मारकु ॥ ३५ ॥ जं न ह न न

नरितुपाइ ॥ आनिगांठज्यांधुरतित्यांमनगांठि
 धुटिजाइ ॥ यहपानमाचनप्रसंगविधेसस
 धीकां वचनसषीसां ॥ कवित्त ॥ हांमिनाचपल
 दुतिसाइउस्यांमघनहींसोमिलिबिहरतिअ
 तिसोभासरसातिहें ॥ दुमतिसेंलहलहील
 लिनलनाबठिरहीसवहीकेउप्रीतिअधि
 कातिहें ॥ कसीयांहहीलीकोऊरुठनोनठानस
 केंमदनपरूरनिसांछातीअकुलातिहें ॥ इ
 ध्यांरितुपावसकेनेहकीनिकाईमाईआंति
 गांठिधुटेंमांनगांठिधुटिजातहें ॥ ३धर ॥ वे
 हा ॥ सतरभाहरुषवचनकरतिकठिनमनु
 नीठि ॥ कहाकरकेजातिहरिफरिहेंमोंहीठी
 ठि ॥ दीका ॥ यहनाइकाप्राटाउत्तमासकी
 सिषावतिहेंकेंतूंमांनकरियाकेनाइककांइ
 धेमानुकरतुनांहीनाइकाकां वचनसषीसां
 ॥ कवित्त ॥ तेरोकथांकरिरुसनोंठानतिहें
 रुयरुषाकेतानतिभाहें ॥ नीठिकठारकरोम
 हेंमुषहेंतेवषांनतिवेंनरुषांहें ॥ कहारसु

रां अली चला लची जों अयनी मह ताक गाठ
कसी करौ मन मोहन कों मुख दखत लान न
हान हें सोहें ॥ ३६३ ॥ दोहा ॥ ताहा कां फुटि मा
तुगां देखत होवु जराज ॥ रही धरी कला ॥ ३६४ ॥
धरि मान किये की लाज ॥ टीका ॥ यह मान ग
चन सधी कां वचन सधी सां ॥ कवि ॥ अना
रुसने की अति सोभा कहा कता पां निवृत्त पा
धरे की ॥ अलिनु की विनती मुन नरग ॥ गुण
का के हियरे की ॥ धरि गखी मुना दपतरी ॥ ३६५ ॥
रतिकां ॥ हनु नाई भरे की ॥ यां नरीं यां ॥ ३६६ ॥
रही वहला जधरी कला मान करके ॥ ३६७ ॥
दोहा ॥ चलौ चले धरु जग शरग वर मय ॥ य
यस्व दायतान अव आयना चक्रे ॥ ३६८ ॥
यह मान धुजावें कां मयो कं प्रयत्न न्या ॥ ३६९ ॥
जैना देवें को हें सधी कां चन्दन ॥ ३७० ॥
मान के कलि निहो गपि यगि ॥ ३७१ ॥
मराप मराती ॥ ३७२ ॥
ननु ही गये यकन ॥ ३७३ ॥

मोहकश्चुनईजुहुती अतितानो ॥ लालचला
अवलोकि तुस्त्रुटिजाइगो मानु अवेहमजानी
१४५ ॥ दोहा ॥ तुही कहतिहो आयुहं समरति
सवंसयांनु ॥ लषिमोहनमनजोरहे तो मनुराषो
मानु ॥ टीका ॥ यहनाइकाप्रोढासषीकहति
हकितं मानुकरिसानाइकासषीसांकहतिहं ॥
मानु कियैरमनीजनकेवसपीतमहातमताय
हतरां ॥ होहंयहं अयनेचितआनतिजानतिहो
करस्यांनघनरां ॥ तो करोंमानुरीमोहनकोलषि
जोसषिहाधरहमनमरां ॥ रूसिवांजीमेंविचार
तिहोयकहाकरोंसांरुनहोतुनरां ॥ ३४६ ॥ दोहा
माहिलजावति निलजयहुलसिमिलेसवगात
मानुउदंकीआसलोमाननजान्याजात ॥ टीका
यहनाइकाप्रोढामानुमाचननाइकाकोक्यतर
षीसां ॥ कवित्त ॥ तूतोसिषवतिमनमोहनसे
मानुकरिमरेहहियेमेयेविचारहरातरी ॥ निर
घनरुसप्रानप्यारकीछवीलीट्टुविआपुहीते
हुलसिमिलतसवगातरी ॥ कहाकरोंनिलजय
माहीकोलजावतहैकहोजोपहोइकहिबेकीव

ध्वंशतरी॥ भानकौ उदो तु भयो ज्ञासकनकीसी
भानिमानुमनमौतेहोनजानतविलातरी॥ ३४७
दाहा॥ उगनिगाइनेनडिगिगहेनचेतुअचेतु
होकसिकरिसकौकरौयेनिसषरसिदेत॥
टीका॥ यहनाइकाकौवचनुसषीसौ॥ कविन॥ सही
येजगकेउपहासनितैरहीयेगुरलोगनिमांग
सं॥ इरुअनि यहअयनेउरहोसमहाइरहीनहि
नेकेनसे॥ अरु रंचकभरोकस्थानकरतनह
मनहारतऊहुलसे॥ यहनेमुगधोसजनी
इनेनेनुपेहरिहेरिहसहीसं॥ ३४८॥ दा
हा॥ सकुचिनरहीयेस्यंभसुनियेसतरौहेवे
न॥ इतरषोहेचितुकहेनेहचितौहनेन॥ टी
का॥ यहप्रथमसमागमनाइकापरकीया
सषीकौवचनुनाइकासौ॥ कविन॥ नाही
मेमहाहेनईरीतहेइहकौयहरसिकमननिको
रतिअतिचैनहे॥ यीनूषोरुषुचिकनावतु
प्रधितुयेईमममथकेविलाससुषदेनहे॥
कुचिनरहीयेसुजानमनस्यंभसुनौक
भयोजौपैसतराइकहेवें

सौस

चाहें सहीयें की बात हसां है निचां है यकहं ही
दतनं नहं ॥ ३४८ ॥ इति ॥ ॥ कहा लहु गे घल
पंतजों अटपरी वात ॥ नहहसां ही धूमई भां
हंसां है घात ॥ ३४९ ॥ यहना इका कों औरसां
आसक्ति जानना इका नें मानु की यों नाइकु
मनावन आयों सुवाही नाइका कों मानु मुह
ते निकस्यो सो सधी नाइका सो या कों मानु
उइव कों परिहास कों प्रसंग चलायो सधी कों
वचन नाइका सो ॥ कवित्त ॥ हां सीतों की जी
यें जा सो ललाजु हसे सुघु घायिन ये तिय अ
सी ॥ वारही वार लें और कों नां मुहु का वोइ ह
तजों चानि अनें सी ॥ या परिहास पै लें हों क
हा हरिये तों इते कही ये मुरि वैसी ॥ सां है कि
यें भई नीठि हसां ही गभां हक मान मनोज की
जैसी ॥ ३५० ॥ सनेह के अंग के ॥ इति ॥ घल
वठई वलु करि थके कटन कुवत कुठारा ॥ आ
लवाल ऊर जालरी घरी प्रेमतर डार ॥ ३५१ ॥
यहनेह की प्रकता सधी सो नाइकु अथवा
नाइका कहें ॥ कवित्त ॥ देवत हीं मूरति मध

रमनमोहनकीनेतनुकेमिलैमित्योभनु
श्रवदातुहै॥आलवालउरतैप्रगटभयो
प्रेमतरुदिनदिनफालरतुअतिसरसातु
है॥ताहिदूरकरवेकौकितनेषलनिषगिकु
वतकुठारगहिकीनौऊतपातुहै॥कहैक
विक्रमसवैथकेअतिवलुकरिसंकनघ
टतुल्योत्योद्रठहोतजातुहै॥पशादाहा॥
कारतुजातुजेतीकरनिचदिरससरितासातु
आलवालअरुप्रेमतरुतिस्योतिस्योद्रठ
हातु॥टीका॥ यहसनेहकेअंगमेंद्रठताना
इकाकौअथवानाइककौवचनसधीसौस
धीनाइकानाइकहूसौकहै॥कवित्त॥आ
लवालउरमेमनौजवीजतातैभयोआली
प्रेमअंकुरउदातुहै॥सुरतसलिलसीचैया
होतैउमगिउरफूलफलप्रगट्योविरहुओ
नपोतुहै॥कहैकविक्रमज्योज्योउमगिप्रव
लपूरकरसकटनिरससरिता
कनडिगतुवाकीत्यो

रतुमौरतुषरोईडि।ठहोतुहं॥३५२॥दोहा॥ज
दपिसुंदरसुधरऊरसगुनोदीपकदेहु॥तऊप्रका
सकरैतितोभरीयोजिस्तोसनेहु॥दीका॥य
हसनेहवटाइवेकोसधीनाइकासो कहनाइक
हसो कहो॥कवित्त॥जदोपिचारुगहचिकना
ईसुठारठस्योसुधरोकिनिहोऊ॥यहवातप्रमि
दसवैजगयेकसीरितसुरीतनिवाहतदोऊ
३५३॥दोहा॥सरससुमिलिचिततुरगकीकरि
करिअमितउदान॥गोइनिवाहैजोतयैषेलिये
मचौंगान॥दीका॥॥यहसधीनाइकाकोसने
हकोइठतावतावतिहैअरुप्रयाजनुनाइकस
मिलाधुकरायोचाहतिहैसधीकोवचननाइ
कासो॥कवित्त॥सरसतुरंगअतिसुमलवि
मलचितुताहिचाहिताजनेसोचु॥रकिचला
श्वो॥लोकलाजवागसाधिअनुरागकरिइठ
अमितऊटाउनीनुकरिकरिधाइवो॥कहैक
विक्रमअभिलाषधरीराथगहिगोइनेरवा
हैतवजीतपदपाइवो॥यलिवोकरिनयह

रतिहैं। नाइककेवचननाइकसों॥ कवित्ताने
हभरीनेननुकीजवतेनजरमिलीतवहीते
चितकोलगीयो अतिथाहुं॥ मिलतमिल
तमनहिलिमिलियेकभयोपसों प्रमपंड
को अनांषो उरफा उहें॥ कहेनसकततरो
हियोनिरमोसि अतिमेरेहियेंगसों कध
असों सुभा उहें॥ तरे अनआ अवेनआ
बहेहें यहतरे अं अं आ जात प्यारत
नआ उहें॥ ३५६॥ ललनसलो
ने अरु रहे अतिसनेहसों यागि॥ तनक
कचाई तदुषुसुरनलों मुहलागि॥ हीका
यहनाइका प्राटाहें नाइकके अंतहकरनमें
कधूकपटुजांनि उराहनेमें प्रागटकरति
नाइकाकावचननाइकसों॥ कवित्ताने
कचित्तैचितचारतहें॥ उरजारतहें अ
नुरागसचाई॥ रावर प्रमुप्रबंधनुकीजि
तहांति तहां सुतियेचतुसई॥ रूपसलो
नेमनेहप्रागहरिप्रीतिकरंगमें बुद्धिरचा

सूक्तलो मुहिला गित ऊ दुषदत्त लला
यहनैक कचाई ॥ ३५७ ॥ नाइका कां उरां ए
हना ॥ दाहा ॥ मोहिदियां मरां भयोरहिना
जुजिय मिलिसाथ ॥ सामनु वां धिनसापि
धपिय सांतिन के हाथ ॥ टीका ॥ यहनैका
प्राटा परकीया उराहनां नाइका कां बचन
नाइका सां ॥ कवित्त ॥ जो मनुमाहिमया
केदियां तुममाजिय संमिलि के रं सभीजे
भदरखानसरूपसुभाइमपे मययूषम
दां मिलिपीजे ॥ मं अयने करिजायो यही अ
वअंतरहात छिने छिनछीजे ॥ सामन जोरा
वरी करि मोहन सांतिन के करवां धिनदी
जे ॥ ३५८ ॥ दाहा ॥ भयवटा ऊन हुत जि
वादिव कतवसील ॥ अवअलिदत्त उरां ह
नां उर उपजति अलाज ॥ टीका ॥ यहनै
इका प्राटा परकीया उराहनां नाइका कवि
धमान नाइका सघी सां करतिह ॥ कवित्त
नेननु सां मनसां तनसां र . . मिलल

तसुषसाजनि॥ भूलिगईसववेवतियांरित
पुंजनि की घुह मांति विराजनि॥ येतजिनेह
वटा रुभये अववाटिवकै सजनी विनुका
जनि॥ दति उरां हनो अंसेनुकों अपनै उर
हीचपिये अतिलाजनि॥ ३५६॥ दोहा॥
आपुदयो मनुफेरिलें उलट दीनी पीठि
कोन चालय हरावरी लाल लुकावति ठि
ठि॥ दीका॥ यहनाइका प्राठा उरां हनो द
ति हे नाइका कों वचन नाइक सो॥ कवित्त
नेदलला उर माइ हियो अवट्टे पिवकोत
रमावतहो॥ तुम मोहिदयो अपनो मनु
आपुही फेरिलें कों सिरुनावतहो॥ तुम
तापलटों अवपीठि ई हरिकाह कों ईठि
लुकावतहो॥ ३६०॥ दोहा॥॥ विरहविथा
जलपरसविनुवसियतुमा हियताल॥
कधुजानतजलयं भविधिदुरजाधनले
लाल॥॥ दीका॥ यहनाइका प्राठा उरां
हनो नाइका कों वचन नाइक सो॥ कवित्त॥

हरि मोहिय प्रमसरोवरमें वसि वौनि सिंवा
सरठांन तह ॥ तह नीर वियाग विथा सु
निदेन कृपा उकहा उर आंन तह ॥ कवि
कक्ष कहें अपन गुर कौं हम सो पिय भदु
न भान तह ॥ कक्ष जान परी दुर जो धन ल
जल थं भन कौ विधि जान तह ॥ ३६१ ॥
दा ॥ २ ॥ दक्षिण पिय के वाम वेस विस
राई तिय आंन ॥ ये के वा धरि कौ विषह
लागे वर सविहां न ॥ टीका ॥ यह नाइ का
प्रदाह सो नाइ क कौ उरां ह नों द ति हं द क्षि
न पिय या य द तै चतु राई पिय संवा धनु
जांनियें द क्षि ण नाइ कु व नै न ॥ कवि ॥
र सारि ति न र हौं नु चा तुरी के सा गर हों का
रि का म क लानि धि रु प मां न पर सो ॥ स व
सु ध द त हों नि का ई नि क त तु हं डे ष त हों
प्री ति स व ही के सर स हं द क्षि न स न ह रि
प्रे से भ ये वों म व स वि स राई आ र ति य द
षि वे कौ त र से ॥ कहै क वि कृ ष्ण ये क भों ॥ न

वसिरहैहमध्यांनलागीविरहविठानलाम
वसं ॥ ३६२ ॥ फिरतेजुअष्टकन
इनविनुरसिकसरसुनहिष्याल ॥ अनत
अनतानितनितनसुनितहितसकुचतनहि
ल ॥ यहनाइप्रादाउरांनानाइकाकाव
ननाइकासां ॥ कवित्ता ॥ कस्मिप्रांनप्यारजग
नततिहारगुनगूठनउधारेश्रीसीटरनिदरति
सवहीकाभावतहारसिककहावनहारसिक
सीलेलालष्यालसांकरतहो ॥ अष्टकतपि
गतलगतिविनुदोरदोर प्रेममनुसांचोपेक
नऊधरतुहो ॥ अनतअनतनितकीजतनह
चित्तकहंजियमेंनकहं हंसकुचधरतहो ॥ ३
सुभरुभस्यांतुवगुनकननुयचयांकुवतकुच
ल ॥ कपोंधोदास्यांज्यांहियांदरकतुनाकितेंल
ल ॥ टीका ॥ यहनाइकाप्रादाउरांनाना
काकावचननाइकासां ॥ कवित्ता ॥ माउरमेंअ
नुरागकेफूलतेंयांयरतीतिकलीप्रगटीज्या
रायरश्रीगुनकेकनकाछककेवकुलासंग

रभरुप्यां॥ वंचकताईकीवातनिसोंक
 विश्वम्कहं परिषेकभयेप्यां॥ श्रांतुमों
 परेषोंयहं अवदाडिमज्यादरकैनेहि
 ॥ दोहा ॥ सदनसदनकेफिरनकी
 दनछुटहरिगड॥ रुच्यंतितेंविहरति।
 राकतविहरतउरआइ॥ दीका॥ यह
 नाइकाप्रोटाउरांरतौनाइकाकोवचन
 नाइकासों॥ कविता॥ डालतलालध
 धरमांकतप्रसंकांश्राककहंनउघा
 ॥ ज्ञानियरेअवतोकवसोंउरहीकर
 हसध्यांनतिहोरों॥ बानियरीसुनि
 दूछुटमनुसोंनेतहींरुचिसोंनिय
 रों॥ भावतीसाजविहारीकियोकि
 योंकिततेंइतआइविहोरों॥ ३६५॥
 स्वाधीनपतिकादोहा॥ छन
 कतिछिनकुभुजपीतम
 ठौअटादषतिघटावि
 ॥ दीका॥ यहसंजोअ

धीनपतिकासपीकोंवचनसपीसां॥क
वित्त॥ मलिभुजा मनमोहनकंठच
लठदुकं उमगंसुषभारी॥ ताछविपे
कवि क्रम कह धनदा मिनिकारिकर
बलिहारी॥ कुंहनसतनवांनिकसांवनी
सारी सुरंगलसैलहकारी॥ कारिधं य
टाछविसां अ विलाकतिसांवनसांऊ
अ यचदिप्यारी॥ दोहां टुनिहाई सब
शलमं रही जुसांति कुहाई सुते अं न
यां आयुत्यां करी अ दोपिल आइ॥ दिका
यहनाइका स्वाधीनपतिकासपीकोंव
चननाइकासां॥ कवित्त॥ रातिदिनाछ
कियाही कर्घां मयग्यां रसमं रहतां सुष
दाई॥ यासपरोंससब कहतीं यहवीस
विसं यहहं टुनिहाई॥ तूंजवतंगुनरूपक
कीरासिसुमीलसुहागिलगांनहिआ
ई॥ प्रां प्रयती अयनं वसकं तं भलीकी
नीसांतिकीछातिवहाई॥ ३६ ७॥

ली अतत आयवनमाली नदीका
हनाइ काउतकंठिता परकी यानाइ
काकौ वचन सधीसै ॥ कविता ॥ आजु
माहनका मगु निरषत भरे पलकें
लागे प्रीति उरतें न हालीहैं भई नभ
ली देघि की की परी रूषता ली सुनि
तधुनि चिटकाली आली तिसा बालीहैं
हरवनीकी लखिमदगजं बालितासै
नियतरी फिवनमाली रतिपालीहैं ॥
हाकहैं आली अति मदन विपलघाली
लीसे जभई जैसी ब्याली विकराली
३७१ ॥ दोहा ॥ ॥ निसि अधियारीनी
लपटुपहरबली पियगोहा ॥ कहैं दुगई
क्यां दुरे दीपसिधा सीदहा ॥ दीका ॥ यहना
इका क्रष्मा अभिसारिका सधीकी
अंगदी प्रिकों अधिका ॥ त
निसांकी अध्यारीम
मघरासुकी आई ॥

रायै ज्ञाति सजीत नम चक सारी सुहाइ
धुंघट में अव चंद दुराई के है क विक्रम
करो चतुराई देह की दोष ति क्षिप सिषा
नी कयौ यह के सेंदुरै गीदुराई ॥ ३७२ ॥
श्री शरी सटपट परी विधुआ
धम गहरि सांगल गमधुपतिल ई भा
गनु लगी अधरि विना ॥ यह नाइका
कष्टा अभिसारिका अपनी रातिकी वा
त सषी सां कहति हैं राह में चंद्रोदय भयौ
सा भां रनु गली छाली नी यह पद तै रूप
गर्विता भई त विना ॥ सांमनि सांलषि
तें उदातु भयै स सिद्धति मा मति सोबर
लीरी ॥ पंकज छांडि सुगंध के लाभ लगी
सग भौरनु की अवलीरी ॥ ताहि सयै मम
भागिनि आंइके छाल ई जल कुंज गली
री ॥ ३७३ ॥ देला ॥ छुप्यो छुपा करु छिति
छुप्यो तमु सहरिन सखारि ॥ हसति हंस
ति बलि ससि सुषी सुयते श्री चरु परि

टीका॥ यहनाइका सुक्ता॥ भिसादि॥ २१॥
 मंचद्रास्तभयो देषिसकुचितमईतयय
 षीसमाधानुकरलिहो॥ अवित्रतेरेकहे
 सजिसुभ्रसिगारुचलीअलिहोमहि॥
 तिमंदहि॥ आथयोसोसुअलीअथयो
 वहीदेषिद्वयछितयेतमवुंदहि॥ अथ
 कांपटुयारिकेप्यारीउधारिदेअपनेअथ
 वंदहि॥ सोचसनेमतिजोनहसीकरीयो
 वतिकेमिलिकेनदनंदहि॥ ३९॥ ॥ ॥
 अठकठकुयतोकरापावसकेअभि
 सारा॥ जानियरेगीदेषियोदामिनदानइ
 धियार॥ यहसधीनाइकासोकहतिहोनि
 अभिसारकोसहजहीसमयहनाइका॥
 रकिया॥ कवित्त॥ क्योनननीलनिनी
 लसजेसयिक्यामृगामदकांनयुकरा॥
 पावसकेअभिसारकोसनाविचारवद
 वितमोअधरेगा॥ कुंजकेआ
 क्योनचलहारिकेनरिअंक
 सुक्ताभिसादि॥ दा॥

मिलिगाईनेकनपरतिलयाइ॥ सांधकडा
रंलगीअलीचलीसागजाइ॥ चिक॥ यह
नाइकासुक्काभिसारिकासधीकांवच
नसधीसा॥ कविज्ञ॥ तनकीगुराईतरु
नाईकीनिकाइछाईजाकीउजराईतेउजा
रोउजरातिहै॥ सरदनिसांमेंप्यारीविस
सिगारुसाजेजगमगनीकीनीकीसा
भासरसातिहै॥ चलीअनुरागीमनमार
नकेमिलिवेकोचांदनीमेंमिलिगाईक्या
रुनदिधातिहै॥ लपटसुगंधकीअध
हउपटतिअंतगताहीकीतरंगलागीस
धीसंगजातिहै॥ ३५६॥ संध्याभिसारि
कादाह॥ गोपअथाइनुतउठगारजछाई
गेंल॥ बलिवलिअलिअभिसारिकेनल
निसांधीगेंल॥ चिक॥ यहनाइकासं
धाभिसारिकासधीकांवचनुनाइकासां
किअंससमेंअभिसारुकरि॥ कविज्ञ॥
छाडिअथाइनुगसलइकोउठीसवगाय

की अवलीहें ॥ छिन भई सुषहें रविकी
छवि गोरज धारत गेल गलीहों ॥ चंद्रक
ला प्रगटी न चलो चलिके ध्यान करों अलि
रंगरलीहें ॥ मानिसुहा गिल मरो क ह्यो
अभिसार सुसल सें हो के भलीहें ॥ ३७७
षडिता ॥ दोहा ॥ चलसोहें पीपी करंग
छलसोहें सबवेन ॥ चलसोहें कतकी जी
यतये अलसोहें नन ॥ टीका ॥ यह नोई
दा अधीरा षडिता नोई का को वचन
नाईक सें ॥ कवि न ॥ सोहल सिधल गात
रसमें योगनि सिजागो तोहें आरसके दा
रदियतहें ॥ वेन तुतरात अगिरात सुरि
खेरफिरिके रहरियत येन ररिद्यतहें ॥
। नसुने छलसोहें पीक योगपलसोहें द्रवध
उगनि अनंद भरीयतहें ॥ कं म प्या
अमुकाहें को करतये
तहें ॥ ३७८ ॥ दो ।
रसो न जुही निसे

किये गुलता लागने न ॥ दीका ॥ यह ना
इका प्राठा अधीरायेंडिता फूलतुके नाम
सदकोच मत्कारहें ॥ श्री कवित्त मागरे भूलि
नलागीयें लालन सौं नजुही नि सिसै नपि
यारी ॥ जाको लसे तनचें पकसौं दसनावति
कुं दक लोछ विधारी ॥ लोचन लाल गुला
लको रंग करे जिनरे निजगाइ विहारी ॥ नि
दतहें अरविंदनि कीछ विप्रीतिय राग भरे भ
रभारी ॥ ३७२ ॥ ~~विदित्त~~ कतकहीयतुड
बुद्धतको कहि कहि वचन श्रुलीक ॥ सवै करी
उरखौ लपे लाल म हावरलीक ॥ दीका ॥ यह
नाइका प्राठा अधीरायेंडिता नाइकाको वच
नुनाइकसौं ॥ कवित्त ॥ अजु मया करि मरे
पधार लसीछ विरें न विहारी ॥ क्यो कहीयें दुष
हनको वें नवनाइ वनाइ सने हरिरे ॥ घूं मतर
लोचन नौद भरे उघरे उरमें ॥ नवचिह्न तिहा
रे ॥ श्रीरकहा उरखौ लपिलाल धलाल महा
वरलीक निहारे ॥ ३७३ ॥ ~~देहा~~ ॥ यटसो पो
छपरे करों षरी सथानवेध ॥ नागिनि हें ला

नीलगनिनागवलिस्सरोवः पीकः ॥ यह
नाइकाप्रादा अधीराषंडिता नाइकाकोव
चननाइकसो ॥ कविता ॥ आजुमयाकरि
रेंपधारषुलीवडभागिनिकीसुधरीहो ॥ प्री
तमयेपटछोरसोंपोंछियरीकरोंमोमतिह
रिहरीहो ॥ लागतिहंममनेननुकोअहिभा
मिनसीभयभूरिभरीहो ॥ कलिसमेंअहिबे
लकेरंगकीरेषनिमेषनियेंउधरीहो ॥ ३२१ ॥
पलतुषेकअंजनअधरघरेमहाउरभाल
आजुमिलेसुभलीकरीभलवनहो ॥ लाल
॥ पीकः ॥ यहनाइकाप्रादा अधीराषंडिता
नाइकाकोवचननाइकसो ॥ कविता ॥ पीक
पगोपलकेछलकेछविनेननुमेंअरुनाई
धरीहो ॥ अंजनचारुपस्था अधरानिलिला
रमहाउरछायपरीहो ॥ लालविनागुनमाल
हियेमुसिकांनिअनेकप्रभानिभरीहो ॥ नीके
वनेंइहवांनिकआजुमयाकेमिलेसोभली
येकरीहो ॥ ३२२ ॥ दोहा ॥ जिहिभामिनिभ
षनरच्यांचरनमहाउरभाल ॥ उहीमनोंअ

धियां रगी आठनु कर गलाल ॥ टीका ॥ यह
नाइका प्रोठा अधीर यं डितानाइका कावच
ननाइकसौ ॥ कवि वाही के नैनन कांका
जर आठ पै नीकां वमै जिनि पौं छि कै षोऊ ॥
वाही के पाइकां जाव करंगुलिलार मछाह
विदत है सोऊ ॥ अं सौं वनाइ सिंर कहे सो
जिहि है वरु लाल विचहन कोऊ ॥ जानत
लाल रगी उनिहीं अ धियां अधीरानि करंग
में दोऊ ॥ ३२३ ॥ दोहा ॥ ॥ वाही की चित च
टपटी धरत अटपट पांड ॥ लपट बुझावत वि
रह की कपट भरे अ आइ ॥ टीका ॥ यह ना
इका प्रोठा अधीर अधीरु नाइका कावच ननाइ
कासौ ॥ कवि च ॥ अनव सको हों तौ विलगुन
मानति हों सवर सब सकिये चाहें व हुनाइके
ताके भागि जागे जाके संगनि सिजागे मरे भा
र भयें आये हितु हिये कां जनाइके ॥ जानीय
तु वाही की लगी है चिटपटी अटपट चरन प
रत डगलाइके ॥ लपट बुझावते हों विरह हुता
सन की कपट भरे हों प्रां नप्यारे आइके ॥ ३२४

गहकिगांसञ्चैर गहंरहेअधिकहवैन॥
दषिषिलौहंपियनयनकियेरिसौहंनैन
॥ दीका ॥ यहनाइकाछडितानाइकुचुर
तकेचिन्हुराजकयाकैआयायहवालक
रनलागीवतरातमैनइककेनेवलजौ
नैभयसधीकौवचनसधीसौ॥ कविल॥
आवतिप्राज्ञपतीहिविलौकिसुधासम
नेहकीजीहिसै॥ धाइकैकैआइलिये
हियमैउमगेसुषयुंजघनेरो॥ आधेसधे
नकरैरहेमुषगांसगहउरकौयकरेरो
लालकेनैनषिसातविलोकिरिसाइकरा
धतहीद्रगधरे॥ ३५॥ दोहा॥ लेहल
रसौंरुकरिकलकरीयतद्रगलाल॥ ली
कनहीयहपीककीध्रुतिमुनिकलककपो
ल॥ दीका ॥ यहनाइकासापराधजांनि
नाइकानेत्रचंचलकरतिहैसौनाइककी
सधीनाइकाकेचिन्नकौभ्रमुनिवारनकर
तिहैसधीकौवचननाइकासौजांनाइका
सधीसौकहंतौभूलसुरलगुः

३६ ॥ प्राजुलषीयतुकद्ध और भाति तेरी ग
ति प्रांन नये उमगिल लाई ललकति है ॥ भुकु
थी कुटिल प्रति ने हसौ तने मि भई नैन ननु मेरस
की तरंग छल कति है ॥ कल विक्रम यह धो
कां हि यहाँ तो करि पीक लीक जां नितं जुवाल
बल कति है ॥ ३८६ ॥ वाहा ॥ पावकुसौ नैन
तुल गतु जाव कला पां भाल ॥ मुकर होउ
गने कसे मुकर विलोक लाल ॥ धीका ॥
यह नाइका प्रोठ अधीर धंडितानाइका
कां वचन नाइकसे ॥ कवित्त ॥ नीकेरस
नीके वस के के रसके लीकी नीवाही की सु
मंध अंग महकिर हीर साल ॥ हातुक हा मु
कर येदुरे नदुराये चिन्ह अंजन अधरदि
यं विनु गुनु हिये माल ॥ पावकसौ लगतुक
सलममने ननु कां क्रम प्रांन प्यार लग्यो
जाव कुतिल कु भाल ॥ कैसी आजुरा जति
हं सार सने सरसये आरस मगन प्रां विप्रा
रसी लै द्यो लाल ॥ ३८७ ॥ वाहा ॥ आय
यय भली करी मेटन मार मराश हरिक

नायहृदीयतुच्छलाद्धिगुनीयांछोर ॥
हयंडितानाइकाकोसभीनाइकसौकह
तेह ॥ कवित्त ॥ आयुक्रपाकरिप्राय
मलीकरीआजुसुबानिकुमामनमोह
धतिरावरीमोहनीमूर्तिभानमरोरध
गंजकोहोकाहृदीलीकोछोटांछलाय
हछोरछिगुनीकेछजतुजोहोदक्षिसिताइ
नीइप्रिकरोकधुजानतहोअनवाइलजोह
इच्छा ॥ दोहा ॥ लालनललपायेदुरेवो
तिसोहकरना ॥ सोसचढपनिहोप्रागटकह
पुकारेनैन ॥ टीका ॥ यहनाइकाप्रोहाअ
धीरयंडितानाइकाकोवचनुनाइकसो
कवित्त ॥ ॥ प्रायजनीदजभाततउक
भदुनजामोहियेकीमोभरी ॥ वाकुवकुं
मकेलमेंचिरुमिलाहियेमसकेजिहि
रो ॥ लाललहोअवतौसव्यासदुदेनहि
हकरकिनिकोरी ॥ सोसचढपनिहो
नैनपुकारिकहैरतिरंगकीचोरी ॥ इच्छ
रोहा ॥ ॥ नुरतसुरतकेसेदुरतमुर

जुरनीठि डीरिदगुनरावर कहैकमौडीडी
ठि ॥ ३० ॥ यहनाइकाप्रोटाअधीराषं
डितानाइकाकांयचननाइसोंसखीकांयव
ननाइकासों ॥ ३१ ॥ चिन्हप्रंगप्रंग
कडुरायचतुराईकेपंआरसमगनगातु
दुरिठहनातहं प्रमसुधापानकेहुलासतमु
दिनमेंनसुषसनंअंनवंनतुनरातहं
सुरतसुरतकहोंकसंकंदुरतलालनीछि
रिसुरतनयनजलजातहं ॥ कलप्रानपा
रयहडोंडीदंकनोडीहीठिप्रगटकरतिराति
रनवाशिवातहं ॥ ३२ ॥ नरकतभा
गतसतिलगतिइहुकलाकेवेष ॥ निनरुगा
मेंकलमलेसामगातनवरष ॥ देकोय
हनाइकाप्रोटाअधीराषंडितानाइकाकांय
चननाइकेसों ॥ ३३ ॥ आयेहोंमेंम
याकरिमाइनराजतिमूरतिरंगभरोहं ॥ पं
कजनैनीकेयोंनिकीआजुहियंनवरष
धलीउधरीहं ॥ निनरुगाकेविराजतियोइ
विछाजतिमापनहंरिहरीहं ॥ नीरमेंनीले
मनीकोसिनातलइहुकलामनोतायेधरो

॥ ३८ ॥ दोहा ॥ नखरेषासाहन ॥ ३८ ॥
नहै सब गाता ॥ सोहे होत नने नयतुमसो
हेकतषात ॥ टीका ॥ यहनाइकाप्राद्य
अधीराखंडितानाइकाकां वचननाइकेस
कवित्त ॥ हरिजांनिपरीहमहंपंमयाय
गधारेइतेरतिकलिकिये ॥ तमतांसवकसु
षदाइकाहंसवहीकां वनें सुषसुंजदिये ॥
मुकरौजियेप्रगदं लोकेजुलगीट
कीनपरषहिजे ॥ जगसोहे नहोतसकाच
निलेखवकाहकां सोहइतीकरिये ॥ ३८ ॥
दोहा ॥ तरुनकोकनद्वरनवरथय
अरुननिसिजागि ॥ वालीके अनुरागइग
रहभनोअनुरागि ॥ टीका ॥ यहनाइक
प्रादाअधीराखंडितानाइकाकां वचनन
इकसो ॥ कवित्त ॥ कसप्रानप्यारप्रात
प्रीतिकेपेधारेअरेदेवमेनभूरतिविर
गयोभागिकेसरगजवागेरसयोगल
पटीपागेअरससुम
गिकेरावरलसत

भयको कनद्वरुन अरुन निसिजागिके ॥ मेरे जं
निप्राणपति वाही प्रांनप्यारीके परम अनुरा
ग सं रहे है अनु गिके ॥ ३-६३ ॥ दोहा ॥ ॥ सो
हतुसंग समान सों यह कहै सब लोग ॥ प्रां
नपीक प्रोठनुवने काजरुनै ननु जागु ॥ टिका
यहनाइका प्रोठसंडितानाइका कौवनन ॥
नाइक सों ॥ कवि न ॥ पंथनिमें यह वा
तप्रमान है यों बलि प्रोवोमतां सबही को
जै से कौतै सों ईजोगुजुरै जवहो तुमहसु
षस्य कही कौं ॥ जोषिपरीत विलोकीयै
संगुकुटंगुतहीरगुलागतफीकौं ॥ प्रांन
कीपीकवनेपिय प्रोठनु प्रोषिनिहं लगे
काजरनीकौं ॥ ३-६४ ॥ दोहा ॥ प्रांनप्रियहि
यमैवसी नधरेषाससिभाल ॥ भलोदिष्य
योअनियह हरिहररूपरसात् ॥ टीका ॥
यहप्रोठधीरुप्रधीरासंडिताहै नाइका
कैवनननाइक सों ॥ कवि न ॥ पूरनप्रेम
सों प्रांनप्रियाहिवसाइहियैहियरें हुल
सायों ॥ भालनई नधरेषविराजतसाइम

धं कलसैश्च विहायै ॥ लोचनशशुसजोगुन
 राजतुधूमतनै नतभागुन पायै ॥ श्रीतम
 प्रातही प्रीनिभलौ हरिकौं हरकौं धररू
 पदिषायै ॥ ३८५ ॥ दोहा ॥ ॥ लोचनचलै
 वलिरावरेचतुराईकीचाल ॥ मनषहिये
 षिनषिननटनप्रनर्षवठावतलाल ॥ टी
 का ॥ यहनाएकाप्रोढाअधीराषडिताना
 रकाकौं वचननाइकसौं ॥ कवित्त ॥ लोचन
 चलैकधूरवरीलालचंलावतयेचतु
 राईकीचाल ॥ छातीनर्षतपोककपोलध
 रप्रतिरंगमहाउरभाल ॥ प्रातइतेपरसौंहगु
 पालहियेउपजावतकेयांसिज्वाल ॥
 भागवडेकहिभांमिनिभालहियेउपदी
 जिहिभेटतमाल ॥ ३८६ ॥ दोहा ॥ वैसौ
 येजानीपरतिरगाऊजरमांहा ॥ मृगने
 लपरतुजुहियवैनीउपदीवांहा ॥ विका ॥
 यहनाइकाप्रोढाअधीराषडितानाइका
 कौं वचननाइकासौं नाइकीविद्यमान
 सभीसौंकहे ॥ — ॥ कोहेकौंकर

रावरीकुचाल ॥ विसुसीलागतिहं वुरीहं सीधि
सीकीलाल ॥ दीका ॥ यहनाइका प्राठाप्र
धीराषडितानाइका कों वचननाइकसों ॥
॥ कवित्त ॥ जानतिहों हियके हितसों अनि
होंके वसं सुषसों निसिनासी ॥ भोरकिहं भ्रम
भूलिके लालपधारइतंक धुकीनीरुपासी
दिसों दियेकहोंके सेंदुरें यह आरहीनेसकु
चालप्रकासी ॥ लागतवीस विसे विसुसी
सुषसापनके सुह आवतिहोंसी ॥ ४०१ ॥
गडवडछविछाकिछकिछिगुनीछारछ
रहसुरंगरंगरगिउहीनहदीमहदीने
का ॥ यहमहदीकों वनेनुहेजोनाइ ॥ कों
नाइकसों होइतों खडिताहो
वचनसधीसों ॥ कवित्त ॥ वा
गुनीकेछारछयेरुविपुजनिपू
र्यारुलसेनहदीमहदीदलवि
यहों ॥ येवियलोचनवाहीकेरंगमे
मानोंसुरंगभयेह ॥ ४०२ ॥ दोहा ॥ १
वतिनिधरकफिरौरतियों घोरतुमैन

करौं जौं जं हि ऐ लगे लगे हैं न ॥ विका ॥ यह
नाइका प्रोढाधी राषेडिता नाइका कौं वचन
नाइक सौं ॥ कवित्त ॥ छुम प्रान प्यारे प्राजु
श्रीतिके पधार हां तो तन मन वारीं करे हुलस
धाईयें ॥ नैक निरखत लगे जाहि जौं लगे हैं
नैन ता कौं तुम कह करौं प्रीवन न वाईयों ॥ कौं
सै राष्यो जातु मोरि मनबंध्यो प्रेमं डेरितं मल
नषारिक हूं चकन पाईयें ॥ काहे कौं सकुच
की जे हूं चैति तै सुषट्टी जे प्रलिकै नि संकर
सुली जे तहां पाईयें ॥ ४०३ ॥ दाहा ॥ अन
त सै नि सिं कैर सुनु उर वरि रही विषे षि ॥ त
ऊला जं आई मुकति पर लजौं है टै षि ॥ टी
का ॥ ॥ यह नाइका प्रोढाधी राहे सषी कौं व
चन सषी सौं ॥ कवित्त ॥ रातिक हूं प्रनत
वितई मन मोहन कला सुष सौं हैं ॥ ता तै हि
यें अति हि रिस छाइ रही अनिषाइ चटाइ के
भौं हैं ॥ भारही आवति दधि जऊ कहिये कौं
भई रुकि वैन रुषां हैं ॥ आई तऊ अतिला
जहिये निरखै सव लाल वरै ई लजौं हैं ॥ ४०४ ॥

विलषैलषीषरीषरीभरीअनषवैराग ॥ ॥
मृगनैनीसौननिभजैलषिवैनीकेदाग ॥ टी
का ॥ यहनायकाअन्यसंभोगदुष्चितासषीको
वचनसषीसौ ॥ कवि ॥ साजिसिगारहुला
ससौंआईविलोकरहीचकितइरिहिंमंकहि
सांतिकीवीकनीचोटीकोहागुलपोंटको
पतिकेपरजंकहि ॥ ठाडीजकीसीकपोलधर
करमोसभरीभृकुदीकरवंकहि ॥ सोचसनी
विलषैमृगलोत्वविलेतिउसासनआवनअप्र
कहि ॥ ध०५ ॥ दोहा ॥ रहीपकरियाटीसुरिस
भरैभौंहचितनैन ॥ लषिसपनैतियअनिर
तिजगुहलसतहियैन ॥ टीका ॥ यहनाइकानै
स्वप्नमैनाइकनैअन्मासक्तिदेष्योतवजागत
हूनहीछोडतिअन्यसंभोगदुष्चितासषीको
वचनसषीसौ ॥ कवि ॥ ६ पतिकेलिक
लालपगेउरलागईसोभनएपलकांही
अंसमंप्यारीलष्योसपनैहरिआनिवधु
सांकियैगलवाही ॥ यादीसौलागिरही
मृगनैनभरीरिसनैननुभौहनमांही ॥ दो

हे
यही चित्त पागी महातिय जा गित रुहिय ली
गति ना ही ॥ ध० ६ ॥ दोहा ॥ गलौ अबो लौं
बो लिप्यौ आयौ यदवसेहि ॥ शिष्टि चुराई डकु
नकी लषिस कुचौ ही शिष्टि ॥ दीका ॥ यहना
इका अन्य संभोग दुखिता सधी कौ वचन स
धीसौ ॥ कविना ॥ आपनी प्यारी अली कौ पद
पिय प्यारे कौ आयुहां बो लिप्यो ॥ आगे
कें प्राइ लियौ रित सौं हियरा कुल सौं नियरा
जव प्रायें ॥ येतें मं क्रुधु ड कुन की शिष्टिल
जौ ही लषी उरते हत चायें ॥ बोलै को भारी
अबो लौं भस्यौं जिय का सौं कहें ॥ अपनां ड
ल्यौं ॥ ध० ७ ॥ दोहा ॥ छला परां सिनहा
यनैं छलु करि लियौं पिछानि ॥ पियहि दिखा
यौं लषि विलषि सस्वक मुसिकानि ॥
॥ दीका ॥ ॥ यहना इका अन्य संभोग दुखि
ता सधी कौ वचन सधीसौ ॥ कविना येषिय
रौं सिनिके कर प्यारी करी चतुराई सुचाटक
लाहै ॥ मांगि लियौं क धुजूठ मसौं बहु कें
मनुहारिकला उभलाहै ॥ प्रीत मसौं मुसि
कवि कसकहै ॥ ॥ स्नाहै ॥

सषीकौवचनसषीसौं॥षेषीसुरंगमहाव
 रसैषिकैंपांडुयालरहीअनुबानी॥घा
 हिविलोकिविकाइमोहनुयातियहैंप्र
 पनेउरुप्रांनी॥येनेमैप्रीतमकीअगुरीनु
 ललाईविलोकिषरीबिनषांनी॥यावक
 ज्वालसगीउरमैमुरातिमहारिसमैंप्र
 कुलानी॥ध१०॥दोहा॥विधुसैंजावक
 सौंतिपगनिरखहसीगहिगांस॥सहजह
 सौंहीलषिलियौंअधीहसीउसास॥टीका
 ॥यहनाइकाअन्यसंभोगदुष्विहासषीको
 वचनसषीसौं॥^{॥कवित्त॥}वीलहसीकधुगांसगहै
 लषिकैल्योमहावरुसौंतिकेपांडु॥जानि
 यहंप्रपनेजियमैयहतानतिनाहिसिगा
 रकेभाइनि॥येनेमैमोहभरीमुसिकाति
 लजौंहोविलोकनिदेषीसुभाइनि॥आधी
 येहोसीउसासभरीअकुलातिषरीविसरी
 चितचांइति॥ध११॥दोहा॥हदिहिदुकरि
 प्रीतिमुलियौंक्रियौंजुसौंतिसिगारु॥प्रप

नेंकरमोंति गुह्यां भयांहराहरारु ॥ दोहा ॥
 ॥ यहनाइका अन्य भाग दुषिता याकोंहा
 रुलेकेंनाइकनेंसांतिकोंपहरायोंसुनाइका
 सषीसां कहें सषी सषीसां कहें ॥ कवित्त ॥
 मागिति योंहि तुके उटिप्यार नैहारु सुचारु
 प्रभानिसां पाग्यों ॥ ताहिलै लालची लालु
 भयों कहें सांतिके धाम तही अनुराग्यों ॥
 वारी कौरी रुसि गारु कियो लषिया किहि
 ये अनवाहें जाम्यों ॥ आपन लष्यवनाइ
 गुह्यां मुकता कोंहराहरारु सां पाग्यों ॥
 ॥ ध १२ ॥ दोहा ॥ ॥ पाखां सारु सुहाग कोंइनि
 विनुही पियने ॥ अनिदों हीं प्रषीयां कके
 कें प्रलसों हीं दह ॥ दीका ॥ ॥ यहनाइका सां
 तिकों आलसवलित देषि प्ररुस मसी आ
 विदेषि सषीसां धनिकरि कहति है ॥ अन्य सं
 भाग दुषिता होइ हर्ष करि कहें तो मनावन हो
 ॥ कवित्त ॥ ॥ सांकरि प्रांषि उनीं दीकरी
 अधरुत हसों मुषवाल उबां सों ॥ वारही

वारजभांइके यौंही धरों नन आरसुके डर
 टाख्यो ॥ मूठी जता वंति हों सुष सैन जगीय
 हजां मिनिजाम विचास्यो ॥ दृषितो प्रीत भवो
 विनु प्रीति सुहाग कौं सोरु कितो इहियास्यो
 ध३१ ॥ दोहा ॥ सषिसोहत गेपाल के कर गु
 जनको माल ॥ वाहिर लसति मनो पिये दा
 वानलकी ज्वाल ॥ टीका ॥ यहनाइका प्रो
 टा अधीराधीरा धंडितानाइका कौं वचन स
 धीसो ॥ कविना ॥ भागि वडे निरष्यां यह वानि
 कुप्राजु किहो वलिजा हुधरीकी ॥ अने प्रभा
 लषिला गतिह कधूयोहितो मै नकी मूरति की
 की ॥ देखीरी मोहनके उरभां वती मां लवि
 राजति गुंजकी नोकी ॥ पाई दुती प्रगदी सुतो
 वाहिर ज्वाल मनो वडवानल कीकी ॥ ध३१
 दोहा ॥ ॥ बिचे मान अयराध हचलगे वडे
 अचन ॥ जुरति गिहित जिरिसषिसीहं सेडु
 कुनके नैन ॥ टीका ॥ यह मान मोचननाइका
 केनेत्रतो मानसे बिचेनाइके केनेत्र अपर

धसों विचै है पै नते विना दष रघ्यान जाइया
ते रिस प्ररुषि सी आ पुही ते छोड़ि कें दो उन
के नत्रह स सषी कों वचन सषी सों ॥ कविता
॥ मांनु कें भा मि नि श्रै चिर ही दगारा ति कहूं ह
रि अंत वसेई ॥ या ही ते मा हनु नारिन वा इ रहे
डुर सा च सको च गसेई ॥ कृष्ण कहें विनु देषेई
हुंन के मै न प्रचै न ही ये सरसेई ॥ डी हि जुरै रस
रो सषि सी वि वि नैन मिलै सुषु पाइ हसेई ॥ ध१५
ध्रुव त्प पति का ॥ दोहा ॥ अज हुंन आये सह
जर गं विरह डूबर गाने ॥ अच ही कहा चल आई य
तल लन चलन की वात ॥ दी का ॥ यह नाइ का प्र
वत्स पति का सषी कों वचन नाइ क सौ नाइ का
कों वचन नाइ क सौ होइ ॥ कविता ॥ बेलत मे क
हुंका नू क लो लु म काल हीं जे हीं चरावन गई
सा सुनि कें उ मि ही रघ सा स परी स व अंग प
री पिय गई ॥ ता दिन के वान वेली के अंग नि
आजु हुं लौ न मि टो दुष राई ॥ लाल रहे अ न व
ले कहा अच ही चरचा चल वे की चलाई ॥ ध

विलषीऽभकौहं चषनुपियलधिगवनुव
राऽ॥ पियगहवरश्चायौं गरैराषीं गरैलगाऽ
दीका॥ यहनाऽकाप्रियतुपतिकामध्या
याकी यहदसादेषिनाऽकहूनेंगवनुवहरा
ऽकैंगरेसौलगाऽराषीसधीकौवचनसधी
सौं॥ कवित्त॥ यतिप्रांनपियाविधुरेनक
हंसुषसौरहं प्रेमपीयूषयगीयैं॥ हितुप्रां
निविदसकौहौं नविदाहरिश्चायौंप्रयांनकै
साजुकियैं॥ निरषीऽभकौहं सेनें नक्षियैं वि
लषीमृगलोचनसासलियैं॥ नकहोचलि
वकीकध्वंतियांछंतियांभरैलीनीलगाऽ
हियैं॥ ध१७॥ दांहा॥ ॥ ललनचलनसुनि
चुपुरहीवोलीश्चापुनईदि॥ राष्यौंगहिगाठै
गसैमनौंगलगलीदीदि॥ दीका॥ यहनाऽ
काप्रवत्सपतिकामधीकौवचनसधीसौं
सध्याप्रवत्सपतिका॥ कवित्त॥ प्यारीके
भवनंहितुकरिप्रांनपतिश्चायौंविदाहौंनप
रदसकौंअहिकैं॥ ललनचलनसुनिरहीं

अनवोलीतियस्यलीहूनवचनकहायोंक
क्ष्वक्षिकें॥वकितसीभईचहचौरुसोंछायो
चितुआवतुसलिलदोऊनैननसोंवहिकें॥
गलगलीडीठिकरहरिहरसनमुषमेरेजांनि
राष्योवैहीगाढोंगरेंगहिकें॥ध१॥॥
ललनचलनुसुनिपलनुमैअसुवारुलके
आइ॥भईलषाइनुसखिनहंमूढहंजमुहाइ
॥टीका॥यहनाइकाप्रवत्सपतिकास
षीकोवचनसषीसोंक्रियाविदग्धापरकी
याहोइ॥खलतिहीसजनीगनमैवृषभांनकु
पारसहपसोंसानी॥कांरुकातिकरौगे
पयातुसुनीयहकाइकेप्राननुवांनी॥आ
षिनमैअसूवांमलकेयहवातेअलीहूनजा
नी॥योंमुहमारिजभाइवकोंकरिउठमोंपो
छतिनैनसयानी॥ध१॥॥रहिहंक्व
लप्रानयेकहिकौनकीअगाट॥ललनच
लनकीचित्तधरीकलनुपलनकीआट॥॥
॥टीका॥यहनाइकाप्रोटाप्रवत्सपतिका
नाइकाकोंवचनसषीसों॥कवित्त॥मैनसुष

संगनिमें नेहकी तरंगनिमें संग संग पाग
रहरंगमें उमहिहै ॥ कसप्रानप्यारते लक्ष्मि
नांभरिपारभये प्रारहिते चसभये जैसे
वांनिगहिहै ॥ यलनकी प्रोटभये कलनल
हतकेपेड़ाजैसी गतिहोति सोहै आवति रकह
तिहै ॥ ललनविचारी अंचितचलनकी वा
तप्रवकौनकी प्रगोटये चपलप्रान रहिहै ॥
॥ धर० ॥ दोहा ॥ चाहभरीप्रतिरसभरी विर
हभरी अतिगाता कोरिसदेसे दुहुनके चले
रिलौं जात ॥ दोका ॥ यहप्रदेसकौंगवनु
दोउनके हितकी अधिकाई सखीसखीसौं क
हतिहै नाइका प्रेषितपतिका ॥ कविता ॥
कौंनहै कौंजै कौंका नहरकी नैां प्रयानमह
रतसाधिभलेई ॥ अंतरहोत दुहुनकौं जौ
अकुलातवियोगकेसूलसलेई ॥ पौदिलौं
जतदुहुनके प्रारतै प्रालीरीकोरिसदेसे
चलेई ॥ धर० ॥ दोहा ॥ ॥ मिलिचलिचलि
मिलिमिलिचलत आंगनप्रथयौंभानु ॥
भयौंमहरथभोरकौंयो अ मिलानु

॥ टीका ॥ यह प्रदेश प्रयान कौ समय सखी
सखी सौ कहति है ॥ कवित्त ॥ रमन गमन प
रद स कौ विचार चित साधि सुभल गन गने
स कौ मना यौ है ॥ साह स के उर प्रांन प्यारी
हं क क्षुन क छौ मंगल हेरे ई गहवर गरें गयौ
ह ॥ चलत मिलत मिलि चलत चलि मिलत
चलत मिलत यौ ही वासर विता यौ है ॥ भार
कौ म हूरत भवन ही में सांभ भई कौर ही में प्र
थम मिलान दहरा यौ है ॥ धर ॥ दोहा ॥ वां
मां भां मां कामिनी कहि बोलौ प्रांन स ॥ प्या
री कहत लजात नहि पाव स चलत प्रदेश ॥
टीका ॥ यह नाइ का प्रोठा प्रवत्स्यत पत्तिका
नाइ का कौ वचन नाइ क सौ ॥ कवित्त ॥ आ
यहौ मां विदाइत पाव स के घु मे उघन कार
कां मिनी भां मिनी वां म के बालु प्यारी कहें म
ति नंद दुलारे ॥ रंच क हं न लजात हियै हित
के अचये दुषदी जीयतु भार ॥ अंस मै छा
विद स चले करौ मरी क ह गति प्रांन पिया
॥ धर ॥ प्रो चित पत्तिका दोहा ॥ पिय प्रांन

दसगयौजवतैतवतैउनिनीधनकौधनुपा
ई ॥ वेषतषौटषरौटषरौटिनसूषनदेतव
हंसरसाई ॥ धरटी ॥ विरहविरह ॥

मरवेकौसाहसुककैवउविरहकीपो
रादोरतहूसमुहूससिहिसरसिजसुरभि
समीर ॥ यहा ॥ यहनाइकाप्रोषितपतिक

सषीकौवचतुसषीसौ ॥ तहिजा ॥ श्रीमन
प्रांहनसाजवतैविधुरीतवतैनपलौकल
पावति ॥ नीरविनासफरीज्यांपरीतलफै

रुभईडुभरैप्रतिनावति ॥ साहसुकैमरवे
कौसषीसुउधारिकैआननुजौनसुआवति
दोरतसासुहैसीरीसमीरसरोजनिहीपरा

सौलगावति ॥ धर ॥ वससकौ
चिदसवदनवससांचदिषावतेवासा ॥ सि
यज्यौसोधतितियतनहिलगतिज्यगदि

कीज्वाल ॥ नाइकाकेसनेह
कीप्रधिकारैहैया ॥ भय ॥ सोया
कीद ॥ घीनाइव ॥ है

जा दिन तै लप्यां नवने दुपन भावन सौं ता
 दिन तै मौं नकी मरु र निमर तहो ॥ त्रास गुर
 लोगन के सासन सकति भरिये कज्यास
 लागी निसवा सर भरतिहो ॥ वसति सकोच
 दमवदन के वस या तै कधून वसाति ध्यांनु
 यति को धरतिहो ॥ लगति को ज्वालनि में वा
 लनि जुदह के यो विरह सिया लो ॥ वह सो ध
 न करनुहे ॥ ध३१ ॥ दोहा ॥ ॥ करी विरह
 अंसी तउ गै लुन छां डत नो चु ॥ दीने हूच स
 माच धनुचा है लहै न मो चु ॥ दोहा ॥ यह ना
 इका प्रोषित पतिका सधी कौ वचन ना इक
 सौं विरहानिवदनु सधी हू सौं कहें ॥ कवित्त
 कां रुकहा कहों कंज मुषी कौं तिहार विघो
 गकीता यसना वति ॥ होत षरि डुवरी धिन
 हा धिन देषि दसान ग्र लीकल पावति ॥ ग्र
 सी करी तउ गै लुन छां डतु ग्रौं रकहा कहिये
 कहना वति ॥ दषत ग्रो
 देहं मी चुकी डीहि ॥

री उर में निहुराई ॥ ता गनि ती गन वे तरहन भ
यस भय विनुवा सुषदाई ॥ यति थि आं म
लांघां सके सां म लौं प्रां न पर तन में रहे माई
धउई ॥ लोहा ॥ ६ ॥ आइ दे आल वसन जाइ
की राति साह सुके सने हवस सषी सवे टिग
जाति ॥ टीका ॥ यह विरह निवेदु प्रोषित
पते काना इका का वचन नाइ कसां सषी स
षी हसां करे ॥ कविता ॥ लल विनुमाली वि
धुरे ते वजवाल भई निपट विहाल विधा
उर सर साति है ॥ आइ दे वसन आल जाइ
हकी राति मां ह सह सुके नहना ते सषी टि
गजाति है ॥ धउ ७ ॥ दोहा ॥ सुनत पथिक मु
हमाहनि सिलु वंचल तिगुहि गाम ॥ विनपू
छे विनुही सुने जियत विचारी वाम ॥ टीका
यहनाइ का प्रोषित पतिका विदे समे पथि
कके मुषकी वात सुनि नाइ कनें अटकर
ते पाकी दसा जानि सषी का वचन सषी
सां ॥ कविता ॥ सीत समे हकी राति मै लूहे व

लैउहिदेसहुतासनसानी॥आयुसमेंउत
 रातवटीहीअचानककानपरियहवानी
 छांडिदयेसबकाजविदेसीकीबुधितही
 घरकोअकलानी॥प्राणपियारीकीआड
 गईसुधिजीबनिहैंतियमेंयहजानी॥ध
 ३५॥दोहा॥ मारुसुमारुकरीडरीमरीम
 रिहिनमारि॥सींचगुलावघरीघरीवरीव
 रिहिनवारि॥दिका॥यहनाइकाप्राथित
 पतिका॥उद्वेगदसानाइकाकौबचनसधी
 सोरतरंगसधीसधीहूसौकहेंतौसंभवे
 कबित्त॥वालमविकलतैविकलप्रतिप्रा
 नकछूसूतनप्रानवन्वेइयहीकोदाउरी
 औरउपचारकरिमारिमारिनमरीजोंपै
 हिताहितहैंतौरुमघारकोमिलाउरी॥ध
 रिघरीसीचतिगुलावकेफूलतैकियेक
 हाचातिहैमो॥धेवताधरी॥भरितघरी
 धेमारीमारीकीडरीयैविरहागिनिवरी
 यमकेअववाहुरी

दोहा ॥ पलनुदगटिवरुनीनुवटिरहिकपो
लहराति ॥ असुवापरिद्धतियाछिनकुध
निछनाइछपिजात ॥ दोहा ॥ यहनाइकामंध
प्राषितपतिकासधीकोवचनसधीसोना
इकहूसोनिवेदनुकरैतोंसंभवे ॥ कवित्त ॥
वालनदलालाकेवियागभेविकलयातेय
त्वपस्त्रविधिकेसेवासरविहातह ॥ विरह
तताईकीवटनिचरनीनजातयेतमानत
वेवाकेकुसमसागतह ॥ पलुतेप्रगटबंध
तवरुनीनइतेपरतकपालपेतुरतठरजा
तह ॥ सलिलकीबूंदतातोछितपेंपरतिअ
संछानीपरअसुवाछनकछपिजातह ॥ धध
॥ दोहा ॥ फिरिसुधिदेसुधिद्याइप्यंइहिनि
रदईनिवास ॥ नईनईवहुरोंदईदईउसासउ
सास ॥ दोहा ॥ यहनाइकाप्राषितपतिका
याकेअवस्थासधीसधीसोकहतह ॥
कवित्त ॥ आलीवियागभयेवनमालीके
आकुलवालधरीअकुलाई ॥ पाहनकीपु

हाथ ॥ चाटी हिडारे सरहें लगी उसासन
 साथ ॥ दीका ॥ यह नायका प्रोषितपति
 का क्रसताको आधकार सधीको बचनु
 नाइकसा सधी सधी हुसं कहें तो होइस
 अवस्थानमें व्याधि स्वोस सचारी सुकमा
 रतान संभवे ॥ कविता ॥ मोहनलालति
 हार वियाग रही ॥ ब्रजनागरि चित्रकटी
 सी ॥ हाति छिनै छिन आरही रंग अनंग
 की वेदनि अंगवदीसी ॥ आवति जातिध
 सात कहाथ उसासके साक्षहिडारे व
 दीसी ॥ धातन आई इती दुवराई सधील
 घिसाव समूह मदीसी ॥ धध३ ॥ दाहा ॥
 नेक नदुरसी विरहरन हलता कुलि
 लात ॥ नित नित हाति हरी हरी षरी ना
 वरति जाति ॥ दीका ॥ यह नाइका प्रा
 षितपति कानाइकको बचनु ॥ कविता
 नेइके दुलारे न्यारे भये जवही ततवही
 तेवहताती के के छाती अकुलातिह ॥

सुधिआंश्रैधरीधरोसूलसेसलतउर
प्रांनघरेपरवसकधूनवसातिहैं।।यहनवि
रहरजदपिसनेहलतापुरसीतद्विनैक
हनकुमिलतिहैं।।दिनदिनछिनछिनउम
गअधिकहोतिहोरीहोरीधरीधरी
लरतिजातिहैं।।धधध॥दा॥॥याके
अरुप्रोरेकधूनगीचिरहकीला॥पजरी
नीरगुलावकेपीकीवातबुना॥दिल्याय
हनाइकाप्रोषितपतिकाअवस्थासधीस
धीसां कहतिहैं।।कविल।।सीदसालधि
हैं।।अकुलति कितोउपचारविचारथकी
शे॥आनननवलैनषालेविलोचनुइव
रोहोतिनछिनछिनपीरी॥कोकेहियेकधून
रंअनौषीवियोगुतासनज्वाललगीरी
नीरगुलावकेइनोवरेपियप्यारेकीवा
तहिहोतिहैंसीरी॥धधध॥दा॥॥ह
मतिसुषकरिकामनातुमहिमिलनके
लाल।।ज्वालमुषीसीजरतलविलग
अग्निनीकीज्वाल।।रीका॥यहनाइक

हाथ ॥ बाटी हिडारे सरहें लगी उमासनु
साथ ॥ ^{दीक} ॥ यह नायका प्रोषितपति
का क्रसताको आधकार सधीको बचनु
नाइक सो सधी सधी हुसं कहें तो होइस
अवस्थानमें व्याधिसो ससंबारी सुकमा
रतान संभवे ॥ ^{केजिना} ॥ मोहनलालति
हारे वियागरी ॥ ब्रजनागरि चित्रकटी
सो ॥ हाति छिनै छिन सो रींग अनंग
की वेद निश्रंगवदी सो ॥ आवति जाति छ
सात कहाथ उमासके साक्षहिडारे व
दी सो ॥ धातन आई इती दुवराई सधी ल
धिसो बसमूह मदी सो ॥ धध३ ॥ ^{दो}
नेक नमुर सो विरह फरने हलता कुलि
लात ॥ नित नित हाति हरी हरी षरी ना
लरति जाति ॥ ^{दीक} ॥ यह नाइका प्रो
षितपति काना इकको बचनु ॥ ^{कति}
नेदके दुलारे न्यारे भये जवही तेतव
तेवहताती के के छाती अकुलातिह

बुधिआं श्रेयशरीरसूलसेसलतउर
प्रांनघरेपरवसकधूनवसातिहैं। यरुनवि
रहरजदपिसनेहलनादुरसीतददिनेक
हनकुभिलातिहैं। दिनदिनछिनछिनउम
गअधिकहोतिहै। शरीरशरीरधरीधरी
लरतिजातिहै ॥ धधध ॥ दादा ॥ याके
अप्रारैकधूनगीचिरुकीलाश ॥ पजरी
नीरगुलावकेपौकीवातबुनाश ॥ य
हनाकाप्रोषितपतिकाप्रवस्थासषीस
षीसां कहतिहैं। कवित ॥ सोदसालवि
होअकुलाति किताउपचारविचारथकी
ति ॥ आनननवलैनघालैविलोचतुद्व
रोहोतिनछिनछिनपीरी ॥ काकेहियेकधून
रअनौषीवियोगुतासनज्वाललगीरी
नीरगुलावकेइनीवरैपियप्यारकीवा
तरिहोतिहैं सीरी ॥ धधध ॥ दादा ॥ ह
पतिसुषकरिकामनातुमहिमिलनके
लाल। ज्वालमुषीसीजरतलविल
अग्निनीकीज्वाल। दीका ॥ यहना

यनसवग्रगरहिअवलौधोषोभयोचल
चलो जिय संग ॥ १ ॥ यहाना इका प्रो
षितपतिकाना इका का वचन सधी सो स
धी को वचन ना इका सो ॥ प्ररुसधी सधी ह
सो कहें ते संभवे ॥ २ ॥ जौ लो प्रांन
नाथकसमी परहे तो लो अग अग स
रसाने सुषरसिके उगिके ॥ न्यारहे तपार
के वियोग विथावां दतही ना तो ॥ करिहांते
वे अगा उगये भागिके ॥ दुषकी निकई
कध्वरनीन जाई मायीये तो दुषसखों
तअरखें प्रेम पागिके ॥ ये नभ यों ही ने
रोइहां लो सा थदो नो अचचलिवो किव
सों संग प्रांन तुके लागिके ॥ ३ ॥ अतो
ने हुका गरहिये भ यों लषा इनदाकु ॥
विरह तच्यो दुष सों सुअवसें हइके सों अ
कु ॥ ४ ॥ यहना इका प्रोषितपतिका स
धी को वचन सधी सो ना इका हुको वचन स
धी सो संभवे ॥ ५ ॥ कवि ज ॥ जौ लो समी पर

हरितो ल गिमें अपनो मन भायो क
॥ का इन लखो यह मेडु न जीयको
दुपि हो सब मानु भस्यो ई ॥ न रह छतों ई
तौ हिय का गरको न हूं भांति न जानिय
स्यो ई ॥ सें हडिकें सो लिया उ अली विरहा
नतौ ॥ अब हूं उध स्यो ई ॥ सें हडिकें सो लि
अली विरहा गिनि तें ॥ अब हूं उध स्यो
॥ धप ० ॥ दोहा ॥ जस्यो जु आगि वियो
की वधो विलाचन नी रा ॥ आठो जामहि
रहै उटनो उसास समीर ॥ दीका ॥ य
अवस्था विरह की नाइकु अथ बानाइ का
अपनी अवस्था सषी सो कहें ॥ कवि त
सवही तें कठिन सनेह की लगनिय हकिनि
सुषुपायो मनु प्रेम पथु डारिके ॥ जाके तन
लागें सोई जानतु हे मेडु पर वेदु विषमको
नु सकति सखारिके ॥ कहें क विक्रम यह
अंरुद भुत गति पजस्यो ॥ गव
स्यो डगवारिके ॥

खों हरितों ल गि मंत्र पनो मनं भा यों क
 स्यां ॥ का हुन लखों यह मे दु न जी यकों
 न द्यपि हो सब मां नु भस्यो ई ॥ न ह छतों ई
 हुतों हि य का ग र कौ न हूं भांति न जां निय
 स्यां ई ॥ सैं ह डिकें सो लि या उ अ ली वि र हा
 गि न तौ अ व हूं उ ध स्यां ई ॥ सैं ह डिकें सो लि
 या उ अ ली वि र हा गि नि तैं अ व हूं उ ध स्यां
 ई ॥ ध ५ ० ॥ दो हा ॥ ज स्यां जु आ गि वि यो
 ग की व स्यां विलो च न तौ रा आ ठों जा म हि
 यो र है उ द नों उ सा स स मो रा ॥ दी का ॥ य
 ह अ व स्या वि र ह की ना इ कु अ थ तानां इ का
 अ प ध नी अ व स्या स षी सो कहें ॥ क वि त्त
 स व ही तैं कं ठि न स ने ह की ल ग निय ह कि नि
 सु षु पा यों म नु प्रे म य थु डारि कें ॥ जा के त न
 ला गें सो ई जा न तु हे मे दु य ह वे द नु वि ष म कों
 नु स क ति स ह्यारि कें ॥ कहें क वि क र म य ह
 अं अ र द भु त ग ति प ज स्यां वि
 स्यां ड ग वारि कें ॥ त उ द ष्यो ॥

षनसवंगरहिअवलौधोषोभयोचल
चलौजियसंगदिकोयहानाइकाप्रा
षितपतिकानाइकाकोवचनसपीसोस
षीकोवचननाइकसोअरुसपीसपीह
सोकरहेतेसंभवेजौलौप्रांन
नाथकसभीपरहेतौलौअंगअंगस
रमानसुपरसिकेउगिकेनारहेतपार
केवियोगविथावांटतहीनातोकरिहते
वेअगाउगयेभागिकेदुषकीनिकाई
कध्वरनीनजाईमायीयेतौदुषसह्यो
तअरखेप्रेमपागिकेपेनभयोहेते
हेइहलौसाथदोनोअवचलिवोकिवा
ह्योसंगपाननुकेलागिकेहेइहलौधते
नेइकागरहियेभयोतषाइनदाकु
विरहनयोदुषह्योसुअवसेहइकेसोअ
कुदिकेयहनाइकाप्राषितपतिकास
पीकोवचनसपीसोनाइकाहकोवचन
सोसोसंभवेकविज्ञेजौलौसमी

पकचंदनुचंदकुचंददुहृष्यानसुहाइ॥चेतरैहं
चितचेतुकीचांदनीवेधतुवांवाोननुकासक
साई॥आनिवमोअवअसौंसमोइषहेत
सवैजुहुतैसुषदाई॥धपधादोहा॥॥होहीवै
रीविरहवसकैवोरैसवणमु॥कहाजानी
यैकरतहंससिहिसीतकरनामु॥दीकाय
हनाइकाप्रोषितपतिकानाइकाकैवचनु
सपीसो॥कवित्त॥कुंभजहंअचयौसोपन्न
योानयाहीतंउरगलिजस्योतमहंइरपिदि
षकंदसो॥दोषीअवलनिकोंकलकीकेच
रायोसोसईसकहाजातिहितुकीनोमति
मंसो॥कैधोसवहीकीमतिहीनभईसै
शिआलीकैधोहोहीवोरैभईविरहकेदद
सो॥कैदषियतुपावककेविसमविसेषवेष
सीतकरुकाहेतैकरतअसचंदसो॥धप७
कवित्त॥॥अोरैभांतिमयैवयेचोंसरुचं
दनुचदु॥पतिविनुअतिअनुविपतिमार
नुमारुतमंदु॥दीका॥परनाइकाप्रोषित

तेजागतसपनवससरिसचै
सुरतिस्वामघनकीसुरतिवि
न॥दीका॥ यहनाइकाअप
तिसषीसौकहतिहेइसअ
स्मतिसेबारीजानीये॥क
हतिनिसद्योसविहातको
नपरवसपरमनकीसोव
पनेहंचितवहीरहेचितव
तिपनकी॥रसहमेंसि
हमेंकोनेहूवगरहमेंव
भूलतिसुरतिनिजतनहू
नकेसेहसुरतिस्वामघ
त॥॥॥भोयहअंसो
दुषदंत॥चेतचांहेकीचां
येत॥दीका॥ यहनाइ
काइसअवस्थानमेंउ
नसकेलें॥कलिके॥व
तीपीरतेपीरहियेनर

हलश्रावै ॥ तौं वरह सोचुल है नवलाइ ल्यों वै
प्रचकों च लियै चुपुचापें ॥ ४६४ ॥ दोहा ॥
तजत अठान न हर पस्यौं सब मति आठौं जा
मु ॥ भयौं वा मुवां वा मकौं रहतु का मवेकौं मु
दिका ॥ यह नाइ का प्रोषित पतिका विरहनि
वेदनु सषी कों वचनु नाइ कसौं सषी सषी ह
सां कहै तौं अं स भवौं ॥ कविस्त ॥ लाल मन
भां मन तिहार विहुरै तेज्वाल विहर ह अगि
नमै वरति नहु नाध है ॥ वेही कामु कामु वाम
देव के भर म भूलि दत्त्यों वाली वाम सौं विषम
वें रुबंध है ॥ सठ मति ह तिह धरि दया उर पर
हरि प्राठौं जा मु रहत सरोस सरु सांध है ॥
की जेंधौं कत हूपा उछाडतु न औं टया उत
कि हनि वेकौं दा रु लाग्यो इहि वाधि है ॥ ४६५
वा लवेलि सृषी सुषद इरुषी सुषधामु
फरि इह इही की जीये सुर ससी चिघन स्या
मु ॥ दिका ॥ यह अनुरा गति वेदनु सषी
कों वचन नाइ कसौं पुरष मीन के प्रसंग

हमें संभयें ॥ कवि ॥ हितु करि जाकों हरि लि
अंबितु लाल यह कि तहें उचितता हिये तो दु
षरी जीयें ॥ जानत हों नीकी प्रीति रतिकों
प्रवीन धनु की जैन गह सुष दे कें सुषली
जीयें ॥ रावरे डस ह हीं सुषे रुष धाम हो सों
वाल वेलि सू की जाहि निरषत नही जी
यें ॥ प्यारे धन सोम गजर नि निवार नहों
सी चिकें सुर सफे र ड ही की जीयें ॥ ध ६ ६
दो ॥ लाल तिहारे विरह की अगिनि अग्न
प अपार ॥ सरसै वरसै नी रह कर इ मि
हें नार ॥ टीका ॥ यह ना इको प्रोषित
घतिका सषी कों वचन ना इक सों विरह मि
वदतु ॥ कवि ॥ कृष्ण प्रांन प्यारे लाल विध
र तिहारे बाल अति ही विकल्पितिव कों त
र सति हैं ॥ श्री हो तिता तै उ पचार मो डे त
तो छि न कुला तिछाती पर पीर न सु
वाके तन रावरे विद्योग की अंग
अदभ्यता तिसों अपार दर

तनरावरे वियााकी अनिअंसी अरु भुतग
तिसों अपार दरसतिहैं ॥ महाहर हू तें ऊर सी
हीन परति पजरति ज्यों ज्यों नीरकी भरति व
सतिहैं ॥ ४६७ ॥ दोहा ॥ दषतिवुरे क पूरले
अपेजाइ जिनि लाल ॥ छिन छिन जाति षरीष
रीधीन छवीलीवाल ॥ दीका ॥ यहनाइका
कों अनुरागनि वेक्षु सषीकों वचननाइक सों
विरहनि वेक्षु हूं होइ ॥ कवित्त ॥ विछुरें तितं
रलाल विलषी विकलवाल परी विललाल
क्यों हूं धीरनु धरातुहें ॥ येने मोन क्रम भर
परें परजेक परनी ठिक हूं निरष्यौ परतुवा
कों गातुहें ॥ कालिही सुअजुनाही आजु
हों सुअवनाही यातें परितवनुकों जीवप्र
कुलातुहें ॥ अंसी छिनछी जनि विलाइ जि
नजाइवाल ज्यों क पूरवानी तें क हूर उहिजा
तुहें ॥ ४६८ ॥ दोहा ॥ हसिउताराहियतें
इतुमजुतिहिं दिनालाल ॥ राषतिप्रान
रज्यों वहे वहरदनीयाल ॥ दीका ॥ यह

नेवदनुसर्षीकां वचनुनाइकसौं॥ कवि
इवरीअंसीभईविधुरैतियसत्रहंमन॥
प्रोपरैसोतौं॥ आलीविलोकिकंमोऽ
हथगयोइकसाथसर्वेषुषनोतौं॥
सविसेडठिजातेछपूरलोराषतोप्या
केप्राननुकेतौं॥ जोवहलालतिलारोंद
यांघुंघुवीकोहराउरमाहनहोतौं॥ जो
कहोहरिकोइसाहरप्राननुकीइस
रहज्यालजरिवोलषैमरीवांभयोअसौ
॥ दीका॥ यहनाइकाप्रोषितपतिकास
रीकां वचनुनाइकसौं॥ कविना॥ प्यारेमन
मोहनतिहारविधुरैतेक्षभानकोकुपरि
इषरीकलेकोनहे॥ जलविनुमीनज्योवि
कलतलफतिप्रतिकहेकविक्रमअंसी
होतिप्रानिवांनिहो॥ ज्यो ज्यो करी यतु उप
चारुकीभोरत्प्योत्पेइठतिइनीपीरहे
बिनहंप्रानहो॥ विरहकीज्वालतिसौंज

जवालकोंअनंगा दुषदाग्योहैं॥ कौधरी
निपरकुभिलाइ गई फूलजिमि दुषुअ
नुकूलभौस मूलह सुषभाग्योहैं॥ तु
पजुपरायोसोमदोनौजाइ बाहिउनि
लीनौअतिहितुकरिचितुअनुराग्योहैं
करपरसतहीछिनकगयोनीरुअरगु
जावाकेउरमेंअवीरयैकैलाग्योहैं॥ ४७
॥ दोहा ॥ थाकीजतनअनेककरिजे
कनछांइतिगैल॥ करीषरीदुवरीसुल
गितेरीचाहचुरैल॥ दीका॥ यतनाइ
काकीलगनिसषीकौबचनुनाइकसो
कविन॥ रोमनिरोमनिभोइगईहिय
मैधसिप्रांननुसोअषगीहैं॥ होंकरिया
कीउपासइसवैहरिजंत्रनिमंत्रनिहंन
इगीहैं॥ देहिसुषाइकरीदुवरीइरीवाव
रीज्योसुधिवुद्धिभगीहैं॥ यतेमैवाकी
नछांइतिनगालचुरैलकैरावरीबाहल
गीहैं॥ ४७३॥ दोहा॥ पियकेध्यानगही

गहिरहीबहीकेनारि॥ आयुप्रायुहीआर
सीलपिरीकतिरिहवारि॥ दीका॥ यह
नाइकाकीलगनितअयातासषीसौव
वनुसषीकौ॥ कवित्त॥ नेहुलप्योमनभा
वनसौउमितौअंगइयैहवानिनइहै॥
ध्यानहीध्यानमेंआजुकधुब्रषभानुस
ताभईकाकूमइहै॥ आरसीमेंलेषिआप
नीमूरतिआयुहीरिदिनिहालभईहै॥ पू
नप्रेमकीजोतिजगीअरुआनिसवेंसु
धिभूलिगईहै॥ ध७ध॥ पुरिषवियोग
दाह॥ अरेपरैनकरैहियांजरेंपरपअ
र॥ लावतिघोरिगुलावसौमिसैमिलेंघ
नसार॥ दीका॥ यहनाइकाप्रोषितपतिका
नाइकाकौवचनसषीसौ॥ कवित्त॥ का
हकौतेंघनसारुगुलावमैघोरुघनैघ
सिचंदनुलावै॥ काहकौसोअरेनीरभि
गाइउसीरपधानिसमीरहुलावै॥ तोहि
कहाजक॥ अंसीपरीपजरीउरुआगिषरी

तही पाती पिय ताती की सुरत करि छाती गव
र आई प्रांघि भरि ली नी है ॥ ४८० ॥ दोहा ॥
विरह विकल विनु ही लिखी पाती दई पढाइ
प्रां कवि हनी यौ सुसुचित सूने वांच तुजा
इ ॥ ४८१ ॥ यह नाइका प्रांघित पतिका
पत्री आई पातें दोऊन की विरह की अधि
काई तै सून्य जानिये ॥ कवि रस ॥ विरह मरु
रतें प्रतन की सुधिवाल प्रतिव्याकुल प्र
चन प्रेसी रहे गइ ॥ निषवे कौ लई पाती
लिखत वने न कष्ट वैसी ये लपट प्रांन
पति ये पढे दई ॥ विकौ विकल आई कौ कहा
ला अधिकाई कहौ एक सी दुहं की गतिये
के वे रहे भई ॥ चपरी प्रवीन चह ज कुअं क
ही नीत ऊ वांचि सूने हिय कें लगाइ छाती
सां लई ॥ ४८२ ॥ दोहा ॥ चलत चलित
सां लें चलें सब सष संग ल गाइ ॥ श्री ष
मवा सरस सिर नि सिय्या मोया सब स
इ ॥ टीका ॥ यह पत्री नाइक की नाइका ॥ ४८३ ॥

कोवचनसयीसो॥कवित्त॥रैनदिनार
हतेईमिलरसरंगउमंगनमेंसनुज
शा॥प्रसोसनेहवढाईकंदधिरिकेसी
करीउहिकानुपियारो॥नेगयोसंग
लगाईसवैसुषदंगयोसाचुटरन
हियारो॥पूसकीजापिनिजठकोषोस
वसागयो॥प्रवयासहमारो॥ध२॥
उधोकोवचनु॥दोहा॥॥गोपिमथे
सुवानिभरिसदप्रसासप्रवारुं
रधारनेकरहीवगरवगरकोवाशु
वका॥यहब्रजकोविरहनिवेदनुउधो
कोवचनश्रीकृष्णकोवचनभुसयी
सो॥कवित्त॥॥श्रीजदुनाथातेहरवि
यागकेहीनपरब्रजकोजुदसाहो॥गो
पिनकेदुगयोवरसैसरसैप्रसुवानि
तैनीरप्रवाहो॥गोलगलीसवप्रिक
भूरिनदीवटिहति॥
दयतधीरज

काग्रवगाहे ॥ ध० ३ ॥ आगतपतिके ॥
॥ वासाकी यों सयानी सधिनु सो नहि
सयानवह भूलि ॥ दुरै दुराई फूलको
क्यों पिय आगम फूलि ॥ दीका ॥ यह आ
गमोत्सवनाइका सो सधीको वचनु
सहितकपोल आजु मंद सु
लकनलागे आननपै भई कधु और
रुनाईरी ॥ मैं तो वृत्त सुखमानिते क
धु रुखाई ठांनि धुं घट मैं ठां कि सुषडीठि
क्यों चुराईरी ॥ नाहि नै सयातु यनु वीस
विसभूलहे सयानी सजनी निसों क
रि जो चतुराईरी ॥ फूलको सुवासु लो
विकासु पहिले ही होतु फूलहरि आग
मकी क्यो दुरै दुराईरी ॥ ध० ३ ॥ ॥ ॥
आं यों मीत विदसतें काह कहो युकारि
सुनि हुलसी विकसीह सी दोऊ दुहुननि
हारि ॥ दीका ॥ नाइक उपपत्ति सो दोऊन
कोने हुहेताके आगमदुऊनके हर्षभयें

याहीतेपरस्परजांनिपरीसधीकौंच
नुसधीसौ॥कवित्त॥ कांहरकेविहुरे
जवालदुवामनहींमनमेंधुरनाइनी
कसकहवहराइवेकौमनुवैडिरीमि।
लिवोंपरठानी॥सौंसुमीतुविदसतै
प्रायोपुकारिकेकांहकहीजववानी
सासुनिदाउदुहुनिविलोकिलसीविल
नाहुलसीमुसकांनी॥धरुपा॥दोहा॥
मगनेनीडगकीफरकउरउछाहलन
फूल॥विनुहींपियआगमउमगप
लटनलगीडुकूल॥दिका॥ यहआग
ममिस्यत्यतिकासधीकांचनसधी
कां॥कवित्त॥ बालयरीअकुलातिहि
नेनदलालवियोगविथाउरजागी॥
सैसैआमिअचानकहीहुलसीछ
यासुघरीअनुरागी॥वांमविलोच
केफरकेमगलोच
वीगी॥फूलभई

पचारुदुकूलचुनावनलागी॥धृदृ॥१॥
मलिनदहवेरवसनमलिनविरहकेरु
प॥पियप्रागमअरेउहीप्रांननओपप्र
नृप॥दीका॥यहप्रागममिस्पत्तिका
सधीकांवचनसधीसां॥कविता॥लाल
मनभांवनकेविधुरंमयंकमुखीअतिले
विकलचितयस्यचित्ताकूपहे॥अधिक
मदनपीरतीरमीषगतिहियेबांदनील
गतिजैसेमीषमकीधूपहे॥कीनानुसि
गरुचारुवेसोयेमलिनद
लिनउहींविरहकेपहे॥
पियप्रागमसु
नयेउमगिअ
रहमेमिल
बलआवत
घरीसु॥दी
कांवचनस
दसतेप्रांन
यासिय

मनाजऊसंगिहियैभरिआइ।क्रमकह
लिवंकहकाइसौंपौरिमैंजौंलौरखौं
सुषदाइ।आवतआवतकीसुधरीवि
धिवासरहुतेषरीसरसाइ॥धर्यादोहा
कहिपहईजियभांवतीपियआवनकी
वात॥फूलैआंगनमेंफिरैआंगनआं
गसमाता॥दीका॥आगमात्सवसधी
कौवचनुसधीसोहर्षसंचारी॥कवित्र
यात्रवियोगमलीनमहाविसरीसुधि
हासविलासहभूले॥यतमेंआंधिवि
नीतभईउरयेकहीसाथसवैदुषअले
आचनुतौमनधौवनकौऊमहसुषपुंज
समूले॥आंगनमेंहुलसीफिरैसुद
रिआंगनआंगसमातनफूलाधर्य
दीका॥नाचिअचानकहीउठैविनु
भावसवनमोर॥जांनतिहौनिंदतिक
योहरदिसिनंदकिसोरादीका॥यहआ
मात्सवनाइकाको नु

को वचननाइकासां ॥ कविता ॥ राधायो
वेसासां कहति जाको रूपमाहि चारु
चेत्रपटप्रवरघते दिषायोरी ॥ जानियतु
बही चितचोरने दपूतधृतु प्राली इहिकान
नकहते आनु प्रायोरी ॥ लहली होति व
हुकालकी सुषानिवेलि फूलतु सुमनु
सां वनिछविछायोरी ॥ विनुअनहंघनभ
अहणितमननाचिमोरनु कुलाहलुम
चायोरी ॥ धरु ॥ दो ॥ वांमवाहु फरक
तमिले जो हरिजीवन मूरि ॥ तोतोहीसा
भैरिहो राषिदाहिनी इरि ॥ रोका ॥ प्रागमा
सवभुज फरकतही नाइका को वचनवा
मभुज प्रीति ॥ कविता ॥ कां हवि सासी वि
दसरवां वसिमेनु दहीव हुभातहियेह
वामभुजा फरकोतो भले प्रवले हं
वेने है चैपनकैहो ॥ कैसे हुं वामनभ
वको प्रवजो भरि प्रां चिनदषनचैह
राषिहो इरियादाहिनीवां हकोतोह

सांगाटे प्रलिंग नदंतीं ॥ धर्ष ॥ दादा ॥
विधुरे जिये सको चइ हिवालत बने नवे
न ॥ दाऊदां रिलग हियै कियै निचो ह
नेन ॥ यका ॥ यह परदे सते प्रागमुदाअ
नुके हितको बचनु सधीसां ॥ कबिल ॥
इपति प्रापुस ये कहते वलु ओट भये पलु
मान रहेना ॥ प्रायों विद सवितें वहुवास
रनें लला प्रतिबेन को अना ॥ यतीं नि
हंभ अहं नियै इहिला जतें वोलत वनें
वनेना ॥ दाऊल गलपथा इहिये पै निचो
ह किये सकुचो हं सनेना ॥ धर्ष ॥ दादा
जदपिते जरोहा लवल पल कौल गानवा
॥ तऊ ये डो धरको भयो पै डाको सहज
॥ यका ॥ यह परदे सते प्रागमुप्राग
नपतिकाना इकाको आंसुकु संचारी
॥ को नहं काजको प्राणपिया पर
ससमा वहते वितयां हं ॥ रू
॥ कवि छंद मने हीं ॥

हयों हैं। जइ पिते जतुरी नियरों घरुत्तद
पिको सहजार भयों हैं। गूड कों यें डों नका
द्यों कटें अ भिलाष समूह हियें उन यों हैं
धर्त्त ॥ जेष्ठा कनिष्ठा ॥ मिस हीं मि
स प्रातं यह सहर्द्ध प्रौरवहरा ॥ चलत
ललन मन भां वति हितन की छाह हि पा
इ ॥ टीका ॥ यह जेष्ठा कनिष्ठा कंभे ६ म
सवें संधी कें वचतु सधी सों ॥ कविता का
रु सुजान के मोपे कधूर सरी तिक भद
कहे नहीं जाती ॥ प्रात यें कों मिसु कें वत
राहर्द्ध संग मौरजि तीं वनिता ही ॥ छल
गही वत गों लभट्ट जमुना तट केलि निकुं
जजतु हीं राधिको प्यार कों लें बला सं
ग कियें अपने तन की परछां ही ॥ धर्त्त ध
का ॥ छिब के नाहन वोड द्रग करि पिच
की जल जोर ॥ रोचन रंग लाली भई वि
यसिय लोचन को रा ॥ टीका ॥ यह जेष्ठा
कनिष्ठा कनिष्ठा कों भेदु अम्य संभोग

६
विता हो इस वी कों वचन स वी सौ ल छिता
हो शी कवि चाने दल लल लना गन में
जल के लिर चीर सरी तिर लाई ॥ चूं म कले
र उध्व हु भांति डुरै भरी अंक करी तर ला
ई ॥ लोचन भां व ती के छिर के कर की पिच
की जल धार च लाई सौ तिन के लोचन
की रनु मां रुत ही भई रोचन रंग ल लाई
धृष्ट पा दोन ली ला दो शां नाज ग ही वे का
ज कत घेरि रहै धर जां हि ॥ गोर स चाहत
फिरत ही गोर स चो हत ना हि ॥ टी का ॥
यह दान ली लाना ॥ का कों वचनु मा ॥ क
सां ॥ कवि चाने ॥ ला जै क्यो न ग हे क्यो न ग
ह विनु का ज म गु धि रि रहै का हे इ तरा ड ॥
वो ले रुत अने सै हां गोर सु न चाहत ही
र स कौ चाहत ही भली भांति जां न ति
कां न तु म जै सै ही ॥ कृष्ण प्रां न
व्रज विदित ते हारे गुन मायन के
घर धर पे सै ही ॥ अ व ६

नचलावततहांसोहलपिहसतलसतम
नलेसहो॥ध६६॥जातिवर्ननुइहा॥पहु
लाहारहियेलससनकीवेदीभाल॥राष
वषतषरीषरीषरेउरोजनिवाल॥
यहजातिवरनतुनाइककोवचनुसधीसो
अथवाइकाहसोहाइ॥कवितपातरौला
कुकरारषरेकुचगारीअगठिलुनाईभ
रीह॥मेचकपातिगरैवइइगप्राहनिमै
अरुनाइधरीह॥हारहियेपहुलाकोल
संधिदुलीसनकीपधुरीकीकरीह॥रायति
षतुषरीब्रजनागरिजावनजातिधरीनि
षरीह॥ध६७॥सोहा॥रटकीधाईधोव
तीचटकीलीमुषजाति॥लसतिरसाई
केवगरजगरमगरइतिहोइति॥
यहजातिवणनुसधीनाइकाकेरूपकी
निकाईनाइकसोनिबदनुकरतिह॥
वैंगीप्रापरसव्रजनागरिसरसवेषदधिम
नमोहनकीसुधिइगरी॥कृष्णप्रानप्यारेकी

दुहाईसुहाइनेसतेंसीइइविधिनेसकेंदं
लिसोभासगरी॥६मकेंचदनजातिविदस
वरनधातीपहिरैलसतिसोतैरूपगुनअ
गरी॥कैरखेंप्रकासुअतिजगरमणरतिहि
वागररसाईकेअपारआयवगरी॥धर्द
दोहा॥जदपिनासिनाहीनहीबदनलगीज
कजाति॥तदपिभोंतहोसीभरीहोसीयें
ठहराति॥दीका॥यहजातिवर्णनुसधीको
वचनुसधीसोनाइकहूसोसंभवो॥कविन
वेंहीसिगारसजोब्रजनाहिअथानकमी
नआयोतहोहो॥पांनिगल्याप्रबलोकि
अकेलीप्रलोकि ककेलिकलाचितवा
जदपिवानवनागरिकमुषलागीअहंत
ननानननाहो॥तदपिहोसीभरीभकु
मेंवीसविसेठहरातिहोहो॥धर्ददी॥द्वे
हा॥अगथरकोहेंअधषुलदेहथकोहो
सुरतसुषितसीदधिपतिदुषितसुरभके
भार॥रीका॥ यहजातिवर्णनुग

काकीसोभासषीनाइकसांकहंसषीसषीस
कहनाइकसषीसांकहं॥कवित्त॥वालतिवै
हरैहरैरुभरीश्रुविग्राननकांपियरीह
आधेपुलप्रलीसांहेसेलाचनदहथकहं
सगरहरीहं॥गर्वकोभारधरेसुकुमारजऊ
दुषनेनवनारीषरीहं॥नीकीतऊअतिलाग
नहंमनोंकेलिकलाकुरंगभरीहं॥५००
साहरा॥ज्योकरित्यांचुंहीचलतिज्योचु
दीत्यानारि॥छविसांगतिलचलतिचातुर
कातनहरी॥दीका॥यहजातिवनेनुनाशक
कावचनसषीसांकविहकीउक्तिहइ॥क
विंन॥ज्योकरुत्यांहीचलेचुटकीउघरैभुज
मूलबडीछविभारी॥चारुकलाईकीमोरनिग्री
बकीठोरनिजीतैटरेनहिटारी॥भौहऊचेतिर
हकरिलोचनलेतिकिधौगतिरूपउजारी
पातुरमानोमनोजमहीपकीचातुरकातन
हरी॥५०१॥दोहा॥मुषउघारिष्यो लविह
नस्थेनगामिससंन॥फुरकीआटपुलक

नभये गये उधरि जुरि नैन ॥ टीका ॥ यह
 जाति वर्ण नुपरि हासस्यो कौं वचनु स
 षीसों ॥ कविना ॥ प्रांनपति आवत निर
 षिमुगलोचनि दुकूल आदं नीनो पोटि
 रहीमि सुकरिकें ॥ बाढ्यो चोपचाइरें
 टाग आइ मुषनि रथ्यो उधार भूरि हितुहि
 यें भरिकें ॥ क्रम प्रांन प्यारें के विलोक
 नमयंक मुषीसैनमै नरखों सुषनुमि
 सुमयोरिकें ॥ गान पुलिकत भये अध
 रमुलकि प्राये लोचन ललकि मिले आ
 पुते उधरिकें ॥ ५०२ ॥ दोहा ॥ नहि प्रह
 इनहि जाइ धरचित चहुं ट्यों ॥ तकि तीर ॥ पर
 सिफुर हुरी लें फिरति विहसित धमति
 ननीरालीका ॥ यह जाति वर्ण नैन ॥ टीका
 पर किया क्रिया विद्वा सषी कौं वचनु
 सषीसों ॥ कविना ॥ न्हाइवे कौं जमु
 बालत हां वनितानि की हैं अति ॥

गुरिनुअचिभरुभीतिहेउलभिवित्तैच
लाल॥रुचिसैंदुहुनडुहुनकेचूमैचा
कपोल॥येका॥ यहजातिवननडुहु
कैहितकीसरसाईसधीकोवचनस
प्रीसों॥कवित्त॥आजुभट्टब्रजनाग
नागरकोनांविलासुमहारससायों
वांठकीचापसोंचाहिचइंधोंवियाजव
काऊइतंतनजायों॥दंभरुअंतरभी
तिहुवांउतमेंअंगुरेअचिकेतिगुणयो
चारुकपोलडुहुनुकडाअनुचंवनुकै
अतिहिसुषमायों॥५०२॥सत॥हसि
आठनुविचकरुअचिकियेतिचाहनेन
अरेअरेपियकेपियालगीविरीसुष
देन॥येका॥ यहजातिवननुनाइकाकी
साभासधीसधीसोंकहतहे॥कवित्त
कारुकलेअतिहिरिनुकेतवराधिका
केजिययहआईमीवनवाइदुराईक
पोलकियेएतनेनकधूसिकाईवीरी

वनाइलईकरकेजषवैवैकांमंजुभुजा
उकसाई॥ यों हितकीसरसाईविलेकि
भईमनमोहनकेमनभाई॥ ५०८॥ इ
हा ॥ नाकमोरिनाहीककै नारें निहोर
लेइ ॥ धुवनप्रादविचप्रांगुरिनुविरो
वदनप्योदइ ॥ टीका ॥ यहजातिवर्नन
सधीकोवचनसधीसां ॥ कविता ॥ आजु
हुंकोविलासुअलीमेंदुरंदरष्योकर
तेनहीप्रावतु ॥ नंदलालअतहीहितको
ब्रषभानकुमारिकोपांनषवावतु ॥ प्राद
नुसौवियअगुलीछुमुसिकाइकैनेनसौ
नेनमिलावतु ॥ नासिकामारिकैभौंह
करैतीयनाहित्युत्यासुषुपावतु ॥ ५१०
दाहा ॥ वतरसलालचलालकीधुर
लीधरीलुकाइ ॥ सौंहकरैभौंहनुहसै
दनकहनइजाइ ॥ टीका ॥ अहनाइका
परकियाप्रादाजातिवर्ननुसधीकोवच
नसधीसां ॥ कविता ॥ आजुअलीब्रषभं

नललीमनमोहनसौरहयलिटरीहं
वातनकेचसकेसुरलीमुरलीहरिकी
द्वकाइह। ज्योञ्जोहहाकरिमंगैलला
वहत्यांत्यांकधइठलातिथरीह। देतुक
हंसुकरैमुसिभाहनुसांहरैरसभाउभरी
ह॥५११॥ दोहा॥ गदरानैतनगोरदीअंय
नप्राउलिलाराहृद्योंदेइठलाइद्रगकर
तिगमारिसुमार। योका। यहजातिवने
ननाइकाकीसोभानाइकसषीसांकरति
हो। कवित्त। सोभाकेभरतभरीरूपकेसे
सांवेटीविनुहोसिगारछविकहीनपर
तिहो। ललितलुनाईसुनेंगदरानैगात
मेंसरसतरुनाईप्रांनिभरीआंरभरति
हो। बटुरारवदनुपरअंयनकीसाहंप्राउ
तेंसीयेचिवुकगाडमनकोहरतिह॥ सह
जसुभाइठलाइकेंगमारिगारीहृद्योंद
वलाइनेनद्याइलकरतिह॥ ५१२॥ दो
हा॥ नाइकचदोसीवीकरैजितेंछवीली
छल॥ फिरिफिरिभूलिवहंगहप्योंकक

तेली गेल ॥ दीकाय हजा तिचने नुसवी को
वचन सखी सौ ॥ कविता सखि जात चलो दो
उत्तर थपथपा ॥ हने पाइ नुरंग दर ॥ वह
प्यार की रीत रिझां वनि प्यारी की मायें नको
हव घानि परे ॥ अति नाजुक छल छु वीले
तिया जितना कसको रि कसी वी करे ॥ क
विक्रम कहें इहि चाइ प्यातित जानिके
धीत मपां धरे ॥ ५३ ॥ दोहा ॥ जाल रंध्र
मग अगनु को कछु उजा सुसो पाइ ॥ पीठि
दिये जगत्यो रल्यो डीठि करु रल्यो लाइ ॥
दीका ॥ यह जाति वर्न नसखी को वचन सखी
सो कविता वाला की देह की दीपति भूरि
पूरि अष्टा छवि छु रल्यो हो ॥ जाल दरी चि न
संकटि के वटि जति नुको समुदा रल्यो हो
लालु भयो अवलो किल टुग मूरि स
घाइ विका रल्यो हो ॥ पीठि दिये सिग
गत्यो वह डीठि करु रल्यो हो
॥ ५३ ॥ दोहा ॥ दाउ चो

नललीमनमोहनसौरहयलिटरीहं
वातनकेचसकैसुरलीमुरलीहरिकी
द्वकाईहं। ज्योञ्जोहहकरिमांगेलला
वहत्यात्यांकधुइठलातिथरीहं। इनुक
हंमुकरेमुसिभाहनसोहकरेसभाइभरी
हं॥५११॥ दोहा॥ गदरानैतनगारदीअंय
नप्राइलालार। हूठनोदेइठलाइद्रगकर
तिगमारिसुमार। यीका। यहजातिवर्न
ननाइकाकीसोभाना। कसधीसो। कहति
हं। कविता। सोभाकभरतभरीरूपकेसे
सांवेटीविनुहिसिगारछविकहीनपर
तिहं। ललितलुनाईसुनेंगदरानैगात
मंसरसतरुनाईप्रांनिभरीआरभरति
हं। बटुरारबेदनुपरअंयनकीसाहंप्राइ
नेसीयेचिबुकगाइमनकोहरतिहं॥ सह
जसुभाइठलाइकेंगमारिगारीहूठनोदे
बलाइनेनधाइलकरतिहं॥ ५१२॥ दो
हा॥ नाइकचटोसीवीकरेजितेछवीली
छल॥ फिरिफिरिभूलिवहंगहप्योकक

श्रीलीला। विलयहजातिवनेदुष्टके
वचनसखीसौ। ननसखीजातचलेह
उत्तरथपंथआ। हनेपांइतरंगदरे वर
पारकीरीदरिकां वनिप्यारिकीनापनक
वधानियरे। अतिनाजुककेलछुवैले
तियाजितनाकसकोरिदेसीवैकरे। क
विक्रमकहेंइहिचाइयग्यातितजातेके
पीतमपांइधरे ॥ ५३३ ॥ दाहा ॥ जालरधु
मागप्रगनुकोकछुउजासुसोयाडा। पीठि
दियेजगत्यारखोंडीठिकुरायांलाइ ॥
दीका ॥ यहजातिवनेनसखीकोवचनसखी
सा। कविता। बालाकीदेहकीदीपतिभूरिसु
भूरिअटाछविछाइरखोंहें ॥ जालदरीचिनु
सेकेठिकेवठिजातिनुकोसमुदाइरखोंहें
लालुभयांअवलाकिलरुठगभूरिसी
पाइविकाइरखोंहें ॥ पीठिदियेसिगरज
गस्योवहरीठिकुरायांलागाइरखोंहें ॥ ५३४ ॥
चारमिहचनीदाहा ॥

कहों सुसिकाइ यह कहि प्यारी ये रुसा
ई ॥ ५१८ ॥ दोहा ॥ चिततरसुतुमिल
तनवनतुवसिपरोसके पास ॥ छातीफा
टीजातिफुनिशरीश्रोठउसास ॥ येका ॥
यहपरकीयाअनुरागुनाइककोंअथ
वानाइकाकोवचनसधीसों ॥ कवित्त ॥ न
नमि।लीजवतेतवतेप्रतियाकुलद
उरहेदिनराती ॥ वासुपरोसअंवासुत
उगुरलागनिकोमतिसोचककाली ॥
जांतरसंमिलतेनवनअभिलाषनुके
अवलीसरसाती ॥ शरीकीश्रोठउसा
ससुनेफटिटकहजारकहातिहेछाती
॥ ५१८ ॥ अदपानेदोहा ॥ दोहोंदेवालतिह
सतिप्रोठविलासप्रप्रोठ ॥ त्योत्योचल
तसुपियनयनछकयेछकीनवाठ ॥
का ॥ यहमदपानसमयसधीकोवचन
सधीसों ॥ कवित्त ॥ आजुवारीकीवारु
नीकीमेंविलाकिवहसाभामेरेनेनु

मंत्रवलोवसतिहैं॥ कहैकविक्रष्टुडर
 जागिवेकौललकतिप्रोटाकैससकल
 विलासविलसतिहैं॥॥ ज्यौज्यौवहडीद्यों
 ज्यौद्वंद्वोलनिसरसबैननागरिनवे
 लोहेरिहरिकैरसतिहैं॥ ल्यौल्यौछकि
 लियनैनछकायैअंसेपोकेनैनैनफलक
 नहंकीगतिभूलीदरसतिहैं॥५२०॥ हिसा
 हसिहसिहेरतिनवलतियमदकेमदउ
 मदाति॥ बलकिवलकिवालतिवचनल
 लकिललकिलपटाइति॥ जिक॥ अहमद
 पानकौसमयसषीकौवचनसधीसौ॥
 कृविसा॥ मोहनकेसगमधुपानकैनवे
 लोवालकरतितमासेकधूसोभासर
 सातिहैं॥ हसिहसिहेरतिवधैरति
 लककृकिरुकिपरतिनकाहूतेंस
 है॥ जोवनकेरगभरी
 वारुतीउसंग
 लकिवलकिवैनयो

ललकिललकिलालअरलपटातिहें ॥ ५३ ॥
दोहा ॥ मिलिचंदनवेदीरहीगोरमुहन
लषाड ॥ ज्योंज्यों मटलालीचटोत्पोंत्पोंउ
घरतिजाड ॥ दीका ॥ यह मटपांसमयन
यकाकीसोभानाइकुकहअथवासषी
सांकहें ॥ कविताकछूआजुलषीमटपांन
समंललनाकीप्रभाजियतंनटरे ॥ क
विक्रमकहवलकेंललकेंमनमोहनस
हसिअंकभरे ॥ दुतिचंदनकीविडुलीकी
रहीमिलिकौरलिलारनजांनिपरे ॥ अर
नाईचटमटकीमुषज्योंहीत्पोंत्पोंहीत्पों
जातिषरीउघरे ॥ ५२२ ॥ दोहा ॥ निपटल
जीलीनवलतियवहकिवारुनीसेइ
त्पोंत्पोंभीठीलगेंज्योंज्योंटीश्रोदइ ॥
दीका यह मटपांनसमोंसषीकांबचन
नाइकसांअथवासषीसां ॥ कविता ॥
लाजभरीअतिहीनवनागरिजाकी
सुधाईसुधाईकेंगाई ॥ ताहिछाकीछ
विदधिवेकांपियप्यारपुराईकेंवाह

हसितिहसिहसिमुकेमुकिमुकिकेहसति
ह॥परध॥सह॥॥रूपसुधाआसवछको
आसवपीयतवनेन॥प्यालेआठषयाव
दनरखालगाएनेन॥दीका॥यहमदपा
नसमयनाइकाकीसाभादयिनाइकुध
किरखीसासधीसधीसांकरतिहं॥क
वेत्त॥वारुनीकांवनिआयोसमांकरतेन
वनेकधुकातिगुभारं॥प्यावतिरंगुभ
रीप्रगनेनिरखीइतिकोभरिभानुउज्ज
रं॥आसवरूपसुधाकांछकोमदुपीवे
कांभूलिगयांसुधिप्यारं॥प्यालेसांजे
ठप्रियामुषनेनलगाएरखीछविकोम
तवारं॥परध॥सह॥॥षलितवचनुअ
धयुलितदगललितखदकनजाति॥
अरुनवदनछविमदनछकिषरीछवी
लीहोति॥दीका॥यहमदपानसमयना
इकाकीसाभासधीसांकरतिहं॥कवि
नेनकधुउधरसेमुदअरुवेनेनमेसि

रनिमैमैगुकेमधुग्रंधमुधुव्रतकेगन ॥ ५२९
परधरकौनूतनपथिकबलचकितचित
भागि ॥ फूलैदेषिपलासवनसमुहीसम
किइवागि ॥ यहवसंतसमयहैना
इकाकोवचननाइकसांतेइतौंप्रवत्स्यप
तिकासधीकोवचनसधीहसांतेइ
देकोरितुराजकोसमाजवनिवा
गनिमैप्रफुलितसुमनरहेहैजोतिजा
गिक ॥ कुसुमपलासकेप्रगारजानिच
कुप्रारवे ॥ चिनिसोचिपतचकारअनुरा
गिके ॥ आगतेविलाकिफूलमेंनदरचि
तऊलनूतनपथिकभूलभरमइवागि
के ॥ परीउरअलपरदसकीविसारीगंत
लाटिचलघरकोचकितचिन्नभागिके
परचाकोह ॥ ॥ वनवाटनचिकवटप
रालषिविरहिनुमनुमेंन ॥ कुहेकुहेका
कहिउठतिकरिरातेनेन ॥ दोका
यहवसंतसमयसधीकोवचननाइ

सां होइ तो मनाइ वानाइ कको वचन सधो
सां होइ तो आयनो प्रवस्था ॥ कविता ॥ मेन
महीपको मां निमतो दुमडारि चढे चहुं
आरनिटू कति ॥ देखत ही विरही जनको
करि लोचन लाल कुहां कुहें कूकता ॥ धी
सविसेवन चाटनु में बट पारव संपिक
भूलत तूकत ॥ प्रांनपती विनु क्यो पदि
वां अचदा स्परे रिपु क्यो टक चूकता ॥ पर
दाहा ॥ दिसिदि सि कुसुमित देखीयत
उपवन वियम समाजु ॥ मनो वियोगिन
कें कियो परिपंजरु रतुराजु ॥ दीका ॥ यह
वसंत समय है सधी को वचन नाइ कासे
हाइ नाइ कसां होइ तो प्रवत्सपतिका
कविता ॥ आयो है मदन हिति पालक
इक मपाइ आमल प्रव
बलायो है ॥ मानु गटितो
प्रचंड ध्यास वही के
गायो वन उपवन

यतुदिसिदिसिकुसुमसमूहविद्यायां
वरुवांधिविषमवियोगिनिकेराकिके
मानां ऋतुयजसरपेजस्वनायां ॥ ५३०
॥ होश्रांसीकंगईरीश्रांधिकेना
मु॥ इजेकरिजरीषरीवांरीवांरवांमु॥
येका॥ यहवसंतसमयनाइकाकोश्र
वस्यासधीनाइकसोंकरतिहसधीसधी
इसोंकरे॥ कवित्त॥ मोहनसोंविधुरीजव
ततवतेनलयीकलयकधरीहें॥ नैननु
नीरुटरेमिसिवासरुवाकुलवालश्रच
तधरीहें॥ श्रंसीइसापहिलेंहीइतीपुनि
श्रांभईसुधिश्रांधिरिहें ॥ ५३१॥ दोहा
करलानेयेकतवसतश्रहिमयूरमुग
वाघ॥ जगतुतपाधनुसोंकियांदीरघ
घनिदाघ॥ टीका॥ यहप्रीषमसमय
नाइकाकोवचननाइकसोंहोइतौप्रव
स्पतिपतिकासधीकोवचननाइकासों
नाइकइसोंहोइ॥ कवित्त॥ होतौवरहीन

गोषमके प्रातको भीषमुप्रतयुताक
टेकनसकतिकहुं डो लो डालेंडरिकें ॥
मघनवियप्रतरुधानैकूपकंजनिमं
छोहं विरमतिकहुंछोहप्रटकरिकें ॥
प३३॥ दोहा ॥ नाहिनयेपावकप्रवललु
वैचलतिचहुंपास ॥ मानहुं विरखसंत
कें प्रीषमलेतिउसास ॥ ~~कविता~~ यह प्री
षमसमयनाइकाप्रोषितपतिकानाड
काकोवचनसखीसो ॥ ~~कविता~~ चंडुकरम
उलतेंमंडिकेंप्रथंउधारिवरषतपायकें
प्रचंडकिधोयहरी ॥ कसप्रानप्योरकी
दुहाईधोआइवडवानलकीलुवेंताथच
लतिउपरही ॥ चंडुकरमंडलतैपावकतु
वरषतुलुवेंनचलतिजिन्हेंदेषिमतिह
री ॥ मेरेजांनिप्रोतमवसंतकोवियो
भयोप्रीषमविरहनीउसासलतित
प३४ ॥ नृथजलकेलियेहो ॥ लैचुभ
चलजातिजिततितजलकलिअध

सनि साको विवक सुतो चकई चकवा
 केवालत जांन्यो ॥ ५३६ ॥ दोह ॥ कुटं
 कापत जिं गरली करति जुवति जग
 जाइ ॥ पावस गूटन वात यह बूट नइ रग
 हाइ ॥ शिका ॥ यह वर्षी समय सधी को
 वचनु नाइ का सो मनाइ वो ॥ कवि न पाव
 स आवत तो घग पुंजनि मोद सो कूक मचा
 इइ हे ॥ चाहि भरी बहु भाइ भरी मिलि रा
 रली वनिता निवई हे ॥ काप प्रसंगु कुं गुनि
 वारि निहारि घटा उघ गइ जु नई हे ॥ गू
 टानये यह वात गु स
 रग भई हे ॥ ५३७
 धुंवां
 गत को
 यह
 नाइ

गूटनि देषिस
 धुरव
 काद
 थम

धि
 क
 नि

नर हिवोषै मसौ के म कु सु म की वा स ॥ ये का
यह वरषा समय प्रो वित पतिका ना इ का
को वचन सषी सों ॥ कवित्त ॥ जो नौ म नुर
घो हा थ तो लो न उ सा सी गा थ आ ग यो
विर ह दु य सूल त्रि का स हिवो ॥ आ यो स
षी सां व नु न आ यो म नु भां म नु री अ व त्त
उ पा इ नु कां छां डि ब्र थं व हिवो ॥ क द म कु
सु म की सु वा स कां प्र का सु भ यो षे लु हें
प्रान न का कु स ल सो र हिवो ॥ य ध ॥ व ह
तिय तर सो हे मु ह किय करि म र सो हे न ह
ध रि व र सो हे कं र हे म र व र सो हे म ह ॥ ये का
य ह व र्षी स म य हे क वी को उ क्ति अ नु स्व यं
इ तु ना इ का को व च नु ना इ क सो ॥ क वी त्त ॥ ह
रि जू पु ह मि ज ल भ र व न उ प व न च हं आ
र सो र भ क उ म गि उा र हं ॥ म ह म ही ल
ता ल ह ल हो छ वि छा इ र हो कुं जि कुं जि ष ग
कु ल को ला ह लु के र ह ॥ उ म डि धु म डि प र
तु से गु ह मि घ न सो हे म र सो हे व र सो हे मु

कुरतुर्हर्गिडा मुनिः । तिस
सुतघनवेदप्रनुगः । कः
वानः । ब्रालिनः
दकनकालिनप्रतमुदः । न
थाकीतरुनिघरथः । ७२
यःवनदेरनाडकः । ५
कीप्रसक्तिमयः । न
कवितः । सुयमः । कः । नमः
गईमां प्रहमगिद्रः । नमः
लयः । तंमईनः । नमः
कनअगमगिजाः । नमः
करवविक्रमः । नमः
लनिनः । नमः
विपनिवितारः । नमः
पाकिनप्रभानघः । नमः
५४० । नमः
दनामदुः । नमः
योमचरः । नमः

यहवर्षीसमयहिउरकोसोभासयान
इकसांकहतिहैसधीकांवचनसधीसा
...। फूलिवकोचसकोलग्नाहइनुद्य
सनुमेछाडिसवठोरउहीआरठहरातिहै
वरजोयोज्योज्योत्यांत्यांमानतिनएकन
प्राहदुकेचठतिसकुचतिनसकातिहै
पक्षअसरदरिदयेहा॥१॥ घनघराधुति
हरविचलीचहृदिसिगह॥ कियोसुवे
नांप्राइजगुसरदसूरनरनाहादिका॥ य
हसरदसमयराजनोतिप्रसंगेकविकी
उक्ति॥ कवित्त॥ घनघराधुटिगयोअधि
यारैमिठिगयोविसदप्रतापुजागमणो
छविछाइके॥ कहैकविकुहमउरहरवेनि
सचलेपथिकचहंधौभूरिभयविसर
इके॥ फुलेहियकमेल्प्रमलभयेज
नवलघटअपचलनउछहउमगाइ
के॥ सरदसुभटसूरनाहकोनिकाई
तिदवसवजगवुसुवेनोकीनांप्राइ

भवैकविकी उक्ति होइ ॥ कवित्त सिंगी से
 मुनिसिद्ध ईस से सत क्रत से के ते कीने
 विकलगने नये कहै काहिकाहि ॥ मानी
 यनु जाको नांघं डमें अघं डधाकु जीते म
 हिमं डले के अजीती साजिती क आहि ॥
 कहै कविकुष्मजिन फूल हीके आयुध
 सांके सेके सेवली भेद साह सुइती कुपा
 इ जीते जिहिती त्यां लोक अ सांवलु मन
 मथु सो अगहन नगहन देति सरचापु
 करताहि ॥ पधधा दोहा ॥ ॥ ज्यौं ज्यौं वटति
 तभां वरी त्यों त्यों वटति अनंत ॥ आकअ
 कसवलांक सुषको कसा कहें मेत ॥ १
 का ॥ यह हे मेत समय कविकी उक्ति मु
 ष्ये हें संयोग अंगार में वने विप्रलंभ म
 का कको प्रसंग अन्मक्ति ह जानिये ॥ क
 वित्त ॥ हिम क्रतु आइ भई सात सरस
 ईदेषि भाज गइ गर म उराज अचल न
 मं ॥ वासर की लघुता विलाकि मुरफात
 का कसूछ म के र ह्यो लेनु तपन के कन

मं॥ कहें कविक्रम ज्यों ज्यों रजनीवद
तिसौ त्यों उमगति मादु अनुरागिनुके
मनमें ॥ ओक प्राकलोकलोकवाह
तुप्रपारसुषसोकहें वियो जीके कि
कोकनुके गममें ॥ पद्य ७ ॥ दाहा ॥ मि
लिविहरत विधुरत मरतदपतिप्र
तिरसलीन ॥ नूतनविधिहंमंतसबु
जवेजुराफाकीन ॥ दीका ॥ यहहंमंतस
मयसषीको वचननाइकासोहोइतौ
मानवतीप्ररुकविहूकी उक्तिहाइ ॥ क
बित्त ॥ दोऊयके देखीयें दुहंनवीच
एके प्रांनहितकी उमंगनई नईयें गह
सहें ॥ अतरसलीन दोऊमिलें हीं विहा
रकरें कहें कविक्रमचितप्रति उमहत
ह ॥ विधुरनिमेषहूतौ जीवको भरोसा
नाहि प्रतिअकुलाइमंन वियांनसहन
हा ॥ औरयके देखाहि मरितुकी नवलरी
तिजगतमें सवहीजुराफाके रहतहो ॥ पद्य ८

॥ अथ निरुद्धवर्तनं ॥ शिवः ॥ श्रावतुजा
 तनजा निरयतु तेजहितजिसियरान ॥ घ
 रहिजमाईलौघठौषरोपूसदिनमान
 केका ॥ यहसिसिररितुसमयदाऊनक
 हितकीअधिकईहैसुरात्रहीअछील
 गतिहैसुसर्षादिनकीलघुताकहतिहै
 विरहतादिनकीनिशकरे ॥ कवितावांभ
 नद्राकेंविभादरोवृत्तिज्याहीत्याहीत्या
 ईत्यां वियोगिनिकैरहियो प्रकुलातुहै ॥
 दंपतिउमगिअनुरागउकिलतउरयह
 रहतुमिलिदुहुनुकोगातुहै ॥ पूसकादि
 वसुधूलघुमांतुभयोअसंजसंससुर
 कधरमंजमाईसकुचातुहै ॥ तजकोन
 लसुरखासीतलसुभावगह्योजानत
 नकोऊकवप्रायोंकवजातुहै ॥ ५४८
 दोला ॥ रहिनसकीसबजगतमेंससि
 रसीतकेवास ॥ गरमभाजिगठवैभ
 इतियकुचअचलमवास ॥ कविते ॥

हं सुकारि ऊपाइ करों कि निकाऊ ॥ जौल
गिपी ऊपिया सबु काइ रहै लपटाइ न एक
हं दाऊ ॥ ५५ ॥ ॥ ॥ लगति सुभगस
तलकिरति नि सिद्धि न मुष म्रवगाहि ॥ मा
हससी भ्रमसूरत्योरहति चकोरी चारि ॥
॥ टीका ॥ यहससिरसी तु कविकी उक्ति मु
ष्यहं ॥ कवित ॥ ससिरमसी तनें करीह
रीति ग्राहिधों महुं मै चांदनी कचें न उ
महतहं ॥ संपुटसराज गह कुमुदविका
सचह मिलन इकत को त विरह दहतह
सीरीसीरी सुभगवकिरन लगत गान
गतिके विलास सबघौ सही लहतह
ससीक उटे को सुषुमां नि सविता की
आरचौ पसौ वकार चितवत ही रहत
हं ॥ ५५ ॥ ॥ फागुवर्तन ॥ ॥ ॥ दियो जु
पियल पिच यनु मषेलत फागुषिया लु
वाहत हं म्रति पीर सुन कठनुतवनत गु
लात ॥ टीका ॥ यह ही येलके समय

देसी मारि गई है ॥ ५५६ ॥ दोहा ॥ ज्यो ज्यो
पट रुट कति हसति हटति न चावति नैन
स्यो स्यो निपट उदार हु फगुवा इत वने न
॥ दोहा ॥ यहनाइ का प्रोटा हो शिषल को
समाजुनाइ कु सो भा देखि व को लो भल
॥ दोहा ॥ सो सवी सवी सो कहें ॥ कविने ॥
फागुनिषल को समाजु वाने आयोज
से जे संय कर सना सो कहत वने नर
सो करी गली में नदलाल को पक गिव
लमन भाय करत वटा वंचित वने न
ज्यो ज्यो नवहाइ भरी लोचन नबाइ प
रुट किक कहति हसि हसि प्रडुवे नरे ॥
सो चितु लालनु को निपट उदार त
फगुवा को देवौ तउ मानत मने न
॥ ५५५ ॥ ॥ छुटत मुठिनु संग
दे लोक लाज कुल चाल ॥ लगत
के वर ही चल चितुने न गुलाल
यह शिषल को समय सवी र

कहति है ॥ होरी कों समाजु वरसां नै देव
गराजु कहा कहों ॥ आलो वनि श्यायों
नी कों य्या लरी ॥ इत जु वतोग नमै राधि
का कि सोरी तऊ सहित सषां निवयों
मदन गुया लरी ॥ छूटत मुठी के संगे
रत है कै यों वर गुरजन लोके लाजु
ज कुल चालरी ॥ कहें कवि कुसुम त्यों
लागत है हकत नये कै साथ वी वंत ले
वन गुलालरी ॥ पपध ॥ दोहा ॥ ज्यों ज्यों
किरापति वदनु विहसति प्रति सतर
स्यों स्यों गुलाल मुठी मुठी न मलावतु प्यो
जाश ॥ टीका ॥ यह होरी खेलनाइ काकी
वस्था देखिनाइ कुरी स्यों है हनुना
क्तिकरतु है सो सखी सर्व
कविता ॥ आजु वजु देव्यों
माजु वह सोभा मरने
रिका राधा वनमाल
आली सखी मधवा

तागकें ॥ ज्यों ज्यों प्यार मुकि मुकि तांपति
बदन विहसति सतराति रिसकों सों रुषु
करिकें ॥ त्यों त्यों देखि रुक्यों रुक्यों क्रम प्रा
न प्यार लाल निरुकावति गुलाल मुठी
मुठी भरिकें ॥ ५५ ॥ दोहा ॥ रस भिजये
दाऊ डु डुनु प्रति रिकर हटरे न ॥ छवि सों
छिरकत प्रेम राग भरि प्रेम राग भरि पिय
काशे नैन ॥ दोहा ॥ यह दोऊ नुका पर स्या
वनुलाक नुहें सुसयी सखी सौ हीरी के
खकी समता देके कहत हैं ॥ कवि ज्ञान ॥ श्री
वृषभान की कुमारी मन मोहन नैन ननु
ध्या हीरी के सौ ध्या लुकरिकें ॥ भरि हित न
काऊ चूकत न द्य इटिकर हट कला
अजातु न ही टरिकें ॥ भिजये वना
रसमें पर सपर फा गुमनुराग के
राग ठरिकें ॥ क्रम कहें छिरकत छ
वील दोऊ नैन पिय काई करि प्र
रिकें ॥ ५५ ॥ दोहा ॥ गिरकें पव

हैं करुपसी जल पटाइ। लियों गुलाल
मूठी भरी शुरुत छुठी जाइ। दीका। यह
शेबल का सम संधी सा कहति हैं दाऊनु
कै सात्विक भाउकें पुहें। कविज्ञा। मेरांक
धामां निरी उतें लें चलि दृष्टि नैक आजु व
जधूमहारीषल की प्रनूठी हैं। के सरि में
सनैरसिक रसी ले जहां वंश घात हों हीस
वसुधनु को लूटि दृष्टी हैं। जइ पिषर सप
रदाऊ मुषमां रिके को लेत प्रतिचाइ सां
गुलाल भर मूठी हैं। कछु कर पंकज प
सी जल पटात कछु को पैंगिर जातू तातें
बालें होति मूठी हैं। पपटी। वा युव ननं ।
दाहा। रहीरुकी कैं। दू सुचलि आधिकरा
तिपधारि। हरति ता पुसवद्यो सकौ ल
गिलगि उरहि विचारि। दीका। यह वायु
बर्नन कविकी उक्ति। कविज्ञा। श्री रही
रुकि कैं। इ प्रावनन पावनन पाई जाव
विनु मिलें प्रांननु की गति अकु लाती

नाचनचकितजाकों, प्रागमविलाकिव
कांचहं, प्रारचितवतछाती, होतितातीह
कांचहं, कांचहं, कांचलिके, प्रचानकहं, प्राधि
राति, प्राशगई, वारिजां, वयारि, प्राइ, जाती
हरतिनपति, सबघासकी, हियेसौ, लाहि,
कहं, कविक्रम, सुषसरसातीह ॥ ५६० ॥
यह ॥ बुवनखेद, मकरंद, कनतरु, तरुवि
रमाइ ॥ प्रावतु, दक्षिनतते, लपेथ, को, वय
होवाइ ॥ शोक ॥ यपवनवनेन, कविकी
क्ति ॥ कवित्त ॥ निरुतजात, जलजंत्रि
कषिमल, गत, मलिल, परसतु, श्रे, सीट
सांठरं, ठरं ॥ क्रम, कहं, जहोत, हा, सी, शि, छ
दषिकार, विरह, तु, विरही, तरु, रुके, त
रं ॥ सुमनु, परा, गजु, ग, पा, गिर, ह्यो, अंग
खेद, कन, वृ, मकरंद, कधरं, धरं ॥ सुर
मूह, छा, कांच, दक्षिन, दिसा, त, वायु, था, क
वटा, ही, च, ल्ये, प्राव, तु, हरं ॥ ५६१ ॥
हा ॥ विक, सत, नव, मध्वी, कु, सु, मनि

रिपलपाशापरलिसडारनादिरसोहअवः
सिरहेकीवाडा।।टीका।।असुप्रगतपुन
विरहकेप्रसंगमेंसहीगाइजाओवरे।।
कवित्त।।मंजुलतावैलुनुके।।सपुन।।निस
जनितहरेहरेनिकसनिक।।सपुन।।हो।।
है।।सुमनकदंबनिम्बुप्रद।।परा।।राम
जाहिमिलिभौरनुके।।सो।।दर।।न।।पुन।।

केसवदप्रघंरतेईसुनीयतहं गुंजतुअनेदभल
प्रलिनकीब्रंरहं॥सुमनसमूरनुकीधूरसौ
धुरेदोंगातमदजलउमगिहरतुमकरंडुहं
रंगरंगफलनुकीफूलमेंरुपायैतनुजगत
विदितयावैयं विक्रमअमंडुहं॥मानतरुने
रवकौआवतुगुमानभस्त्रामंदगतिपवन
मनोजकौगयेदुहं॥५६५॥चंद्रोदयहोश
दंजसुधादीधतुकलावहलषिरीठिलगा
मनोअगासअगस्तीयायेकंकलीलषा
श॥येका॥ यहचंद्रोदयवर्नतुसषीकौ
बचनुनाइकासोअगस्तियाकेतरुनेसंके
तुअस्थालमूंनतुदंजतेमिलिवकीअधि
सूचनुसाधारनतैकविकीउक्ति॥कवित
देषिउतैदुत्तीयाकेमयंककीकैसीकला
तपजोतिजगीहै॥सौछविचाहचकारि
बेकीअवलीदुलसीहियमोदपगीहै॥
निरषीअरुनाईलिये
अरमेंउमगीहै॥मान

कसौ मे रहदे मैं वसौ ॥ कविता ॥ छवि सौं
 प्रवि सौ सकिरी टव न्यौं रुविसाल हियें
 वनमाल लसौं ॥ करकंजहि मंजु रनी
 मुरली कछनी कटि चारु प्रभावर सौं ॥
 कृष्ण कहै लखि सुंदर मूरतियौं अभि
 नाष हियें सरसौं ॥ यह नंद कि सोर विहा
 र सदा इहि धानिक मो हिय मां रुवसे
 पद चा दोहा ॥ मोर मुकटकी चंद्र कनि
 यौं राजतन नंद ॥ मनुससि सेषर की
 प्रकस कियौं सषर सत चंद्र ॥ दीका यह
 श्री कृष्ण जूके मुकटकी सोभा सर्षी को
 वचनु नाइका सौं ॥ प्ररुभक्त हूकौं संभवं
 कविता ॥ आजु लष्यां वजराज कुमारु
 सुदससि गारु वने सगर है ॥ रूप कीरी
 रुकहीन परै भ्रव लोकि विलोचन
 भरै है ॥ कृष्ण कहै सिर सोहन
 देखे छवि पुंज भरै है ॥
 मंसि सष ससौं हरि से

करहे ॥ १ ॥ मकराकृत गोपालके कुंडल
साहत कान ॥ पयोध स्यां हिय धर समर
खोंटी लसत निसान ॥ टीका ॥ यह श्रीक
मज्जको ध्यानुहं अरुतरुनाई आई हृद
में कंदर्प प्रवेश भयो यै प्रयोजन ॥ कति
मै निरष्यां वृज राज लला इतियुंज
हिये हित साजरह ॥ कसक हृद गदीर
घदषि प्रभात के पेक जला जिरह ॥ मं
जुल कानन में मकराकृत कुंडलयो ध्वि
छाजरह ॥ मानों मनोजध स्यां हिय म
दिरद्वार निसान विराजरह ॥ ५७० ॥
साहत प्रोह पीतपटु स्यामसलाने
गात ॥ मनो नीलमनिसे लपर आतपु
पस्यो प्रभात ॥ टीका ॥ यह पीतांबर की
साभाना इकाको वचनु सवीसों सवीको
वचनना इकासों भक्त हूको वचनु ॥ क
दिलत निजा छवि सों हरिने ननु में प्रहं प्रा
ननु में अवरोहनुहं ॥ समता कहता छ

बिको कहीयें सुविधौ तिहूँ लोकमें कोरतु
 हैं। सवि सुंदर स्यां मकलवर पै पशुपीतुन
 संमन मोह तु है। मनिनी लक्ष्म लक उ
 परमानां प्रभात को प्रातष सोह तु है। पशु
 भात को वचन उ पाले भ। शोभा ॥ कव
 कौंटे रत दीन रट हा तन स्या मस हां ड। तु य
 हला गी भूगत गुरु जगना इक जुग वा ३।
 शिका ॥ यह भक्ति कौं वचनु भगवाने सां
 कविता ॥ हां कव कौं रट ला डे स्वैं ग र्थिन
 सुभा इम नौं वच का इका नें दे के नें टकं ग
 वत हां हरिका हेते हां तन स्या मस हां ड
 यतौ विलंबु क स्यां करुना मय क्रम कर
 म भु हां स वु ला इका ज्ञानि पयं नु मं डं शं
 कं भ्रव व्या रिल गो जगना जगना शं क
 ५७ शा यो हा ॥ श्री जी टु डं न न क र्ण नै को
 की परी गुरु ति त ज्ञां न नै न न नै व र
 वार क वा म न न न नै नै नै नै नै
 वचन भगवाने नै नै नै नै

संकटनिवारनकोसावधानकहततिहार
वेदविरहपुकारिके ॥ कहेकविक्रमत्य
होदेवीयेपरतिसाधिदीननिकेदीनेह
नकदुषयारिके ॥ आनाकानीनीकीकरी
मरीरटफीकीकरीलागनगुहारिरहनिष्ठ
गईधारिके ॥ जानीयतुतारिवेकोप्रमुत्र
बछोआंतुमजसुनीत्यायेकवरवारुनिको
तारिके ॥ ५७३ ॥ दोहा ॥ बंधुभयकादीन
केकोतास्योस्थुराड ॥ तूढतूढफिरतहोइ
ठविरदकहाड ॥ दीका ॥ यहभक्तकोव
चनभगवानसो ॥ कदिताकोनसदीनपे
कीनीदयाअपराधीकहातुमकोनउध
स्यो ॥ कोनअनाथकेबंधुमयप्रभुकावि
नुहासुभयोतुमतास्यो ॥ असईकेसंप्र
तीनिकरोकविक्रमकाहोपुकारिकेहा
स्यो ॥ तूढईतूढनिसोकफिरांप्रभुमूढ
हीधाकुअनाहकयास्यो ॥ ५७४ ॥ दोहा ॥
थारेइगुनरीमतेविसराइवहुवांनितुमहं

कानमनोभयत्राजकालकेदोनि ॥१॥
 यहभक्तको स्वचनभगवान् ॥२॥
 केअतिसारतमें विनतीरुधुभानिकग
 करुनारसभीनी ॥ अस्मकपाणिशुभव
 केबंधुसुनीअसुनीतुमझाहनदीना ॥
 शीतरंगकरीगुनतैवरुवानिदिषा ॥
 मनोतुमदीनी ॥ आनिपेगंनुय ॥ ३ ॥
 कलिकालकेदोतदिक ॥ ४ ॥
 दाहा ॥ मोरुतुमदोदोदोदोदोदोदो
 उराज ॥ अपनेदोदोदोदोदोदोदोदो
 हनलाज ॥ ५ ॥
 गवानय ॥ ६ ॥
 मोतन ॥ ७ ॥
 उदुसरे ॥ ८ ॥
 धमरुध ॥ ९ ॥
 अवरुध ॥ १० ॥
 विरटकर ॥ ११ ॥
 विमदि ॥ १२ ॥

वह सवारी को नुल बिजाइ प्रवजीत को न
दषिय ॥ ५७६ ॥ दोहा ॥ ज्यों कहें त्यों स्ये
उगा हो हरि प्रपनी चाल ॥ हाइन करों प्र
निकठिन ह मात्तारि वों गुपाल ॥ दीक्षा ॥
यह भक्त को वचन प्रपना पाप करि व
पनु भगवान को उधारि व को उधारि व
पनु उपावल सों प्रगट कर नु हो ॥ कवि न ह
उनकी गनती में न ह ॥ प्रभु जनु मत्तार त
प्रापनी गौ ही ॥ कस कह गनते न वने क
धुपायी नु की परमावधि हो ही ॥ हो नी ह ज
कधु ही नी वह गति मरो ये चाल कुचाल
निसो ही ॥ षल नु ह प्रभु करों उधारि वों
भूलिन की जे व्रथां स्रह यो ही ॥ ५७७ ॥ दो
हा ॥ को न भांति रहि हे विर दुःप्रवदषि
वी मुरारि ॥ वीधे मो सों प्रांनिकें गीधे
गीधें तारि ॥ दीक्षा ॥ यह भक्ति को वच
न भगवान सों यह दीन उधारन विरु
हें सुनिश्चै जानिक रह नु ह ॥ कविता यति

उद्वारन कहतु सुनु को उसा उसांच मूठ
ववहरा इगो बना इके। कहें कविक्रम
जन और के भर मभूलो हो तो हांगरुव
पापी मन वच को के। ताखो हे पषरूपे
कुगी धुता तेंगी। धतु मसा इज सुराखो
हं जगत वगरा इके। कौन भांति राखि हे
विरडु प्रभु देखियें जू कहिन वनी हे अचवो
धमो सें आ इके ॥ पछटा दोहा ॥ मोह
देजे मोषु ॥ ज्यो अनक अधम न दीयो ॥
जो बांधें होतो या तो बांधो अपन गुन नि
रीका ॥ यह भक्त को वचन भागवत सौ
कि मुक्ति करों तो बांधि राखो तो अपनो क
रे राखो ॥ कवित्त ॥ भांति भांति आरति
की आरति निवारत हो प्रगट्युकार तनि
गमगत सखियें ॥ तातें कविक्रम दीन
बंधु दया सिंधु जसा वारवार विनती
पुकारिये हे भावियें ॥ अधम अनक
नि को ज्यो ही दीनो मोषु तु मत्तो ही मोह

माषुदीवौचितप्रभिलाषिये ॥ वांधिवे
जां पै मन मानां महाराज तो जु प्रायने
गुननुवना इवांधिराषिये ॥ ५७ टी ॥ दो
निज करनी सकुचेहिकत सकुचावत
इहिंचाल ॥ मोइसेनित विमुषत्यों सन
षरहिगोपाल ॥ दो ॥ टी ॥ यर भक्ति कौ
चन प्रपनी विमुषता भगवान कौ भ
निसां सन मुषरहि वे कौ पनु प्रगटक
तुहे ॥ कविल ॥ जां नि परे नति हां रो प्र
गति भद हुनी कै कै भदन पावत ॥ संगि
रे बुज गाल निके मुनि पावे न ध्यान समा
धिल गावत ॥ येक तो है प्रपनी करतूति
मुही सकुच्यों व हुस्यां सकुचावत ॥ होतु म
सां नित ही वि मुषे मु मदीन दयाल सन
मुष आवत ॥ ५८ ॥ दो ॥ प्रापदी कौ सभों वा ॥
भाह गर जिना हर गर जिवा लु सुना यो
धरि ॥ फ सी फां ज मं वं दि वि च ह सी सब तु
त न हरि ॥ टीका ॥ यर दोपदी कौ समय

कविकी उक्ति साधारन तैयामीन प्रसंग
में वंदि मैं है पै प्रपनै पतिके विक्रम को
भरो सां जा निहसी है ॥ कवित्त ॥ आयु
ध अघट साजें सुघटनु की भीर भारी च
खों और विकट लीयें ई जात घरिकें ॥
भाहर की गरज गरसौ गरजित ताहि
सम पाछें ते सुनायों बोलुट रिकें ॥ वाक
प्रति विक्रम को भाउ जिय जान्यों यह
जीतें गौ समर येक येक को निवे रिकें
प्रबल चमू के वीच मूके वीच में दि मैं
फ सी हंत उ म गि उछाह ह सी सवनु त
नहरिकें ॥ ५२ ॥ अत्यन्तिका दोहा ॥ नहिया
वसरितुराज यह तजित रवर मति भूल
अपत भयों क्यो पाइ हें क्यो नवदल फ
ल फूल ॥ टीका ॥ यह अत्यन्तिका हृद
ता के धोष सू मपं कधू को ऊचाहें ॥ तहो
कहीयें नगर के प्रसंग में गठ के प्रसंग
इमें संभवे ॥ कवित्त ॥ मघ वाके जल से

उमगि अधिकानो बहुपछिनुको राघ्यात
वसाइ समुदाइहं छोडिचितभूलवाम
रासंमतिभूलप्रववेसोतौवनकनीदि
वनिआइहं पावसनजांनिरितुराजक
समानुग्रहयोहीकेसंहरितभरिततंछ
विष्ठाइहं सुनितरवरज्योलेकेंहनप्रष
तुत्त्वनोंतौनवदलफूलसंपत्तिनपा
इहं॥५२॥दो॥ कोधूयोंइहिजालप
रिक्तकुलोगप्रकुलाइ॥ज्यो ज्यो सुरा
भज्यो चहतुज्योत्वांउररुतुजातु॥येक
यहप्रमोक्तिसिसारजालप्रथवाप्रम
जालकेबंधनमेकहीये॥कवित॥तवतो
नजात्यैलगिलासचलुभ्यांनैचितप्र
परवसपरिकोहपछितातुहं॥कहेंक
कुसयाकेबंधनकीयहीरितिनेकप्र
तत्रोगप्रगवधिजातुहं॥दष्यातैप
काऊधूयोंइहिजालपरिकोहकोत
रकुलोगप्रकुलातुहं ज्यो ज्यो ही सुर

भज्यो चरतु सयां न करित्यो हीं त्यो बरो
 इषरो उरतु जा तुहं ॥ ५७३ ॥ दोहा ॥
 इह दही मोती सुगुथित नथ ग विनि सां
 क ॥ जिहि पहिरें जग दग प्र सति ल स
 तित सति सी ना क ॥ दी का ॥ यह अन्यो
 क्ति थोर ह सध न सौ अथ वा गुन सौ
 अधिक सौ हंत हो इत हां क हि यें ॥ कपित्त
 सुर नि समे त ना क या ही सौ कहत स व
 मुक्ति जु ति मु क ति पुरी सो दूर सति है ॥
 कहै क वि कृष्ण मं न मोहन को मोहि व
 को मोहि नो की सिद्धि मानै सौ भार सति
 है ॥ तोहि पहरे ते जग नथ न प्र सति प्र
 ति छ विवर ॥ म ॥ ॥ यह सति
 ॥ अहेन थ उर मं नि
 दही मु क ता के
 ५७४ ॥ दोहा ॥

प्राहर सु

हप्रमोक्तिको अशुद्ध कुलते मयों ल
घुमानसुप्रसवडी प्रारजा इ प हं च्य
हा इत हां कहीयें ॥ कवित्त ॥ कोन विना
नुकरें कुलजाति कों जीवन प्रापनों
जगमें गनि ॥ हे सब ते वड भागो तुही अ
प्राई तेरी ह्ये वात भली बनि ॥ ते ही ल
द्यो कत पूरे व कों फलु हे तु ही वे सरि
मुकता लनि ॥ द्यो सजि सां तिय को अ
रा मनुनी कें नि सां क हें पी वा करे कि
धरप ॥ दोहा ॥ पाइत सनिकुच उच्चप
श्चिर मिठि ग्यां सवु गां ऊं ॥ धुटे हीं रा
हं वरें जु हीं मालुद्ध विनां ऊं ॥ दीक्षा य
मोक्तिलघुमानसको अवेड ठिकानें प
चों त हां कहीयें ॥ कवित्त ॥ ॥ सुद्धिम मे
लुषरौ लघुना मुभई उत पाति न उत म
यां नों ॥ कोन हूं भागिल द्यो घुघुची न वना
गरिक कुच उच्च ठिकानों ॥ या ही ते मा
सवे जगको मनु तो रि गु मान य रों अ

प्रकाशों ॥ ठोर छुट र हिजे हैं वही मुख का
ले मारंग वजार विकानों ॥ ५२६ ॥ दोहा
नहि परा गुन हि मधुर मधुन हि विकासु
इह काल ॥ प्रलोक ली ही सौं वध्यां प्रा
गै कौन हवाल ॥ शिका ॥ यह प्रत्येक्ति
नाइ का के तन में प्रवही जो वनु प्रायें
नाही नाइ ककी प्रासक्ति यह लै देषी सुस
धी सधी सौं कहति है ॥ कवित्त ॥ नहि परा
गुन हीं मकरंद प्रज्यो प्रगद्ये न सुवासु वि
का सरा ज्ञानै को प्रागै धौं कैं है कता गति
असौं यग्यां प्रवही इक प्रासर ॥ फुली
घनो फुल वार र साल ये का हुं कौनै कतु
मानत ता सरा ॥ शि फुरली मति कंज कली
ये प्रली मड रा नौर है नि सवा सर ॥ ५२७ ॥
दोहा ॥ मोर चंद्र का स्या
रत गुमानु ॥ लखिवी
नेयतुरा धामां भु ।
का उलघमान

ताकों मान भंग होत जा नीयें तहो कहे
ये ॥ कवित्त ॥ घनस्यां मनः प्रापने सो स
ये राषिये नाइ के चाइ के चाइ नुसांधरी
हो ॥ जिनि याको तू ॥ जीमे गुमान कर
वतो सब जो मल धी परि है ॥ कहिकार
को मारिकी चंद्रिका ॥ सो डिठई के दार
हो हरि है ॥ ब्रष भांन कुमार के मान समेत
खान तरै लुटि वों करि है ॥ पर्या दोहा ॥
जिनि दिन देखे कसम ठाई जु वीति वत
र ॥ प्रवश्य लि रही गुलाव म प्रपत क
ये लीजर ॥ दीका ॥ यह प्रन्याक्ति धनवान
निर्धन भयो तहां धन के लोभी जा जाय
कनको कहि वों भुमर के प्रसंग के गत ये
वनहं को कहि वों संभवे ॥ कवित्त ॥ जष
तउ दितरितुराज को प्रतो पुके ये कते कवि
कस जाको विक्रम प्रति प्रपारा तव
निवाटिका निदा ये ह सुष दुष सरस कु
समभरे प्रतुल सुगंध भारे ॥ उही प्रास

लाम्पो इत आ वतु च ल्यां क्यो अलितो व
 हवितो त भई सौ सर उ ही व हार ॥ गंध भ
 त सु दु ता परं रा य ग कौ न ले सुर ह्यो अ व
 रही अ प त्त गु ला क की क टी लो ग र ॥ प च्छ
 दा हा ॥ व हा कौ व र्ण ई प्रा प नी क त् च्चा तु र
 म ति भू ल ॥ वि नु म धु म धु क र कं ति थं
 म डु र्ण गु ड ह र कं फ ल ॥ लि कौ पि ह र्ण थ्या ति
 कौ उ गु न ही न ह र्ण र्ण र्ण वु अ धि क र्ण र्ण
 हे ता सौ गु ड ह र क फ ल कौ प्र स र्ण क र
 सं भ व ॥ क वि त्त ॥ क हा भ यौ जौ पं पा या
 स ह ज अ रु न रं गु उ म र्ण ल लिन धी व र
 हा त न छ्वा इ ह ॥ व हि कि व ह कि नि त्त्रा
 प नी व र्ण ई म त् का हे कौ र्ण नु ग र्ण
 या न पा ई ॥ जो हि र स न ॥ क नु र्ण
 कौ ल ग्पो
 ना प म ड र
 र्ण फ ल
 लि ह

क्रतुनश्रमवृथां दृषि विहंगविचारिवा
जपरायेपांनिपरतं पंछीहिनमारि^{दीका}
यहप्रन्याक्तिकोउपराइषुसामदिकर
अपनेकोवुरांकरंतहांकहीये॥कविता॥
कहिकेपांवुरानेवुरकरतपरायेकाज
असौषाढकरमुविचारतहेंकाहको॥
यतोअमुनाहकसरीरकोतुंदतुअरु
हाऊलोकअपनेविगारतुहेंकाहको
यामेंकधसुकृतनस्वारथनसममिद
षिपातककोभारुसिरधरतुहेंकाहको
कहाभयोंजोपैअनिथारोईपरायो
पांनिवाजनिजुपछिनित्तमारतुहेंकाह
को॥ पट्ट१॥ दोहा॥ जनमुजलाधिप
निपुविमलुभोजगअगअपार॥ र
हंगुनीरुंगरुपस्याभलोनमुकताहा
रादीका॥ यहप्रन्याक्तिकोऊसुपात्र
हंभलीठोररहिवेलाइकअोरछोटीह
अनंदसौरहेंतहांकहीये॥कविता॥

जनमुजलधिकुलपांनिपुविमन्नप्रति
तेरीशुभसोभाजगत्सुगतिमुहाईहं॥
सवकोऊजगतमेंचौंपकरनाहिनंकी
करिवेसकिंमत्तिजवाहरमेंपाईहं॥न
रोसंगुयाइहितिपालुआंस्वालनिकी
कैसीनीकीदेवियतिरुपकोनिकाईहं॥
सोसांखगुनीहंगरपरिकंगहनसुनिमु
वताकेहोरयामेंकरीधोंदंडईहं॥
॥सहा॥गितननकागुननकागुनगानु
सोसवेंसमाहा॥

त्रिभुवनमें ॥ जाके प्रांनदारुन निराधकी
~~षट्तर प्रांसके~~ त्रिभुवनमें त्रिषामें
वामतोर पां उवचे सियराई भईतनमें
ताके आगे ॥ कहे कोऊ सागर की बात
आं डों सलिल अपार के सों आवें वाक
नमें ॥ ५८६ ॥ का कहिस के वडति
सालषें वडी यों भूल ॥ दिन दई गुलाव की
उन डार नये फूल ॥ योका ॥ यह अप्पत्ति
कोऊ प्रवीन महाजांनि प्रजांनै प्रविवे
क को करै तहां कहीये ॥ कवित्त ॥ को यह
बात है सब कहि भूलि के काम करे कर
तारने जैसे ॥ येती करी जग की रचना
ये विचार विना मै करे न हितै सैं ॥ दषडु
को उउसा सें मसा सब डजु करे कधुका
मअने सैं ॥ वैसे ये कंटक डार गुलाव
की फूल सुगंध दये मडुके सैं ॥ ५८७ ॥
दत्त ॥ दिन दसु आदरु पाइ के करिले
आपुवधाना ॥ जौ लगी काग सराधपे

यतौलमितोसनमान॥ दीका॥ यह
अन्याक्तिकोऊथोरदिननुकौवढवा
रतैगर्वुकरैतहांकहीथै॥ कवित्त॥ भूम
रकंठकठोरमहासुरयेकहीलोचनरंगु
हंकारौ॥ नीलकहाश्तपछिनुमेंअरुभ
हकौसाजुकुचीलनिहारौ॥ आदरुपा
इतिनादसकौअभिमाननसौकधनौ
विनधारौ॥ आइसजौलामराधकौपापु
सुतौलगिहैजगुआयुतिहारौ॥ पर-ट
रा॥ मरतुप्यासपिजरापस्यौसिसु
वाइसकेफेर॥ आयसुदेंदेंटेरीयतुवा
सुवलिकीवेरहीका॥ यहअन्या
क्तिभलेमानसकौदुषुदीजीयेंअरु
नीचकौआदरहोइतहांकहीयें॥ क
वित्त॥ देखौसमेंकेप्रभाउकौभाउ
भयोअगुआंगुमहीकौरिमेंवौ॥
कगइगुनरुदनेकीप्रगटे
रूपअनौवा॥ प्यासौमरें

लोचन कहै मृदु वैन ननु कौं जु कहों वा
 आदरु कै बलि देवे की वेर बुलावत
 चाहक चाइ सां कौं वा ॥ पट्ट ॥ १॥
 इहि आसा अटक्यो रहै अलि गुला
 वके मूल ॥ कहै फेरि वसंतरितु ये डारन
 वे फूल ॥ ॥ टीका ॥ यह अन्माक्ति जहां क
 क्षां नै पायो होइ तहां वे सीये आसा
 लगायै रहै तहां कही ये का कध्व नितै
 यह होइ कि। वाही भरोसै क्यो रहै ॥ क
 विना ॥ वेहन डारन फूल हुते जिन कर सने
 सब दुष्पु भुलानौ ॥ वीति वहार गई
 तिन की कु समा वलि चित्त बुभे नहि
 आं नौ ॥ अहै वसंत वहारत वै यहा
 सुष आं र भही कौं विकानौ ॥ आसय
 हं जिय मंधरि भौं रु गुला वके मूल रहे
 म डरानौ ॥ ६० ॥ ॥ टीका ॥ पट्ट पाषं भ
 युकां करै सपर परेई संग ॥ सुधी परे व
 पहु मिमै ये कैं तुही विहंग ॥ टीका ॥ यह

लोच कुहें मृदु वैन नुकों जु कहें वा
प्रादरु कें वलि देव की वर बुला वत
चाहक चाडि सों कों वा ॥ पट ॥ ॥ ॥
इहि आसा अट कों रहें प्रलि गुला
वके मूल ॥ कें हे फेरि वसेतरितु ये डार
व फूल ॥ ॥ ॥ ॥ यह अमोक्ति जहां
क्ष्जां नें पायो होइ तहां वैसी ये आसा
लगाये रहें तहां कही ये का कध निते
यह होइ कि। वाही भरोसे कों रहें ॥ क
विता ॥ वह न डारन फूल हुते जिन कर सने
सव दुष्पु भुलानों ॥ कीति वहार गई
तिनि की कु समा वलि चित्त बुभे नहि
आं नों ॥ अहे वसेत वहारत वै यह वा
सुष आं र भही कों विका नों ॥ आस
हे जिय मंधरि भों रु गुला वके मूल
म डार नों ॥ ६० ॥ ॥ ॥ पटु पाषं
घुकां करै सपर परै ई संग ॥ सुधी परे
यहु मिमै ये कें तुही विहंग ॥ ॥ ॥ ॥

अन्यात्तिजो को ऊपर अधीन करु पर देसी
नाहीत हां कही ये ॥ कविता ॥ भोजन को क
र्यो निकरै जु न करै जु अधीन के का ह
की सेवा ॥ पाषणुही के बने पटु चारु वि
साह को जान तु भावन सेवा ॥ नी के रह
घर नी के सदा सग पूरव पुन्य नु को फ
लु लेवा ॥ कौ नु हं भांति नि आ स पर ई
सुधी अपनी ये नु हो हं परवा ॥ ६० १ ॥
दोहा ॥ कर लें सूधि सराहि कू स वै र हे ग
हियो नु ॥ गंधी गंध गुला व को ग व ई गा ह
कौ नु ॥ कविता ॥ यह अन्यात्ति को ऊरु न
करै त हां कही ये ॥ कविता ॥ राष्ये हं उघा
रि तें प्रमोलिकु अतरु आगे जा के मुद
गंध सौ मह किर ख्या भौ नु हे ॥ मो रि आ
दि हां थ सव ही नै लियो है द पि व को स
धि सू धि स व नु सरा हि ग ख्या मान रे
माल सु नै सव ही नै ह सि के म चो ॥
क प थु ग हि अ व तं कर त

प्ररगंधी प्राधर हीय में ये तो चतुक
 रिगाहक गुलाव को गवेलगा उको
 नुहं ॥ ६०२ ॥ दोहा ॥ वन इहां नागर
 वड जिनि आदर तो प्राव ॥ फूलों प्र
 न फूलों भयो गवई गांउ गुलाव ॥ शी
 का ॥ यह प्रन्याक्ति को ऊवृ रुने करे
 तहा कही ये प्रवी न लोगन को समुदय
 हाइ गुन की वृ रुको ऊनरे तहा कही ये
 कवित्त ॥ चाइ सों आदरु ते रो करे तो ही
 सों शयै हियों प्रनु कूल्यों ॥ तामद सों
 र भको र सुलै जिन के प्रतिमा दुर है अ
 ति ऊल्यों ॥ किं मति तेरी व दार्द घनी
 रिफवार नवे जिन को तकि भूल्यों ॥ अ
 सगमारन के वसवास मे फूलि गुला
 व भयों अन फूल्यों ॥ ६०३ ॥ दोहा ॥
 गाध नु नृ हरष्यो हिये घरिय कले हिपु
 जाइ ॥ समर परंगी सो सपर परतप
 पुनिके पाइ ॥ दोहा ॥ यह प्रन्याक्ति को

काहकौं मखात होइ सु पाहूँ दे नौं आवैं
तहां कहीयै ॥ कवि न ॥ सुनि कौं न सखी
कल गावत गीत जे को किल कंठ सुभाइ
नुसौं ॥ बहु भांति न के पकवानवनाइ म
नावैं सवैं सत भाइ नुसौं ॥ अरव गोधे न तू
मन मानहि यै बहु भांति पुजाइ लै चाइ
नुसौं ॥ परि है सुधि तोहि सवैं तव ही पसु
पूजि है गेजव पाइ नुसौं ॥ ६० ध ॥ दोहा ॥
करि फुले लकौं आचव नुमीठै कहत स
राहि ॥ गंधी अंध गुलाव कौं अतरु दिषा
वतु काहि ॥ टीका ॥ यह अज्ञानि मूर्ख
जानिवासौं बतुराई जनावैं तासौं कहीयै
कवि न ॥ नगर के वगर तै तेरी ऊंचे टेर सु
निचौ पसौं बुलाइ ली नौं कहि प्रांगें आ
अ ॥ बैंगरी निकट प्रति प्रीति सौं हुक
मुकी नौं सौं धैं वे सकि मन्तिकौं ह मंहि
दिषा अरे ॥ आचव नु करि कें फुले लकौं
कहत मीठै तै न अज्ञां जान्यौं सुघराई कौं
अभाऊरे ॥ काहकौं उधारत गुलाव

प्रतरुगंधीकहं गई तरे चतुराई प्रव
वाउरे ॥ ६०७ ॥ राजाको वर्नतु दोहा ॥
प्रतिविं वत जे साह दुति दीपन दरप
नधां मा जव ज गुजी तन कौं कियौ का
इव्यूह मनु कामे ॥ येका ॥ यह सौं राज
कां वर्नन कविकी उक्ति सधी कौं वचन
नाइका कौं वचन सधी ह सौं होइ ॥ त
विता ॥ राजतु दर्पन मं दिर मं महि मंड
श्री जे सोध सवाई ॥ त्सां प्रतिविं व नि
की प्रवली च हूं प्रार ल सं प्रति हो छ
विछाई ॥ कंधौं प्रने कसरूप धरै र वि
राजतु मंडली मंड सुहाई ॥ मान हूं जी
तिवै कौं जगतै रचना व हुव्यूह की कां
मचनाई ॥ ६०८ ॥ दोहा ॥ चलत पाइ
गुनी गुनी मानिक मुत्तिय माल ॥ भ
भयौं जैसा हि सौं भा गिन चहिय तु
ल ॥ येका ॥ यह राजा कौं दान कवि
उक्ति ॥ कविता ॥ दीज मगाइ कै तुरंगतुर

दतुवसुजाचें साअजाची होत मांजके
प्रसंगमें ॥ ६१० ॥ दोहा ॥ सां मासे न सया
नसुषसवें साहिके साथ ॥ वाहुवली जै
साहिजू फतेति हारे हाथ ॥ टीका ॥ यह
राजाको जयसिद्धिवरननकविकी उ
क्ति ॥ कवित्त ॥ जगमग्यो दिल्ली छत्रप
तिको प्रतापुनवषंडमै अषंडदावें प्र
रिनुके साथ है ॥ तेरेई उभुजदंडभुज
दंडके भरोसे सोउरहतनिसंकप्रव
दातु यह गाथ है ॥ सुभटसमांजसा
मासयनसमाजसुषसवेंसवभांति
नुको साहिजूके साथ है ॥ रहतिसवाई
जयसिंहमहाराजसदांसमरविजेकी
सिद्धिरावरेई हाथ है ॥ ६११ ॥ दोहा ॥ प्र
नीवडी उमडी लषें प्रसवाहकभटस
यमंगलुकरिमां न्योहिये भों मुहमां
लरूप ॥ टीका ॥ यह राजाकी सूरत
अरुवीररसुकविकी उक्ति ॥ कवित्त ॥ सांभ

केषु तु प्रायेऽमदिः प्रमितदलसइय
सुभटमहाविक्रमनिधानं है। गरजे
गरुडगहं निपटनिकटः प्राइविकट
कवंडसां धिवरषतवानं है। साहसी
मवाइजैसाहिभूपः सैसमैवीर
सराच्यैथिरभयोतिहिथानं है। उम
गिउछहमहामंगलुकैमान्योहियेव
दनुकौरंगुभयोमंगलुसमानं है। ६१२
दाहा। यौदलकाटवलकतंतवजय
सिंघभुवालाउंदरअघासुरकेपरैजै
हरिगाइगुवालादीका। यहराजाकीस
रतापराक्रमुक्विकीउक्ति। कवित्तये
करसनासौमोयैकैसैकहपरैजेत
क्रमप्रमितकीतैत्वपतिसवाईतै
सवप्रघासुरतैराष्यां वजुजैसै
संहसनअलीकीगिलीदिह्वीउगी
ईतै। जेजियानिवास्यांदावानलसै
पतनदषवलकैविपतिहिंदवान

तुवसुजाचें सो अजाची होत मांजके
प्रसंगमें ॥ ६१० ॥ दोहा ॥ सां मासें न सया
न सुष सर्वे साहि के साथ ॥ वा हुवली जै
साहि जू फतेति हारे हाथ ॥ टीका ॥ यह
राजा को जय सिद्धि वर न न कविकी उ
क्ति ॥ कविता ॥ जग मग्यो दिली छत्र प
तिको प्रतापुन वषंड मै अघंड दावे प्र
रिनु के माथ है ॥ तेरे ई उ भुज दंड भुज
दंड के भरो से सो उ रहत नि संक प्रव
दातु यह गाथ है ॥ सुभट समांज सा
मा सयन समाज सुष सर्वे सब भांति
नुको साहिजू के साथ है ॥ रहति सवा
जय सिंह महाराज सदां समर विजे
सिद्धि रावरे ई हाथ है ॥ ६११ ॥ दोहा ॥
नीवडी उमडी लषें प्रसवाहक
य ॥ मंगलु करि मा न्यो हिये भां मुह मं
लरूप ॥ टीका ॥ यह राजा की सूर
अरु वीरर सु कविकी उक्ति ॥ कविता ॥ स

रिक्केतुआयेउमडिप्रमितदलसईय
दसुभटमहाविक्रमनिधानहै। गरजे
गरुगहैनिपटनिकटआइविकट
कुवंडसांधिवरषतवानहै॥ साहसी
सवाईजैसाहिभूप्रैसेसमैवीरर
सराच्यैथिरभयौतिहिथानहै। उम
गिउछाहमहामंगलुकैमान्योहियैव
दनुकौरंगुभयौमंगलुसमानहै। ६१२
दाहा॥ यौदलकाटवलकतैतवजय
सिंधभुवाला। उंदरअघासुरकेपरैज्यै
हरिगाइगुवाल॥ दीका॥ यहराजाकीस
रतापराक्रमुकविकीउक्ति॥ कवित्तये
करसनासौमोपैकैसैकहपरैजेतेवि
क्रमप्रमितकीनैत्वपतिसवाईतौ॥
कसवअघासुरतैराष्यावजुजैसैप्रै
सैहसनअलीकीगिलीदिह्वीउगला
ईतौ॥ जेजियानिवास्यादावानल
पवलदुषवलकैविपति

वह ईतै ॥ काली ज्यौं कुचाली काटि इ रकी
नौं मुहक मकी रति प्रकास जगु प्राये
उजराइतै ॥ ६१३ ॥ कवि ज्ञ ॥ घर घर तुरा
निहिंडुनी देति प्रसीस स राहि ॥ पति नुरा वि
चाहर चुरी तै राषी जय साहि ॥ टीका ॥ प
हराजा कौं पराक्रम सब पै उपकाह सुकति
की उक्ति ॥ कवि ज्ञ ॥ प्रायौ इत प्रजीत सो घ
जइ लुसंगलै विटप सुभटनुके समाज कौ
कहै कविक्रम इत दिल्लीके प्रबल दल निकस
सकल साजै समरके साज कौं ॥ असे समै वी
रुवि सुमेसके अजानुबाहु राषी तै इहं कील
जकरि कै लज कौं ॥ घर घर तुरकि निहिंडु
नीमें मिलि सब देति है प्रसीस जय साहि
हाराज कौं ॥ ६१४ ॥ अथ परिहास दोहा ॥
रवि वंदौं कर जोरिये सुनै स्यामके बैन
हसौं है सवनके अति प्रनषां है नैन ॥ टीका
यह हास परस परबीर हरन समयस
कचन सषीसों कविहंकी उक्ति होइ ॥ कवि

तां पवधूं न के चो रचुरा इ क दं म पै ज्ञा इ च द नो
रि ज्यो ही ॥ हा थ सों गा त छि पा इ कै वे स कु
वी स तरा इ कै मा ग त ज्यो ही ॥ दे व दि वा क र
कौं क र जो रि प्र ना मु क रों क ही ज्ञा त रि सों ही
यों सु नि कै सु ह सों ही भं ई स व की अ षी यां जु
हु ती अ न यों ही ॥ ६१३ ॥ दो हा ॥ य र ति य दो
धु पुरा न सु नि मु ल कि ह सी मु सि कां नि ॥ क
सुं क र रा षी मि श्र नै मु ह प्र ई मु सि कां नि
॥ टी का ॥ य र हां स य र स यों रा नी क कौं प
रि हा स क वि की उ क्ति ॥ क वि त्त ॥ पं डित रा
त स भं ज मै बै ठि क था यों पुरा न प्र स ग मै
भा षी ॥ जा तु नि रे प द वी स वि से पर दार
सों जो रि त कों अ भि ला षी ॥ सो सु नि कै मु
ल की मृ ग लो च नि जा सों ही जी ठि मि ला इ
कै रा षी ॥ भ ई जू च हि वि लो क त हों उ म गी
मु सि का नि म रू कै रा षी ॥ ६१४ ॥ दो हा ॥
चित पित मार क जो ग गु नि भ यों भ यें पि
त सो ग ॥ फि र हु ल स्यें जिय जो ति सी स म

जाजरजुजागु॥टीका॥यहहासपरस्जो
गीकोंपरिहासकविकीउक्ति॥कविसा॥पूत
योंइकजोतिगीकेंग्रहसाधतसाचितम
लसानां॥डोहिपक्षोंपितुघातकजोगुकि
रहियेअतिहोअकुलानों॥जारजुजागर
ष्योतवहीमुलकेंउरमानिहुलाससया
भूतिगयोंइसुकूलिउसोमुषआनदपुं
हियेअधिकानों॥६५॥दोहा॥वहुधन
हैसानुकेंपारोंदेनुसरहि॥वैदवधु
भदसौरहीनाहमुषिचाहि॥टीका॥यह
सपरहासवैदकोंपरहासकविकीउक्ति
कविनविपचिकित्साकेभदमेंयोंइकव
हुतोंपुरघारथहीनों॥काऊनपुंसक
काइधनोंधनुलैवहुतेशरुदीनों॥पा
चंडवडावतुहचितकेलिकलाल
वीनों॥यावत्तोयांसुनिवाकीतिया
मुषप्रारचितैहसिदीनों॥६६॥दो
द्वारफूलहनेंजुसुषउठहरषिअग

हसीकरति प्रोषदप्रलिनुदेहददोरिनुभ्र
लि॥दीका॥यहनाइकापरकिया मुदिता
देवरसोंआसक्तिहेंसोसधीसधीसोंकह
तिहेंहर्षप्ररुहाससंचारीहें॥कविताबेल
मैदेवरकेकरकेवेजहींफूललगेनबला
तना॥आनदपुंजउमंगितेहीयोंफूलिउ
ठप्रतिकोमलगातना॥देहददोरनिभ्रलि
लीउपंचारुकरैलहेंभेदकीवातनाजान
तजेजियकीवतियांरसविग्यतियाहसि
हरतिवातना॥६१७॥दोहा॥॥औरसचै
हरधीहसतिगावतिभरीउच्छह॥तुहीव
हविलषीफिरैकौदेवरकेव्याहा॥दीका॥य
हनाइकापरकियागुरजनकोंवचनेदेवर
सोंप्रीतियहबंगि॥कवितातुहीसबसाजें
अनेकसिगारवनीठनीजलेंहुलासउमो
हें॥गावैहसैहरषैवरषैसुषकाइकीलेंक
धरैचितनाहें॥भौनमेंमंगलसाजें
वहुसोइलहेंसवजोचितचाहें॥देवरइ

हिव्याहवह विलषी सीतुली लषीयै कहि
ह ॥ ६१८ ॥ अथ करु नारस होला ॥ समै प
टिपलटै प्रकृतिको नत जै निजु चाल ॥ भौ
अकरुन करुना करौ इहिक पूत कलिका
ल ॥ दीका ॥ यह परसाव मै संभवै कलि
जुग कौ बरननु ॥ कवित्त ॥ कासौ पुकारि
शेविनती इक सार भयो सिगरो जगु जोऊ ॥
जाति समौ पलटै प्रकृत्यो फिर कौ न सुभा
उत जै सचु कोऊ ॥ आरत सिंधु दया कौ समु
दुअनाथ कौ नाथ कहावत कोऊ ॥ केंग यो
दषं महानिरदं कलिकाल कपूत हि प्रावत
साऊ ॥ ६१८ ॥ होला ॥ दीरघ सासन लेह
यसुष सां ईहिन भूति ॥ दई दई क्यो करतु
दई दई सुक वूलि ॥ दीका ॥ यह करु नारस भ
क्ति कौ वचनु ॥ आपने मनमौ ॥ कवित्त ॥ नो
दुषुल है तौ तं जिनि अकुला इलै ले दीरघ
सा सचित चिंता मै न डुलिये ॥ सुषु तो नहत
सव भांति सावधान रहि संपति मगन कव

नदुषदं दत्ता तं क ह प्रवते शं दर वार छं डिके
नसों यु कारीये ॥ जैसें तु म तारे पति तन के
अने क पुंज कहें कवि क्रम जैसे मो ह कों उ
धारिये ॥ की जैसें चिन सोई जाते हो इति रथा
र प्रभु मर गुन ओ गुन क ह न उ र धारीये
६२२ ॥ दोहा ॥ भजन क ह्यो ताते भज्यो भ
ज्यो नये कों वार ॥ इ र भजन जाते क ह्यो से
ते भज्यो ग मार ॥ टीका ॥ यह भक्त को वचन
प्रापने मन सों ॥ कवित्त ॥ मरी तो सोष
सुनी असुनी करते मन ओ र मतो अंग यो
र ॥ मे क ही वाहि भली विधि सो भजिते इ हि
ते भजि इ रि भयो रे ॥ जा की क ही प्रति इ रि भ
ज्यो र हि सो ते भज्यो हि तु सा जिन यो रे ॥ क्रम
कहे यह स्पान पुते संवये क ही वार क ही ते वि
यो रे ॥ ६२३ ॥ दोहा ॥ हरि कों फि स्थान पे डे
ला भ फि स्थं स बु द्ध ॥ मने नु भ यो क ह उ ज
रो भ ये ऊ ज रे के स ॥ टीका ॥ यह भक्त को
वचन मन सों ॥ कवित्त ॥ जल थल या पको

न प्रतिपाल कहें विघननिनासकस्योति
रदिनेसरे ॥ तीन लोककी तौ मूढ़तों ब्रता
पचीहारसविषयनि सौ भी नौ तैने ठाने ॥ प्र
भेसरे ॥ कहें कविक्रममनलस्योति ॥ प्रतिर
हरिकों विसरि गयो फिस्यो देस देस
॥ पै उद्वेग भवनकी तौ कहा जग आश्लीनो
नसेत भयो सिर भये सेतके सरे ॥ ६२ ॥

॥ नो निरधार यह जगु काचौ
ताचसौ ॥ एकै रूप अपार प्रतिविं वितल वि
प्रेजहो ॥ दीका ॥ यह सांतरस सर्व मई ही दे
॥ काविल ॥ निपट असार दुषदं दको
रुप्रभोति भयो भय भुगनिके भारे
सांचे कौ सौ ठास्यो ताथे सांचौ सौ निहारीय
तुजौ लौ लषीय तु सो क धृथिरु नार है ॥ यो तौ
मनमार में तौ समझ्यो विचार करिय यह जग
काचौ ॥ प्रसौ काचौ निरधार है ॥ जित तित पृ
रिख्यो पूरन पुरिषु बहये
वित अपार है ॥ निवि

ममो रष्यां हियें ह मां म ॥ मतिक व हं ॥
एंड हां पल कु प सी जै स्यां म ॥ दीक ॥ य ॥
क्ति कौ वचन ॥ कवित्त ॥ गावों गुन से सज
क्रोधावत महे समुनि सा धित समाधि
हुभांति मन चितुला इकें ॥ असी को उविधि
मापें प्रावति नवनै जातै च सकवै विभु
नपतिकौरि मा इकें ॥ येक वात उरधारि प्रा
पनो हियों मै करि राष्यां हें ह मा मति हुंता प
सांत चा इकें ॥ वह करु नामय कहावते हे दी
नबंधु मतिक हं पल किय सी जै इत प्रा इकें
२२६ ॥ दोहा ॥ ब्रज वासिनु कौ उचित धनुजे
धनुरुचित नको इ ॥ सुचित न प्राई सुचित इ
कहों कहते हो इ ॥ दीक ॥ यह भक्त कौ वच
नुप्रयोजनु यह हें विना श्री कृष्ण के ध्यान सु
चित ईना हीं ॥ कवित्त ॥ जाकी तन सो भातव
नी रद सी दृषियति पीत पट दं मिनि दमकि
छवि छ इहें ॥ लोचन ललित लसै रस भरे
ता मरस कुचित अलकि अलि प्रवलि सुहा

हैं। और सौं वृजवासिनी कौं उचित धनु है ता
में तै नदी नै मनु माति विष पर चाई है। कौं न
मांति सुचिताई जिय जौ लौं तौं लौं ना हरूप
कीनिकाई वह जिय में न आई है ॥ ६२ ॥ दो
॥ लोपे को पे इंदु लौं रोपे प्रलै अकाल
गेर धारी राषे सवें गो गोपी गोपाल ॥ टीका
॥ यह वीर रस श्री कृष्ण जूनें गो वर धन धरि कें
जवासी सव राषे ॥ कवि ला ॥ लेष्यो वलिभा
सुनिको प्यो प्रति सुरपति प्रभुता के उम गि
मान मन आये है ॥ प्रा हरिक ही वार वा है
न बंये कत कें वृज कौं व हा वै असे चलन च
नाये है ॥ उम डि गो राधार वरषत विकरार घ
मानो मह प्रलय ये कसा थ चलि आये है
ये सै स मैं न देके सुचन कर गिरि धरि गोपी ग्वा
न गा इव ह सव ही व चाये है ॥ ६२ ॥ दो हा ॥
प्रलै करन सह सन लगे जु बिजल धर इक
साथ ॥ सुरपति गर्वु ह स्त्रौं हरषि गिर धर गि
रि धर हाथ ॥ टीका ॥ यह वीर रस संगो वर धन

को समय है हरषिपदतै उत्साहमुख्य है ॥ व
विज्ञ ॥ प्रलैकेधुमडिघन प्रायेवृजमंड
यें मंडिकें अंधंधारिलायें रु अतिके
निरषिविकलभये गोपीबालगाइसब
हके हिये मरछौ धीरजनरतिकौ ॥ ताही
नैजसुधाको लालु अंसौं हालुदधिहरषि
रैयाभयौ वृजकी विपतिकौ ॥ पातलौ उ
राष्यंगिरवरपानिपरदूरकी नौसरवगा
वसुपतिकौ ॥ ६२८ ॥ भयरसदोहा ॥ क
तिनदेवरकी कुवतकुलतियकलहर
पंजरगतमंजारदि अगसुकलौं सूकति
इ ॥ दोहा ॥ यहभयरसुदेवरकी भृष्टता
को वचनुसषीसौं नायकासुकीया ॥ दीक
दवरुचपलुचितउरमें कुभाउधरिकह
अनेसीवातयासौं दिनरातिहें ॥ कहें क
हृष्ययहपरमसुसीलवालसकुचमन
मेंमनुही प्रकुलातिहें ॥ कहिनसंकतिका
अंनसौं हियेको भेदुकुलतियकुटम

महदराति है ॥ निकट विलाव के यषे रूपि जरा
कांजें सैं अैं सैं यह वालनि से दिन सूषी जांति है
॥ ६३० ॥ अद्भुतर सदाहा ॥ मोहन मूरति स्या
मकी अति अद्भुत गति जो ॥ वसंति सुचित
अंतरत ऊ प्रति विं वित जग होई ॥ शिका ॥ य
ह अद्भुतर स भगवान की स्या यं कता वर्न नु
पक्त कौ वचनु ॥ कवित्त ॥ अैं सी न अैं रति
ह्युर में छवि जै सी वाने दकें सौर में देषी ॥
ताहि विलो किम नोजकी मूरतिका वरने
अति रूप वि सेंषी ॥ अैं र कहा कहों सुंदर
स्या मकी अद्भुतरी तषरी अवरैषी ॥ अंत
राषी वसा इहि सैं कौ न ऊं जग में प्रति विं
वत देषी ॥ ६३१ ॥ दोहा ॥ तिय कत कमने
नीय ही विनु जिह भौह क मों ना ॥ चल चित
व सौं चुकति नरि वं क बिलोकनि वान ॥ दी
का ॥ यह अद्भुतर सु सखी कौ वचनु नाइका
सौ नाइक कौ वचने नाइका सौ नाइका कौ व
चने नाइक सौ सेंषी हू सौं सैं भवै ॥ कवित्त

को समय है हरषिपद है उत्साह मुख्य है ॥ व
विन्त ॥ प्रलंके घुमिष्व न प्राये वृजमंड
यें मंडिकें अंधरधारि लायों रु अतिकों
निरषि वि कल भये गोपी ग्या लगाइ स
हके हिये मंरघो धीर जनरतिकों ॥ ताही स
मंज सुधा कौ लालु अं सौं हालु दधि हरषि
संया भयौ वृजकी विपत्तिकों ॥ पात
राष्यं गिरवर पांनि परइ रकी नौ सरव गर
व सुपत्तिकों ॥ ६२-६ ॥ भय रस दोहा ॥ क
ति न देवर की कुवत्त कुलतिय कलह
पंजरगत मंजार दिग्ग सुकलौं सूकति जा
इ ॥ दोहा ॥ यह भय र सुस्वर की भृष्टता स
कौ वचनु सषी सौं जाय का सुकीया ॥ दीका
इवरुच पलुचित उरमें कुभा उधरि कहत
अनें सीवात या सौं दिन राति है ॥ कहें कवि
हृत्प्रय परम सुसील वाल सकुच मन
मंमनुही प्रकुलाति है ॥ कहिन संकति
अंन सौं हिये कौ भेदु कुलतिय कु

लहडरातिहै ॥ निकट विलाव के यषे रूपि जरा
कौं जै सैं ॥ सैं सैं यह वालनि से दिन सृषी जातिहै
॥ ६३० ॥ अद्भुतर सदीहा ॥ मोहन भूरति स्या
मकी अति अद्भुत गति जो ॥ वसति सुचित
अंतरत ऊ प्रति विं वित जग हो ॥ शीका ॥ य
ह प्रद्भुतर सभ गवानकी न्यां यंकता वने नु
भक्त कौं वचनु ॥ कवित्त ॥ अँ सी न प्रौरति
हपुर में छवि जै सी वानंद के सौर में देखी ॥
ताहि विलो किं मं नोजको मूरतिको वरने छ
अति रूपवि संधी ॥ और कहा कहों सुंदर
स्यामकी अद्भुतर तषरी अवरये ॥ अंत
र राषी वसाइ हि सैं कौं मं ऊं जगमें प्रति विं
वित देखी ॥ ६३१ ॥ दोहा ॥ तिय कत कमने
तीपदी विनु जिहं भौं हक मों ना ॥ चलचित
वमौ बुकति नहि वं क बिलोकनि वान ॥ दी
का ॥ यह प्रद्भुतर सु सृषी कौं वचनु नाइका
सो नाइक कौं वचन नाइका सो नाइका कौं व
चननाइक सैं संधी ॥ कवित्त ॥

सीधीतूंकहोतेप्रतिप्रदभुतगतियहतेरीक
मनेंतीवरनतनवनतिहें॥ कहेंकविक्रसमये
तांप्रगटविलोकियतिध्रकुथीकमानजिहि
बिनाहीतनतिहें॥ तिनतैनकट्टेडीठिकुटि
लकटातिसरचुकतिनचलचितवेऊकौं॥
नहतिहें॥ तेरीयाविलोकनिकीनिरषिप्रन
धीरितिमेरीमतिप्रतिहितकौंतिगसनति
हें॥ ६३२॥ लेंलें॥ इगउररुतट्टंतकुटम
जुरतचतुरचितप्रीति॥ परतिगांठिदुख
नहियेंदईनईयहरीति॥ टीका॥ यहप्रधुत
रसदृष्टानुरागनाइकुप्रधवानाइकाको
वचनसधीसों॥ कतिहें॥ लागिरहेंमनमें
दिवसाधदईयहरीतिनईदुंधांतों॥ लोभ
नप्रीतमकीछविसोंउरमेंसबट्टेंकुदुंब
कौंनातों॥ कसकहेंप्रतिचोंपकेचाइजु
रैहियकेजसहेतुनहंतों॥ वैरिनिकेउर
मेंपरेंगांठिअनौषांनिहारेंसनेहकौंना
तों॥ ६३३॥ लेंलें॥ तालषिमोमनजोल

सागतिकहीनजाति ॥ डोडीगाडगजौतऊ
 नौरहैदिनशति ॥ टीका ॥ यहप्रदुतरस
 दृष्टानुरागनाइकाकौवचननाइकासौ ॥
 तैरेतनराजैवृषभानकोकुवारि
 सीसौछविपुंजतिहंसुरनमैनहनुहै ॥
 मौरअरअरभुतरीतिअवरेषिताहिसु
 मिसुमिरिअचिराजुउमहनुहै ॥ येकर
 मनासौमोपैकहतवनैनकोहताहिलषि
 पेशमनुजागतिलहनुहै ॥ तदपिअगम
 आडीठाठीगाडगजौमनतरुदेखौआठौ
 जामउआडीरहनुहै ॥ ६३ध ॥ दोहा ॥ याअ
 नुरागीचित्तकीगति समुहैनहिकोइ ॥ ज्यौ
 ज्यौवूडस्यामरगत्यौ ज्यौउजलहोइ ॥ टीका
 यहप्रदुतरसभक्तकौवचनुअसनाइक
 कौवचनुसखीसौहोइतऊसभवे ॥ कवित
 नैननुमाऊरहीषुभिकेवलनदकिसोरकी
 ऊहिसुहाई ॥ प्राननिमैतऊसालतिहैक
 विकसकहैसुधिअनभुलाई ॥ याअनु

रयग चित्तकोकथुमभुतये तिकहीन
 शो। वृजोरहंरास्यममंज्यो हीज्यो तं
 हंश्रुतिउज्जलताइ। ३३५॥ नो नव
 ॥ जमकरिमुहनरहरि पस्योइहिध
 नि। तुनाइ। विषयत्रयापरिहरिअज्योन
 कगुनगाइ। विद्या॥ यस्यांतरसभ
 वदनमवसोभयसंश्रिता। कदिना
 मानमो कयापिरस्याजाकोपाकु
 क्रमकोकहीलोप्रभाउर। तिनुकानो
 तिहूलोककमकलवलोकोऊपंतव
 हुकियेउपाउर। असकालकरि
 वसुइतरहरिकसकईयहैपरहरिचि
 इया। होरमानि विषयत्रयानिपरहरिमन
 होचिउल्लाउरइयकतनुनिगुनगाउर
 धरणाविको। होइ। इरभजन
 विदुगुनविकारनकाल। प्रगटतनि
 निकरहरियंगरंगभूपाल। होइ।
 ककोकचननवयाकोगुनभिमानुहैतव

भूदूरिहै अरु निरगुन तत्व है त ही त ही प्रगट
यह शक्ति कलिकाल के राजान की कहियें तो
त भवें ॥ कवित्त ॥ कृष्ण कहै कविये क सी सी
ति प्रभू अरु चंगनि वाहत सो ॥ ३ ॥ पीठि दैं
दूरि ही दूरि भजें गुन कों विस्तार करैं जब को
॥ नी कैं ही कों नल है गुन मुक्त कैं सो चकैं
वादि पचों मति को ॥ ३ ॥ निर्गुन ता प्रगटें न
वही अति ही निकटें प्रगटें तव को ॥ ६३७
दोहा ॥ ॥ तौ अनेक अंगुन भरी चाहें याहि
बला ॥ जो पति संपति हूँ विना ज दुपति रा
खै जाहि ॥ दीका ॥ यह परस्ता विकसंप्रति वि
ना ही रहति यह वंगि ॥ कवित्त ॥ अंगुन पुंज
भरी अति चंचल याहि कहैं जिय कों अवि
मिलावैं ॥ नंद कि सोरं क पा करि कैं वह सं
पति हूँ विनु जो पति रावैं ॥ या विनु का ज क ध
न सरैं सब को अय है नैं है चों मति भावैं ॥ जो
निय है चित चाहत याहि उ पाइनु के बहुत
पत पावैं ॥ ६३४ ॥ दोहा ॥ या भव पारी वा

रकौंउलघिपारकोजाइ॥ ली
नीमहैंबीचहींआइ॥ दीका
संसारकेपारहैंवेकौएका
कवितालोभमोहवासनस
होअसुरमनोजजाकौवित्र
भवसागरुअपारविकरा
अकोउलघिनिबहतुह॥
जनकप्रभेककरिसबको
चहतुहो। तरुनीकीछविद
रुगहिराषतिप्रबलता
इसीदोहा॥ जगतुजरा
रिजामोनाहि। ज्योआदि
पिनुदषीजाहि। कविता
कौवचनुनिर्वेदस्याईभ
जिक्योतंभ्रमुभूत्योभट
हियतुसवसुषनुकौंगो
रुचिहरिभजनपियूषक्ष
षमविषभोतुह॥ जिनि सव

लीभांतिवहंप्रभुपैनजांन्यौऽसौमोहकौ
होतुहं॥देषौजितिऽपिनुहीसवदरसायौ
निऽपिनुकौकाहभांतिवहंप्रभुपैनजां
न्यौऽसौमोहकौउदोतुहं॥देषौजितिऽपि
नुहीसवदरसायौतिनऽपिनुकौकाहभां
तिदेषिवौनहोतुहं॥६४०॥दोहा॥कोऊको
रिकसेग्रहौकोउलाषहजार॥मोसंप्रतिजड
पतिसदांविपतिविदारनहार॥टीका॥यह
सांतरसुभक्तकौवचनु॥कविसि॥संग्रहको
उकरोरिकरौरुभयौकोउलछिल्लछिभजरै
कोउहजारकजरिधरौवहुभांतिलहंमन
मैमृदुभारौ॥कृष्णकृपानिधिदीनकेवंधुसुर
दुमदांनिप्रतापउज्यारौ॥संपतिमैरेवहीज
डुपतिविपतिसदांजुविदारनहारौ॥६४१॥
दोहा॥जातुजातुविनुहोतुहंज्यौचितमैसं
सोषु॥होतुहोतुजौहोइतौहोइघरोमैमोषु
टीका॥यहपरस्ताविककचिकीउक्ति॥क
विसि॥सुरतकैतसमैजैसौयाकौम
सवदोरतैसमिठिर

सोमनुसदांजोपैरहेयेकरसतौपैकाहेको
मनुपिरेचौरासीअनेकमें॥संपतकेजात
तजैसेयाकोचित्तुहाशुहरिआवनुहैसम
संतोषकेविवेकमें॥कहेकचिक्रमप्रैसो
तहातहाइसोपैहोइअनायासहीमुकतिघ
यकमें॥६४२॥~~दोहा~~॥ यहवरयानहीओ
रकीतूकरियावहसोधि॥पाहननावचडा
जिहिकीनैनावपयोधि॥~~दोहा~~॥ यहसांति
रसभक्तकोवचनआपनैमनसों॥कवि
सागरअथाहभौरभारीविकरालगाहज
पिमहारहूतैदोरघलहरिहै॥दषनडराइ
ताराइहमतिवारवारवावारतऊनतरोक
वोंविगरेहै॥वांधोंजिनिसिंधुजोहैदीननुके
बंधुजिनसोंनपतिकुंजरकोकीनघरहरि
रांममहाराजधरैविरदकीलाजधरैसोईसा
जिकैजिहाजकोनिवाहियारकरिहै॥६४३
कवित्त॥पतवारीमालापकरिआंरनक
७उपाउ॥तरिसंसारपयोधिकोंहरिनावे
करिनाउ॥~~दोहा~~॥ यहसांतरसुभक्तकोवचन
मनसों॥कवित्त॥जहांकोमक्राधमददास

तिमंगलहंस्रुतुनक्योंहंपारपरिवेकोंदाउ
रे॥ सोचभस्योसलिललहरितामें६लोभकी
त्रष्माविकरालभारीभौरनुकोंभाउरे॥ कछ्म
कहंपस्योंतेविकटभवसागरमेंअवकछ्म
आंरनउपाउचितलाऊरो। मरोंकह्योमानि
याहिसुबहीनरेंगोंपतवारीकरमालाहरि
नावेंकरिनाऊरे॥ ६धध॥ दोहा॥ हरिकीजत
मसोंयहेंविनतीवारहजार॥ जिहितिहिभां
तिऽस्योरहेंपस्योंरहेंदरवार॥ टीका॥ यहसां
तिरसुभक्तकोंवचनभगवांनसों॥ कवित्त
दीसतुकोउनेआंरेदयानिधितेरोईयेकभ
रासोंगहेंहों॥ वेदपुराननिकीसुनिसाधिहि
येंधरिहासहुलासलहेहों॥ जेंसोंहतेसैंउस्यों
ऊपस्योंदरवारमुरारितिहाररहेहों॥ ६ध ५।
दोहा॥ मनमोहनसोंमोहकरित्तूघनस्यांम
सल्लारि॥ कुंजखिहारीसोंविहरिगिरधारी
उरधारि॥ टीका॥ यहभक्तिकोंवचनमनसों
अरुमानवतीनाइकासोंसवीकोंवचनक
हीअंतोंसंभवें॥ कवित्त॥ मरों मॉनि
मनमोहनसोंमोहक

मकोंसह्यारिलें ॥ वृजवनकुंजके विहारिसौं
विहारकरिगिरधरधारिसुषकारी उरधारि
लें ॥ भूतिहूकेंचितववृथावादमेंस्त्रावेंम
तिकहेंकविक्रमयहसुभतिविचारिलें ॥
धिरनुरहनुधनुजोवनभवनतनजांनि
वृजजीवनिसौचौपनुरपारिलें ॥ ६६६ ॥ दो
हा ॥ जपमालाछापानिलकसरेंनयेके
कामु ॥ मनकाचेंनाचेंवृथासांचेंराचेंरामु
दीका ॥ यहपरसाविकजौलौमनमेंकचा
इहंतौलौउपरकौकामस्वांगनाहीआव
तुहांकविता ॥ टीकेमनौहरभालवनाइके
मालधरोउरमेंकिनिसौलौ ॥ छापनिसौत
नमेंडितकेंअरुध्यानलगाइरहोंकिनिकौ
लौ ॥ नाचतुनाचवृथाकविक्रमकचाई
रहीउरमेंभरितौलौ ॥ आजुकछइहभेष
सरेंनहिसांचरचीमतिनाहिनैजौलौ ॥ ६६७
दोहा ॥ अवनैअवनैमत्तलगेवादिमवा
वतसार ॥ ज्योसोसवकौसइवौएकेनंद
किसोर ॥ दोका ॥ यहभक्तकौवचनअरु

वैकौंअधीस्वरयेकंश्रीकृष्णजहैं यहसिद्धांत
येका॥अगमैअपनैअपनैमतलागिकरैव
कवादवृथाभरमै॥सबकौंवहसेइवैनंदकौं
नंदनुआपकुहैंजुचराचरमौ॥वरसौंनमिते
केनितीरकहंसवप्रानिसमातुहैंसागरमै
॥जियसांचसांकाहकीसेवाकरौंपरअ
इमिलैनटनागरमै॥६धचाकविनायाइल
पाइलंगीरहैलगैअमोलकलाल॥भोइरह
कीभासिहैंबंदीभामिनिभाल॥दोका॥यह
अयोक्तिनीहैंअरुधनुकहैंपैवहनीचीठौर
रहैगौंभलौंमानसुहैंअरुनिधनुहैंलऊअं
चैरैरहैगौं॥कविनाजो जिहिठौरकेलाइ
कहैतिहिकौंसववासुतिहीथलुकेहों॥देव्यां
निहारिसिगारकेभेदमैदेवीयेंवालप्रतक्षर
है॥जइपिलालअमोललग्यौंतऊपाल
पाइवहीलगिरहैं॥हैंवहभोइरकोविंदुलीत
अभामिनिभालहीपैवावैपैहैं॥६धर्ष॥दो
हा॥अज्यौंतह्यौंताइर्यौंश्रुतिसेवनइ
गौं॥नाकवासुवेसरल कतिनि

के संग ॥ टीका ॥ यह परस्ताविक वचन भक्तकों प्रयोजन यह इकरंगश्रुति से वतुर है सात स्त्रोत्रों में ही प्ररुवे सरिजु का हूके समा नहीति नना क वा सु पा यों का कु ध नि के हे त न वे द कों दो ष डू र हो तु हे श्रुति का न हू क ही ये तों सं भवों ॥ क वित्त ॥ संग ला ग्यो ये करंग श्रुति ही कों से वत भ रा सौ ध रि धा रि जि य अं सौ न ह न हों ॥ क हं क वि क्र म्म ता सौ स व को उ क ह तु हे अ ज हूं लौ त स्त्रो त्रों ना ही त स्त्रो त्रों ना ही र ह्ये त ह प्र म के प्र भा व की इ हा लौ अ धि का ई जा के ति त अ ई ति न ही प र म प डु ग ल्यो है ॥ वि म ल सु ढार मु क ता नि के सं ग व सि ल सि ना क कौ नि वा सु द ष्यो वे सरि हू ल ह्यो है ॥ ६५० ॥ दो हा ॥ अ नि या र दी र घ न य न कि ती न त रु नि स म्प न ब ह चि त व नि अ रै क हू जि र व स हो त सु ज्ञा न ॥ टी का ॥ यह परस्ताविके अन्योक्ति हू व नै क क वी की उ क्ति स षी कों व च न ना इ का सौ ॥ क वित्त ॥ ज ग त में स व सौं क र त स व प्री ति अं ये प्री ति री ति जा न त जे प्री ति के नि धां न

। करतु सिगार रुचि पचि सब को ऊपें सि
गार करि वे के भेद भाउ में विना नहों ॥ प्रनि
रे कजि शीरे दोर घडग निवारी के तीन तरु
नमहि मंडल में आनि हैं ॥ प्रेम भरी वह चि
तव निक धूँ और ही हैं होत वसि जाहि निर
षत हीं सुजां नहों ॥ ६५ ॥ दाहा ॥ ॥ जौं चाहे
चटकन घटै मैं लौं होइ नमिता ॥ रजराज स
न धुवाश्तौ नेह चीक नैं चिता ॥ टीक ॥ यह
रसाविक मित्रता में रजोगुन न लावै सुधर
कै मित्र को वचनु ॥ कवि चिता ॥ जगत में महगी
सव ही तै प्रीति येक सांच विनु को ऊता कै
ले सहं नहर सैं ॥ यही है जंतनु कवि क्रम य
के पालि वे कौं मानों मति दोषु जौं तं प्रां ठि
नु हूं दसैं ॥ जौं पै नेह चीक नैं हीयें को ये कर
सराषों चाहतु चटक उजराई प्रति सर सैं
तौं पै काहूं भांति याहि मोलौं मति करैं मी
त अंसैं राषि जै सैं रजराज सुन पर सैं ॥ ६५ ॥
दाहा ॥ जौं सिर धरं महि मां मही लहि प

तिराजाराइ ॥ प्रगटलजइताप्रपनीयैसु
मुकटुपहिरीयतु पांशरवेका ॥ यहअमे
क्तिजोप्राष्ट्रामानसुहं भलेआदरलाइक
निहिनिंशकरसौराषंतहांकहीयै ॥ कवि
जोबहभांतिजवाहरुलैवहुभांतिरच्यौ
अतिहीछविछाई ॥ जाकीजगम्मगहोति
प्रभामतिजाइलखैसबकीललचाई ॥ ज
इधरैप्रभूपतुकीमहिमासवहींविधिसे
सरसाई ॥ तामुकटैपगमैपहिरैप्रगटै
ववाहीकौंभूरवताई ॥ ६५३ ॥ दोहा ॥ तम
तिजोनैमुकतईदियैकपटचितकोटिजौ
गुनहीतौराषीयैप्रांघिनमांरुअगोष्टि ॥
दोहा ॥ यहपरसाविकराजनीतिमेंसं
भवेअरुनाइकाभेदमेंसषीकौंवचननाइ
कासौंकिन्हाइछां ॥ इमतिप्रांघिनमेंरा
षि ॥ कविता ॥ मुकतहीमांनीयै ॥ नदेइतौंर
पटवितुकोटिकैतऊछां ॥ इवौंनअभिला
षियौं ॥ कीजोयैहमारोंकह्यौंदिजीयैनजांन

कंवारवारवातसमझइयहैभाषियै॥क
 हैकविकल्पयहीकहतसखानैसबदेषों
 राजनीतिहकेयंथनिमैसाषियैजांनियै
 जांगुनहीतांआनियैआंरडनीकैहीअ
 गोटकरिआंविनुमैराषियै॥६५ध॥दोहा
 दुचितैचितहलतिनचलतिहसतिनमुक
 तिबिचारि॥लयतचित्रपिऊलषिचितैर
 हीचित्रमैनारि॥टीका॥यहनाइकानाइ
 ककौचित्रस्यतदेषिचकितकैरहीहैसुस
 षीसषीसौकहतिहै॥कविन॥टाहीठगो
 सीहलैनचलैजियसाचगहैवहुभांतिवि
 चारति॥मैरैइहैकिधौंआनवधूकौयहैनि
 रधारहियैनिरधारति॥यौंचितमैदुचित
 ईगहैनहसैनमुकैसुनमेषनटारति॥चित्र
 विलोकतिथौंअवलोकिरहीत्रियचित्रलि
 षीसीनिहारति॥६५ध॥दोहा॥दहलग्या
 टिगगेहपतिनऊनहनिरवाहि॥नोचीअ
 षियनुहीइतैगईकनषीयतुचा

यहनाइका परकी या कीचे छानाइकु सखे
 सां कहतुहें ॥ कविना ॥ माये कध कहतें नर
 ने चितचातुरीजें सी विहारि गईहें ॥ मैज
 वतें निरषीत वतें उरमै नके साइक मारि
 गईहें ॥ पासज ऊपतिदह ल ग्यांत ऊरोति
 सनेह की पाइ गईहें ॥ नीचीयें आषितिसे
 इहिप्रारकनौषीचित्तौनिनिहारि गईहें ॥ ६
 पक्ष ॥ दोहा ॥ तौल गिमनयासदनमें हरि
 आवैं कि हिवां ट ॥ विकटजटे जौलौनि
 पटबुरै नकपटक पाट ॥ टीका ॥ यहसांत
 रसभक्तको वचनु मनसौं ॥ कविना ॥ सरल
 सुभाउ गहि संतनु संगरहि संगहि धरमु
 लागि भगतके घाटरे ॥ छोडिप्रोटपाइ
 नगाइ करुनामइके यहै समुझाइतौसौं
 कहत निराटरे ॥ कहै कविक्रम तुहिंदे वि
 धौ विचारि मनमें दिरमै ह प्रितौलौं आवैं
 कि हिवाटरे ॥ जटहै विकटब्रथावाइके
 जजीरनुसौं जौलौं ये सुटतनाहिक परक

सरफा विचारि सुषमां निहिये कनदै वौस
प्यां बहु थुर रथी जानिकें ॥ कहें कवि कृष्ण
कां रूप प्रवलो किवे कौ लो भल वि मांगन
जग तुला प्यां आंनिकें ॥ ६५ ॥ दोहा ॥ सव
सुहाई लगत सबै सुहाये षम ॥ गोर मुष वै
लसैं अरु न पीत सित स्यां म ॥ टीका यह प्र
न्याक्ति आछे दोर कौ प्रभा उजो आइ प्रापत
इसो आछे ई लगे ॥ कवि नानी के कें संग
ली को कुनी कौ लगे यह कत प्रत छ निहारी
दोर सुहाये वसैं तें सुहाये लगे सव ही उम
छ विभारी ॥ कें सौं बढावति मो दुहि यें न वन
गरिके मुष व्याह भंगारी ॥ गोर लिला रा ॥ ल
सैं विंदु लो सित रा नी हरी पियरी अरु क
६६ ॥ दोहा ॥ सीतल नरु ल सुवास कौ घ
न महिमा मूरु ॥ पीन सवारे ज्यो त ज्यो सो
जानिक पूरु ॥ टीका ॥ यह प्रन्याक्ति को ज
छ गुनी है भलो मान सुहैं अरु का हू कूर नैं
कौं सत्कारन की यौं तहां कही यौ ॥ कवि

॥ सब भांति रच्यो गरुवो विधि ताको बटें ज
 तैं सोई तोरा ॥ क्रम कहें दिनु जानें प्रजा
 नें के पै वह आधुल है नहि थोरा ॥ पीन सरो
 त तें काहू क पूत नैं छां जौ क पूर ज्यौं जो नि
 कै सोरा ॥ सीतल ताई सुगंध घटें यह को
 ऊकरें जिय में जिनि भोरा ॥ ६६ ॥ टीका
 ॥ ॥ कैसै छोटे नर न तें सरत बडिनु की कां मु
 ॥ मझौं दमा मोजा तु कै क हिचु का के वं मु
 टीका ॥ यह परस्ता विक छोटे तें बडे की गरज
 न सरें क वीकी उक्ति ॥ कवित्त ॥ जा कौं जितौ
 जगदी सरच्यौ बलुता के फवें सरत तौ ई भा
 रौं ॥ वात विचारि यहें प्रपतें जिय को ऊब
 थां मति सो ब विचारौं ॥ छोटे ते कां मु बडें
 न सरें वह के तौं उसाह सुकें पचिहारौं ॥ को
 टिकरौं परचूहा के चामसौं कै हं मझौं न
 हिजातु न गारौं ॥ ६६ ॥ दोहा ॥ सपतिके
 समुद्र सनर न वति दुहुं न इक वं नि ॥ विभ
 व सतर कुचनी बनर नर म विभौं की
 नि ॥ टीका ॥ यह परस्ता

क्लि॥ कवित्त॥ केस॥ ओं सुदसनर
 कर सकहे कविक्रम ग हेय क सी ये वांनि
 ज्यो ज्यो वद वारि लहे त्वां ही त्वां न व त दो उ स
 कल प्रवी न यह वात उरु प्रां निहं॥ क्रम के
 हं सु प्र गा ध इ हां ग्ल गि के सें हं को ऊ न पा य
 धा हं॥ मरु ते ऊ चेर सा प नु कां व ह प्र म स मु
 प्र म गार सु दां हं॥ ६६५॥ दो हा॥ संगति दोष
 ल गें स व नु क हे पि सां चे वें न॥ कु टिल बं
 भु व स ग भ ये कु टिल वं क ग ति नें न॥ दी का
 यह पर सा वि क संग को दोषु ल गें यह द्र श्य
 त क वि की उ क्ति॥ क्व वित्त॥ ओं र ते जूं से
 संग रहे जू ग हे सु भ ली वि धि प्रा दि व हे ती
 संग ति दोषु ल गें स क को वि धि ये हें यह प्र
 दि प्र ना दि स ही है॥ क्रम कहें जग में यह
 वात प्रति छ प्र वी न नि प्र ग च ही है॥ वं क
 भ कु टि नि कां स गु पा इ के नें न नि हं ग ति वं क
 भ र्त्त ही है॥ दो हा॥ संग ति सु म ति न पा व ही
 परे कु म ति के धं धा रा ष हु मे लि क पू र मे ही
 ग न हो इ सु गं ध॥ दी का॥ यह पर सा वि क

जादुर बुद्धि के घर में पसोता कौं संगति में सुबु
 धि ना ही होति ना कौं द्रष्टा तकविकी उक्ति ॥ क
 वित्त ॥ जो गुन गाह कुहो इतौ गुन गह जो वा इ
 सौं गुन सिषा इयैतौ अंगुन कं हा करै ॥ लोक
 लीक लोपै येक पाप ही की पीक जा इहि ठीक
 वताये कौं नाहि चीक नै रह करै ॥ लाजन
 केही ऐकी न की नहि टकी न कटे की और
 सुनौ ये द्यौ व दिये महा करै ॥ संगति प्रसंग
 तें बुरो ऊ बुरो भलौ हो इ देवी वै सेवा प्रसं
 गत कौं संगति कह करै ॥ ६६ ॥ दोहा ॥ व
 टत बटत संपत सलिल मन सरोज वटि
 जाइ ॥ घटन घटत सुनि फिर घटै वरु स
 मूल कुमिलाइ ॥ टीका ॥ यह परस्ता विक्र
 कविकी उक्ति ॥ कविना ॥ सदन सरोवर में
 सुषकी हिलोरनि सौं संपतिसलिल ज्यो ही
 त्यो ही सरसातु है ॥ यह तौं प्रगट सबु जग
 तवषांन तुहं मनुहं सरोज त्यो हीं त्यो हीं
 अधिका तुहं ॥ अत्रानि परै को उत्रा
 तपु अदिनतव रिनि

घटतुजातुहं। कहैकेविक्रमवहकमल
सुवदनोंक्योंहैंपैनघटतुसमूलकुभिला
इहृद॥ दोहा॥ समेंसमेंसुंदरसवेंरूपकुरूप
नकोशामन। कीरुचिजेतीजितेंतितेंतिते
रुचिहोइ॥ टीका॥ यहपरस्ताविककवि
कीउक्तिनाइकाभेदमेंसखीकोंवचनना
इकासों॥ कवित्त॥ सुंदररूपकहोंकिहिकाम
हेजोअपनेचित्तमेंलहिआये। जोचित्तमां
नकुरूपचुभ्योंतोंवहेंउरकोंअतिमोदुव
टावों। होतसमैंइसमेंसबसुंदररूपकुरु
पनकोअलपायें। जाकीजितेजिहोठोर
वहेंरुचिसोतिहोठोरतितोरुचिपायें। ॥
दोहा॥ मूढचढायेंहरहेंपस्योंपीठिकचभ
साहेंगहेंपरिराखिवैलकहियेपरहासा
अधिकपरस्ताविककविकीउक्ति॥ कवित्त
॥ काहैकेमुंडचढेरीयेनयहेंगहियेनि
नमेंचतराईनीकोंसतोरहीयेजोंगहें
परितोंलहियेअधिकेंगरुवाइ॥ मूढच

पर रहे पाछे किबंधनिकी मतिके सनिपाई
धोरैयां जौंगरै ऊपरै तौं विहारकरै छविया
वैहरी ॥ ६७० ॥ दोहा ॥ भांवरि अनभांवर
रिवकवाड ॥ अपनी अपनी ठव
... ॥ टिका ॥ यहपरस्मावि
ककविकी उक्ति ॥ कविना ॥ आह्वुगं लंगां
हभलौ लगे बोटी परी जिय मंधरां माउ
षनुकौं नकरै वकया ॥ अनाक किना व
हो सो हो ॥ अरत्तेजा को पयो जो मुभा
उवहै निवहै निवहै जग जो ॥ अपनी ठव
को सिद्ध सवा दुष्टु टं न किनां टुट ना करं का
ऊ ॥ ६७१ ॥ दोहा ॥ जेती मं पति डपन व
तेती मति जाग ॥ बदलि गान ज्यो ज्यो टु
गतौ मं पान करोग ॥ टिका ॥ यहपरस्मावि
ककपन के जिनती मं पति जिनती ये ज्य
नता ताको इयान कवि इति ॥ इति न
कौन भाग प्रभा के इति ॥ न कने न क
इ सपति कः ॥ इति इति

लेकियें सूर्यतिके सरसाई ॥ ताहिनिहारि
चहियें कछुबात यह कविके जिय आई ॥ जै
पुराजवढें तियके उरत्यों त्यों गह अति हीव
नाई ॥ ६७२ ॥ दोहा ॥ ॥ पियविधुरनको
दुषहरषजात प्यां सार ॥ दुर्जाधन लौं दे
तितजन प्रांन ऊं हिवार ॥ टीका ॥ यह परस्
हर्षदुष्यदा ऊयकत्रकविकी उक्तिनाशकाभ
में सधीको वचन सधीसों ॥ कविना
लग्यों मन भांवन सों वसिवों ससुरारि
जीमें सुहानो ॥ पीहरतेको उपायों चलाव
ताहीसमें सुनिज्यो अकुलानो ॥ प्यों विधु
दुषहातुमहासुषमाइकेको चितसाचस
को ॥ प्रातको पंकजभौतियको मुषफूल
कछुकु कछुकु भिलानो ॥ ६७३ ॥ दोहा ॥
रघरडालतुदीनके जमजनजाचतुजा
दिमें लोभचसमाचषनुलघुपुनिवडाल
॥ टीका ॥ यह लोभकी अधिकारस
विककविकी उक्ति ॥ कविना ॥ ठौरही ठौर
घातुफिरै लघुताजितहां तितप्रापुप्रका

मासु ॥ शोका ॥ यह परस्ता विकसकी कौव
चननाइकासो ॥ कवित्त ॥ प्रापनीगोंसव
काऊवियारतुभेडुकधूरपायेंहैतैहं ॥ हो
इगोंपाहेंपरीपहितायौरीयातेंकहेंसमुन
इकेंमैहं ॥ भूलितियावहिनापुलीकहित
केतनफेरिमिलेंसपनैहं ॥ कैसैहराषेपैची
लकेधोंसुवामासुअधूतोंवचैनहिकोंहं
॥ ७६ ॥ शोका ॥ गुनीगुनीसवकोऊकहें
निगुनीगुनीनहोतु ॥ सुन्योंकहंतरुअरक
केअरकेंसमानउदोतु ॥ दीका ॥ यहपर
स्ताविकहेंकछनाही ॥ आरसवकोंबासोंक
हनहोइलहं कहीयेकविकीउक्ति ॥ कवित्त
विनुकरतृतिरूहीपदकीलहीतोंबहानीवी
मलगतिउपहासपेषियतुहें ॥ गुनीगुनीस
वकोंनुकरतुपुकारिकहंनिगुनीगुनीनुगु
नमोंकलेषीयतुहें ॥ जगतविदितजासो
मीहेंकहीयतुसोईनियरविषमुविषअ
रषियतुहें ॥ जऊपेटआककोंकहावतुअ

कुतञ्ज अरकसमांनकौ अरकदेषीयतुहै
 ७७॥ दोहा ॥ मीतननीतगलीतकैजैध
 यैधनजोरि ॥ पांयैयरचैजौजुरैतौजोरियै
 करोरि ॥ टीका ॥ यहपरस्ताविकसूमहौं
 कंधनजोरैतौउचितनाहीयानैयाइवौय
 चिंउचितहै ॥ कवित्तजौपंगलीतभ
 रैजुरैधनतौवहजोरिवौकाहनभावै ॥
 ॥ ७८ ॥ सुनैसुसभीतकैभाजतकोजगमेंअ
 तिसंमकरावौ ॥ मीतयतौजियमैधरिकैय
 हजोरिकेरिलौजौवनिआवौआयैदियै
 यरचैजुजुरैकरुजोअतिमोडुहियैउमगा
 वै ॥ ७९ ॥ दोहा ॥ ॥ जइपिसुंदरसुघरकौ
 सगुनैरकदहु ॥ तऊपुकासुकैगितौ
 भरीवैजितौसनेहु ॥ कवित्त यहपरस्ता
 विकहैअरुनाइकाभेदमैसपैकौवचनु
 नाइसोकितेरौसुंदरतनुहैगुनसहित
 हैपनिइजाहियतुहैअसैताइकासोसपै
 सोअसंभवै ॥ कवित्त जइपिचारुग
 टिकाइ

जौ

कस कहें मंडित के गुन जो तिज गा उधरो
नि सोऊ ॥ हे यह वात प्रसिद्ध सर्वें जगये
सीरीति निवाहत दाऊ ॥ नहु भरे विनुदी
कहेहु प्रका सुकरे न किलो करौ काऊ ॥ ६
दोहा ॥ अर परषो करै कै तु ही विलो वि
चारि ॥ किहि नर किं हि सर राषि वै परव
परि री ॥ यह परस्ता विक संसार व्य
रषे प्रतिवटै तें म द धूटै कवि की उक्ति ॥ ६
विन ॥ के ते भय नर के ते भय सरजाति
छगन नाहि धाषी ॥ ज्यो ल्यो वटै अनु मा
गहं सरजा हर हंत वही लगि पाषी ॥ कौन
कौ तु परषो करै पर मानु कहा पर ल छ के
साषी ॥ ये अति ही वट वारि भये अपनी प
वारि कहो कि हि राषी ॥ ६-८० ॥ दोहा ॥ पि
य मन रुचि हूँ बौ कहिन तन रुचि हा त सि
गारा ॥ लाष करौ आषिन वटै वटै वटै यो
र ॥ दोहा ॥ यह परस्ता विक नाइ का कौ व
वन सषी सो सो ति कौ अंगार देषिया कौ
वुं भयो सुई यी सो कहति है अरु सषी यो

धनका भुनिवारन करै तो संभवै ॥ कवि
॥ टोना कुंज सदन विलोकतु हेतु व म ग
ति रौना मु मोहन रठत वार वार ही ॥ ऊटि
ल मिलि मां निर गर ली मली मे
व तिक हार ही ॥ पि
कै के दिन प्ररुत न दु
सर सति सा जै हं सिंगार ही ॥ कहै कवि
क स की जै लाष कुंज त न ल ऊ लोचन न
दा हे प्रे व डै गार ही ॥ ६२१ ॥ दो हा
रो च हिये हुल से रहै गै गै ड के पोता ॥ ज्यो
पो मा धिं मारियत त्यों त्यों ऊचे होत ॥ टी
॥ यह परस्ता विक क थि की उक्ति ॥ क
॥ ज न म तै क व ह न भ ला ई सौं भेट
त मै को टिके धिकार ॥ धारियत
सहज सुभा ई पर काज लै विगारि डारै
गै गुन गहन गुन पुंज टरी यत है ॥ नीच
र ये तै पै हिये मै हुल से ई रहै गै ड के सुभा
है यो निहारियत है ॥ जित हीं निचा ई दे
ते त हीं डुर कि जां हि ऊचे

जों पाथें मारियतुहें ॥ ६८२ ॥ दोहा ॥
जलनकोऊ करौ परंप्रकृतिहि वीचु ॥
लवलजल ऊंचौ चहें अंतकीनी चक
चु ॥ दीका ॥ यह प्रत्याक्ति जाकों सु
नीच होइ ताकी बढवारी ह होइ ये सुभा
न छूटै कविकी उक्ति ॥ कवित्त ॥ अरत
सां सुभा ऊप स्यां वह प्रार प्रकार न के
ऊहें ॥ कोरि कवौ न उपा ऊपाइ क
विक्रम कहें निर्धार यह ॥ सो जगम
पिये पर न छू करौ जल जंत्र नितै निह
कतौ ऊ ऊंचौ चढें नल केवलनी रुत
दुरिनी चौ ई अह ॥ ६८३ ॥ दोहा ॥ जाके
तय कहें जगवौ साइन कोइ ॥ सो निद
फूलें फूलें प्राकुड ह होइ ॥ दीका ॥ य
अत्याक्ति वाके धन वारि वहुत ह प्ररु
हय कहें के धनु कां सुनां ही आवतुत हं क
य ॥ कवित्त ॥ छानका ह के वै ठि व जोग
शीरु प्रचै को ऊपे दुभरें ॥ फूलनुतै फल
स्तितै जगमें नहि काहें कां काज सरो ॥

नुप्रोरंभूलिभ्रमैउहिप्रोरपवैरूनकोऊवि
तुहस्योयहप्रोकनिकामनिदध
वहुफलैकरै॥६८॥दोहा॥ जोंरून
मुवहैकियेजुजगतनकेतु॥ होतुउ
सिकौभयौमानौससिहरिसतुर्दीका
चांदनीवर्ननुवियोगीकौवचनकविकी
॥कविनामूरिरह्योअधऊरधमंधर
लौ॥जिहिदेहुठयौहो॥ जोंहीचिलो
वियोगीरैअनुरागिनिकौमनुमोडुम
हो॥ होइनजोंरुवहंतमुहैबहजानैसवै
गछाइल्यौहै॥ होतउदातलप्यामसि
गहिसंकमनौतनुसेतुभयौदं॥६८५
॥चटकनछोघटतहंसजूननेहुग
र॥ कीकौपरैनवरफटैरग्योचालरग
र॥दीका॥ यहपरस्ताविककविकीउक्ति
चित्त॥ सजूनजेजगदीसरचेतिनकी
कवांसिदोनिवटै॥ सीलमुभाउगह
हजैअनुरागसमुद्दहियंउ

रं सुषयों गहरों उनहं क घटें सुन कों हंध
चाल करं गति चाल रणों सुनि फी कों प
फटें ई फटें ॥ ६२६ ॥ दोहा ॥ कनक क
सों गुनों भाद कता अधिक ॥ वह पा
रा तुहें वरु पायें वों राइ ॥ टीका ॥ यह प
सा विक क विकी उक्ति ॥ क विना ॥ कन
ध त्रों सों नौ दो ऊ ये कहावत है सौने को
त्र तै प्रभा उर स तुहें ॥ कहें क विक्रम व
चाह तुन को श्या हि निरष निरष जोई अ
तर स तुहें ॥ सों नौ मारु सों गुनों ध त्रों
सर सम डु यह तो प्रत छ सब को ऊ दार
तुहें ॥ वा हि जब घा इत व यों रा ही प्रकार
होइ तु वा व रों त्र त या हि जोई पर स तुहें
६२७ ॥ दोहा ॥ इक भीजे चह ले पर व
हजार ॥ किते न प्रौ गुन जग कर ति क
चढती वार ॥ टीका ॥ यह पर सा विक
विकी उक्ति अन्याक्ति ह सं भवे ॥ क वि
घ क पर ते फ से चह लै इक भी क्षि गये

...। इगयहं। येकवहं तिनकी नलही सु
 ...कनधी राजछोइदयेहं वाइइपहला
 नय जाइ विलोकिकिते भयभीति भयेह
 वासन दोचठती वगीयां जगआं गुनकी
 कते कनयेहं। इइइ सुषसा
 ...ती सवनि सामन सोधइक साथ मं
 ...मेलिगहें सुछिनु हाथछोइहाथ 'प
 ...ताविक कविकी उक्ति नाइका भइमय
 ...किया कौहाथ स्प रम कौ सुषमां म्यां ता
 ...सौरा त्रिवैसै ही वीती सधी सधी नाकह
 ...हं कविन रैन खिती नभइमिगरीअ
 ...तचाइ चठचितपैन अहरे दोउलक मः
 ...गुदवठे अभिलाषनुके इगबंधन घट
 ...मौमनौ मिलिकें इक साथी यां बहुभां
 ...लेपत हिये सुषलूट मं कामं मल लथइक
 ...गार सुहाथते हाथ छिनानहि छट इइइ
 ...होहा जौ न जुगति पिय मिलनकी
 ...रि मुक्ति मुहदीन तोल हिय मगमज
 ...नां धर कनइ कहकीन थरथः

साविक अनुरागी को वचनु ॥ कविता व
रनी को जहां मिलि वों है पी को मोत यह
ही कमर जी को अब दातु है ॥ पायो जो
ति पर हर स्यां न प्रां न पारों सर स्यां अ
दुषद स्यां न सुहातु है ॥ कहतु वलैन को
तना अनेक भाति जातें भांति भांति तु
चा सु अ धिका तु है ॥ रहि वों व नै ज्यों मन
मन सों मिले तौ पै नरक निवासु हूत म
सकात है ॥ ६८ ॥ ॥ गटरचना
जी अलक चित वनि भौं हक मान ॥ आ
काई की वटें तरु नितुरंग मतांन ॥ टीक
यह पर साविक कविकी उक्ति ॥ कवि
गठ को वना उवां को हो इत्यो व डार पावें
थनि में वात यह वरनी प्रमान की ॥ अ
काई दे धी ये नि काई की व काई तै अलक
तो हि भां रु वरनी कमान की ॥ कहें कवि
क्षरी ति जानत प्रवीन सौ ही तरुनी की
क की तुरंग मकी तान की ॥ वाक ही तै पा
की के वां स की वट तु मालु वां को रज

रतिक्रयानकी ॥ ६८१ ॥ दोहा ॥ वसै
जासुतनलाही कौसनमानु ॥ भलौभ
नौकरछांतीयैघोटेग्रहजपदानु ॥ टीका
परस्ताविककविकीउक्ति ॥ कवित्त ॥
वुराईवसैकधुसोजगमैस
नमानहिपावै ॥ वाहीकौजोमैसवैडरुमां
तदेवौदुनीमैप्रतछपभावौ ॥ जोतिगी
ग्रहभाषैभलौतौभलैहीभलैकहिकै
हरावै ॥ जोसैवहैग्रहघोटेसुनैतवदानु
करैप्ररुजापुकरावै ॥ ६८२ ॥ दोहा ॥ ॥ प
तिरितुआंगुनगुनवटनुमांनुमांहकौसी
नु ॥ जानुकदिनहैमनुमुदौरवनीमनु
नवनीतु ॥ यहपरस्ताविककविकीउक्ति ॥
भेदमैसधीकौवचनुनाइककी
धीसौकिनाइककेआंगुननितेनाइ
नाकौमनकठिनहोतुहोहो ॥ ॥ कवित्त ॥
वैसैपतिआंगुनतेवइतहैमानजैस
गुनसिसिरिकौसीतुसरसातुहै

मानके भये तैतिय कठिना तत्पौ हीं सी
के भये तेन वतीत कठिना तुहे ॥ दोऊन
जी उ प्रति सुहु है सुभा उत ऊ अरै भां
कृतिकों भाव दरसा तुहे ॥ कहै कवि क
ति जानत प्रवीन यहै विनु यत तां इते
यधिला तुहे ॥ ६६३ ॥ ॥ ॥ कहति
श्रुति समुत्त हं सर्वें पुरातम लोगु ॥
वैनिक सकौ पात कुरा जारोगु ॥ दोका
ह्यरस्ता विक कवि की उक्ति ॥ ॥ विज्ञा
यह श्रुति आरु सकल पुराने लोग सुप्र
पुरान निमें सुने यहै हेत है ॥ कहै
यह जगत विदित वात जानत सक
सुमति निकत है ॥ रि पुरा जारोग आरु
क कर लेये तो ये के वां नि गहै ॥ अं सेवां ध
मनत है ॥ जहां देखें व लुत्त हां करे न अ
जहां देखें न व लाई एत हां ई दुष दत्त है ॥
॥ ॥ आछ वेड न हो सकै ल गें सत
गें न दीरघ है ॥ हिन नें न कहु फार नि

टीका ॥ परस्ताविक कविकी उत्ति
॥ जे जगदीश्वर जे हि भाइवें तें सीई
घटें न वटें ना ॥ धीरुहि धरि मंडुग हें
पें व गुहं सकौ मोलुल हें ना ॥ ओछे सौं
होत वडन वकाइ उचाइ गहें किनि
॥ फारि निहागें कि तौं करि हागें पै दीर
हीं न कै सैं हें ना ॥ ६८५ ॥ ॥ दोहा ॥
सही सोयों समझि मुहचुं म्पौटि गज्रा
स्पौं विस्पौं नो गलुगधौं रहै गरें लपटा
टीका ॥ परस्ताविक नाइका कौं वचनु
॥ कविना कुवर कन्हार सुषदाई च
का ॥ धिर सौं मिसु मूठीरि सकौ वना
हित अधिकार उम गिवहि आरि जिय
सोयों जांनि मुहचुं म्पौटि गजाइ कै ॥
समै टारित नुरंच कडघारि नैन नाइ
वां हगै ऊहि मुसिकाइ कै ॥ कहा कहै
नीहौं तौं हसि हिसाई त कौं रू न व
लपटाइ कै ॥ ६८६ ॥ दोहा ॥
विससिये लयिन ये दुजन

१॥ आटे पर पांन नुहरत कांटे लौं
 २॥ टीका ॥ यह परस्ताविक नास्का
 नुसवी सोंधुष्टनाशु कुवरकनहार
 चतुसई करि पांहरि लोमिसुमूठिरि
 नाइके हित अधिक ई उममिवटि
 यमैतौ सस्यो जनि मुहचूंष्यं अधीर
 काराजनीतिके प्रसंगमें संभवे ॥ कति
 ऊपरतौ देषियत अधिक भलाई भरे
 रके दुसहवुराई के निकेत है ॥ कहै कति
 श्रवहुवालनवनाइ कहै दारु परै जैसे
 तैसे दुषदत है देषत है नयेत ऊमान
 गधीनये भूलतन को हुंजे विचारमे
 तहै ॥ कांटे कै सीरिति दुर्जनके सुभा
 की आटे परै पांनु हुंला गि पांन लेत
 दाह ॥ तंत्रीनाइक वित्तरस सरसरा
 रतिरंग ॥ अनवूडे वूडे तरेजे वूडे सवी
 टीका ॥ यह परस्ताविक कविकी उक्ति
 कति ता तंत्रीकी मधुरधुनितालके
 विधभेद रागजासे सुरनुकी विविधत

पुराईक प्रकास चारु क
 वासुदेस जहां रस की उमंग हो। या गकी
 इन वना गरीसौ हिलि मिलि वरु रन अं
 संग हो। जगत में वृं ज न वृं
 नुवान न मै तर ते इ जे ई इ त वृं अंग अं
 गोर्ष्या हो ॥ सवै इ सत क र्ना अं
 ॥ ॐ ग यौ ग र्गु गु न रु प कां
 सै ग व रै गां उं ॥ ॐ ॥ य र्गु अ य न्ति
 र स्या वि क इ स भ व क वि इ को उ न्ति ॥
 ॐ ग र्गु न्ति न्ति न्ति न्ति ॥
 ॐ ग र्गु न्ति न्ति न्ति न्ति ॥
 मूढ ना क इ न्ति न्ति न्ति न्ति ॥
 ना इ न्ति न्ति न्ति न्ति न्ति ॥
 गु मां न्ति न्ति न्ति न्ति न्ति ॥
 ॐ ग र्गु न्ति न्ति न्ति न्ति ॥
 ना न्ति न्ति न्ति न्ति न्ति ॥
 गं ज ग क

सुतयोगुनकोंवहुभांतिवटावत॥ होतु
दुसदं दुप्रजानकों औरसवेंसुभकाज
कावत॥ कृष्णकहेंदीनानाथनिसं
एकहीमंडलमेंजवआवत॥ देवोंप्रत
भावसकोंअधियारोंकितोंजगमेंस
वत॥ ७००॥ दोहा ॥ हौंविनऊंसव
नुकेचरनकमलसिरुनाइ॥ प्र
तिहुंलोकमेंकविताजिनवहुभाइ॥
सोकविताइंभांतिहैप्रायरपौरष
नि॥ प्रायरसुरुप्ररुमुनिनक्रतनर
पौरषमांनि॥ २॥ पौरषकवितावि
हेंकविसवकहतवषांनि॥ प्रथमदे
नीवहुरिप्राकृतिभाषाजानि॥ ३॥
भदतैहोतिसोभाषावहुतप्रकारा
नतहैवहुसवनमेंगारषरीवहुस
॥ ४॥ ब्रजभाषाभाषतसकलसुख
समतुलै॥ ताहिवषांनतसकलक
जानिमहारसभूल॥ ५॥ ब्रजभाषा
नीकविनुवहुविधिबुद्धविसाल॥

षनसतसईकरीविहारीदास॥६॥जौ
स्सरीतिकौसमग्यांचाहंसासापट
रीसतसैंकविताकौश्रंगारु॥७॥
प्रग्रसलौंअवनियैसवकैयाकीवा
तुन।तविहारीसतसैंसवहीकरतसु
॥८॥भांतिभांतिकेअरथवहुया
एअगूठ॥जाइसुनैरसरीतिकौमगु
अतिप्रतिमूठ॥९॥विविधनाइक
अरुअलंकारनृपनीति॥पटैविहा
नससैंजानैसवकविरीति॥१०॥रघु
गोराजाप्रगटपुहपिधर्मप्रवतारु॥
क्रमनिधिजयसाहिरियुठंडविहंड
गारु॥११॥सुकविविहारीदाससौंतिन
नौअतिप्यार॥वहुतभांतिसनमान
रेदीनौलछिअप्यार॥१२॥राजाश्रीजै
घकैप्रगटौंनेजसमांजु॥रामुसिर
गुनरामसमुनृपतिगरीवनिवाजु॥
३॥कससिंघतिनकेभ

कुमारः॥ विष्णुसिंहतिनके भये राज
श्रवतार ॥ १४ ॥ महाराज विसुनेसके
धुरंधरधीरा ॥ प्रगट भयौं जयसाहि
सुमति सवाईवीरा ॥ १५ ॥ प्रगट साइ
के मंत्री मनि सुषसारु ॥ सागरगु
सीलकौं नागर परम उदारु ॥ १६ ॥
मन्त्र प्रषं इत्यजग सोरु तुज सुताहि
राजा कौं नौं करिक्रया महाराज जय
॥ १७ ॥ मनवचक्रम सांचौ भगतु हरि
तनिकौं दासु ॥ वेदवचननिज धर्मकौं
के इट विश्वासु ॥ १८ ॥ सूत्री कुलहित
भयै वैरी जग विष्यात ॥ परदुषवैरीष
मंडन गुन प्रवदात ॥ १९ ॥ लालदास
तिललित गुन प्रगट भये निहिवंसा ॥
चंदतिनके भये जिनकौं जसु प्रवतं
॥ २० ॥ महाराजु जिनिके भये जिनिके
सुप्रवदात ॥ राश्यजाव सपूत मनि
जतिनके तात ॥ २१ ॥ तिनिके प्रगटे तीन

वेक्रमबुद्धिनिदान ॥ रघुकब्राह्मणगाइ
 निपुनदानकिरवांन ॥ २२ ॥ राजा आया
 खजगविदितराइसिवदासा ॥ लसतु
 राइनदासजसुपूरनपहुमिप्रकासा ॥
 लाजुगलकिसोरकीरसकौहोइनिवे
 ॥ राजा आया मल्लकौंताकवितासौहे
 ॥ २३ ॥ माथुरविप्रककोरकुललखौंके
 नकविनाउ ॥ सेवकहेंसवकविनुकौंवस
 इमधुपुरीगांउ ॥ २४ ॥ राजामलकविक्र
 मपरदसौंक्रपाकेदार ॥ भांतिभांतिवि
 पदाहरीदीनीदरवअमार ॥ २५ ॥ येकदि
 नाकविसौंनृपतिकहीकहीकौंजात ॥
 दोहादोहाप्रतिकरौंकवितबुद्धिअवदा
 त ॥ २६ ॥ पहिलैतौंमेरेमनहुंअसौंहतौं
 विचासकरौंनाइकाभेदकौंयंथबुद्धिअ
 नुसासाअजेकोनेंपूरवकविनुसरस
 यंथसुषदाइ ॥ तिनहिछांदिमेरेकवित
 कोपडिहैममुलाइ ॥ २७ ॥ जा

२३॥

नेहियेंकियौंनग्रंथप्रकासु॥नयकौ
सुपाइकैहियमेंभयेहुलासु॥३०॥
तसैदाहरासुकविविहारीदास॥सक
ऊतिनकांपढैगुनेंसुनेसविलास॥३१॥
डांभरासांजांनिमैगध्यांआसरांआ
जातेइनुदाहानुसगदीनौकवितल
॥३२॥जुक्तिजुक्तिदाहानुकीआछरजो
वीन॥करेसातसैकवित्तमेंसीयांसक
प्रवीन॥३३॥मैअतिहीढीढीकरीका
कुलसरलसुभाउ॥भूलचूककछुहो
लीजासमफिवनाइ॥३४॥सचहसते
आगरेअसीवरसरविवार॥कातिक
दितिथिचौथिगुनिभयेकवित्तरसा
॥३५॥इतिश्रीविहारीसतसैदाहा
ध्याकृष्णकविकृतकवित्तसहितस
पूरनेम् ॥ शुभंभवतु ॥ श्रीरसु

दननहीचनननहीनी

कुलकीलगतमोदेका

श्रीः११ दन

कोटनममपुनसीपश्रीस्वामीश्रीग

सास्त्रीश्रीश्रीधरामपुनीश्रीग

पाशुपतिश्रीग १०६५ ६ सनीश्रीग

नारायणश्रीग १०६५ ६

...का... प्रा...
पा... पा... पा...

पा... पा... पा...
ता... पा... पा...

ता... पा... पा...
ली... पा... पा...

ली... पा... पा...
को... पा... पा...

को... पा... पा...
जे... पा... पा...

जे... पा... पा...
ज... पा... पा...

ज... पा... पा...
गी... पा... पा...

गी... पा... पा...
को... पा... पा...

को... पा... पा...
रा... पा... पा...

रा... पा... पा...
गे... पा... पा...

गे... पा... पा...
ज... पा... पा...

ज... पा... पा...
क... पा... पा...

क... पा... पा...
क... पा... पा...

नाडी का को बचन नाडी का
पथक को बचन पथक को
गसो मट मला मः सूत्र को सने से
सुने क हो मन मोहन जु
त सदा सुद बंदा बन कीः व
सत वदे स मो ही बिते ह बो त
न लाल सा ल ए ह मन व जे व
चलन कीः जाय कर के योष व
र मे रे प्रावन की सब वृ ज वा सी
न कुं प्रा न दे कर न कीः धाय
क पथ के प्राय रा धे का स प्री
क रे पा डी व ग सी स ध नी शु
न वृ स न कीः स धी की व च व

मोहागच्छाद्युः प्रावनसुन
कहि मारगवीरु कनकोमन
। चावभयोमुषदरसनकोः
। गरकेस्राननकोचोगनु
योहचावः प्रीतमकेमीडेनीडे
ननसुननकोः करनकोचा
। जयोरूपरसकोहरसकनको।
। चावभयोवस्तियाकरनकोः
। अधरनेचावभरसपानकोन
। दिनयोचावभयोननवन
। शोहनमीलनकोः सशोकाव
नीननाडीकासुशुसतको।

चलो न ही जान अंगना जे जात

खपुत कत गत जात सखी न बात

तवि ना डी की ते की तथ हवात सब

न को अंग कछु आन भयो जात ह

सुचल जात धून लीन सो दधात ह

ते सो द सो द ध मे की ही यो ह मात ह

न क ही नी हो के मन मोहन को रुप

ली ते की कम कम म सने ह द र सात

ना डी का को बचन सषी सो अंग का न

तो सुम दुश डी ना डी क ब हं ही य की

न अब हं दुश अक स सांची क र मा

दि न क ही बि ज्यो ग त्ये चत कु

श डी गो यो रुप की नी का डी वा

का ही नुवषा नी डी देषे म

सो म

ब्रह्मचिकलभइलागीपीकनान
दुठनवनवनपुवेकुं: अतप्रकुं
निन्नरिवुमलतानबुअप्रवेक
देषाककुंनंदकेदुलादेकुंससेको
प्रगासदुतीजाहालगेदेवेदरीफरी
षकदेअंदकेअंदेकेकुं: पुलनमश्री
गुनगादिमनमोहनकेबोलिसुषरी
जेअदिलोचनहनारेकुं: सषीके
बचनसषीसोनागधनासरी: प्रातभ
योअलसातअजमानअठेअंगरा
अविलेअकेसे: दोउअनीदिसनन
अवेदेपिरदिरसरीतयकेसे: जा
प्रगासविलेकेप्रियामनमोहनअ
नहीनकेसे: प्रमपगेकबुचाविक
करेजानकबुअजातयकेसे

चरी पीयनलन जिय मां दीः सषी
चननसर्षीसोः रागद्रीमनः केचन
जादिशषानकी हीठरी मलबोच
दर उ न वि-आरो मोदमादा भरेव
मगीमनमोदननेक उ नुपमथा
षलकीकामबिसानोचले हिदेस
वकामकीशोचविशरोः आनद
जबहीदरक उरस्यामकोकुजज
दिनीहावीः सषीकोचचनसषी
रागसुधमलाइकिबतकरकवि
रनिजमंदनन-प्रयितहुफेरहु
हारकववेकु उ मतदः बाधा मनम
ननुध्यानमरहतकहुमनकी
बातकाहुसुनकरतेदः देषीवी

हुनकोपलकपरतकलेखिषमखियोग
यादुसुसकतेरुः प्रापसमवात्तनकु
बिसरुतनतेमलवेकीमनममनो
करूँः सषीबचनसषीसुअठठनत
गंडुसारंगकीवतेषलकहोरीगये
मुनाटसोहतवागजाहोसुषकाही
मताहोप्रटेकेमनमोहनतनवाम
ठीठटहनहीवाकीः रंगअरेअनु
गअरेकबदेपतकीमनमोह
वाकीवासरुनवीहाककन
तेकुं जंनमवंसकं जचौहाकी
गणीपटमंजरीचोपईपंठमंजकी
धजीयकान्दी - सातकं

ग२ स० नी० ही सु० म० स० ने० ह० ल० ह०
दु० बा० ढी० ची० ते० च० द० न० मो० न० मु० ष० गा० डी०
ब० र० स० दि० ने० न० अ० म० ह० ति० हं० यो० ज० नु० य०
मो० ते० न० के० हा० नी० ही० त० को० व० ली०
ब० च० न० सं० ना० वि० ब० दु० त० ना० त० क० न० जी०
न० ना० वि० ना० नु० मा० न० नी० व० च० व० ह० मा०
मु० म० ही० बी० न० अ० त० र० प० र० पा० या० वा० त०
क्रो० व० च० न० स० वी० सो० श० ग० सो० र० ठ०
षे० ल० त० स० पा० न० म० सु० अ० प्र० ये० प्रा० धी० रा० त० प्रा०
ने० के० ली० य० अ० प्र० षी० ना० नी० क० री० अ० प्र० धी० य०
री० म० स्वे० त० ब० द० अ० प्र० दु० मु० ष० ७ प० ने० वि०
जे० र० डी० ल० र० लाल० लो० डि० न० डे० नी० द०
षु० ना० नी० न० ल० ट० प० टे० पे० च० म० न० मो० ह० न०
स० ना० नी० न० क० री० ली० बा० ह० व० प्रा० व० न०

अप्रतपूनीमः कां हां लो नी रु
दिः मोप रूबी हारी प्राजवान
हारी मत्त वानी पृचानी म
वचन स खी सों रा ग सो रू म ल
नची स ग रे ब्रज म जी म बा दर ल
ग ल के छयः ना ग रू वो मन मो

ग रू सा मु हू हो त च त्त सु स का
न ग यो छु ट मे द न्त ये म न दो क
रू ना प ब त रा यि मु ठ रू बी व
हे सु गे द ल गा व न के म स सु
ये

माल वा गो री रा ग मी चो प दं प र म
नि माल वा गारी पी प स ने हू प्र स नु
वारी पी य ले ही म ल न जा ही व ग त दि
ल प ल ही पी प ह ट को रू ह म ह दे ही
उ ज ग ह च ति ती ही ले ही

अप्रतपूनीमः कां हां लो नी रु
दिः मोप रूबी हारी प्राजवान
हारी मत्त वानी पृचानी म
वचन स खी सों रा ग सो रू म ल
नची स ग रे ब्रज म जी म बा दर ल
ग ल के छयः ना ग रू वो मन मो
ग रू सा मु हू हो त च त्त सु स का
न ग यो छु ट मे द न्त ये म न दो क
रू ना प ब त रा यि मु ठ रू बी व
हे सु गे द ल गा व न के म स सु
ये
माल वा गो री रा ग मी चो प दं प र म
नि माल वा गारी पी प स ने हू प्र स नु
वारी पी य ले ही म ल न जा ही व ग त दि
ल प ल ही पी प ह ट को रू ह म ह दे ही
उ ज ग ह च ति ती ही ले ही

नादिका को च च न स वि सो रा ग बा गे स
र स न रि तान न के कान न खि तान ताने
उ रे प्रेम सा नु स व न कुं सा जरी को न ज्ञान
धं हरी विर मन मो दि काम उप रा ज जी व
उप रा ज वीः प्राय को न व र ज स करी मो शी ग
कु के सी मन मोहन के मुख ल गि गा जरी न
के स्मा ज बी स रा व याम का ज ला ज सु न स
सु दर की बि स च न बा ज दिः रा ग मा ल को
गोरी गो रा रा ज क ले पु मा व वि प्र ति षु व
ग ला गि गु न क ले मा ल को रा न बु व चो प
मा ल को स नृ प च तु व वि हा नी क च न
बा रा बा नी ब डे म ल प न त गी जा डी चो नी
दु रा व त प्रा डी जी न के रु प न रे भा ही शी का
प का म णि सी डीः नु क न ब र न ब रा व व
री जी व नु क रा सो भा पो वै पा न घा त वी
व ली पि दु हा य रु बा नी क नृ प दे ष क र

सरचंगः प्रवचनं च का मयी नरुप
 नाडीकाकी बचन सभी सो राग सा रे गः
 लगाई जनाई नी नार सरी त न सो न्रपने
 मन मोहन के लिए कला करे कनी जुग
 ग मोहन के : तबतन स्वाय क धु स जनी :
 नंदे न हिक हिले : यदुलाल सा ला ग र ही
 श्यम लगी कवरु : नाडी को को बचन
 राग राग कलै : आजि आलि बो दू दो स
 न मोहन जु सपन म लि हीने : बात करी
 नरी अने के ल कलान के पु ज उ घो रं ज
 न ली सुख सो तन सु मन सु सब ही सुष
 पनी अकुलाने न डि ज ब देषू न्की ट
 रो पारे सभी को बचन नाडी का सुं :
 वा सन बी ता वत रु रा वरे ही बात न सुं रु
 मजि न चा तन सु वा त रु : पी पी पी जात
 दो अकुलाने वा की वृ द्दी ब था क
 नाते रु चलन न मने मोहन नी रा रु वेग

माने जाने सासकेत जा रो क स स खि जा त व प सी स न की न न

रागनीटो चोपदि परमवीचीत्ररुचि
लोडितिनलोक च्छिवकनकोडि
त्रनबागमगदि प्रेमसुरत उपजाव या
सुनेनादन्नग जुथ भुलानै देवेनन
नीपटल जानें उ बितर चांदां सरव
त्रनलेजलमानुगैगानीर कीबत
सगैरदन नै रिदेतफकें नीससोई
जपजापनुसो चोहोसां वरोदुप
रेबीनां पगपोर छिनपोठी नाप
सोः धन प्रानेद संत्र सुदुरव
प्रसठ तकेपुस कोतापनुसो
नेरुको चाइव कां हां लुं कं
लीतैरी अडिइवर प्रापनुसो
नाडीकाको बचन नाडी कसो
कौनको कबगदेषी तीयांनेप्रलो

हीकसदुजातकीयोह. सुंदरकप.
पमोउपवममनमोहनलोहीरी
प्रेमपगुहीरहनीसबासुंवेक
रनभाहकानकोनेकमग
आननपुनचंदसोअनबंद.
चकोरचहोसुलहोहः

काकोचचनरागशटमाह
कोवचनकवितलपीप्राही
मकरमीपकहीनेरीप्राली
शकंदुनाततेवेप्रीतमके
रकीग्रहकीसमारहेनदेह
समारहेनपीटपटकीसमा
नसंमारखनमाहकीसेरघा
रोमवदलोरुपसही

सौख्य १२०
११ देवता की

को बचन राग बागी स्वदेकांन

यरी लेने मुखपदवावारी जांभिया

मकेन्द्रानिहकी कही त समसा

द्वैः प्रबमीत व. ५। ने १।

० १०० १ ० ० ५५

१०० द कापी की १२ १५

काही माही जां नतन की ही है

तमन भाही है सपी को बचन

ही का सो वाग पु र बी ला रा म

नी र जनन धने व क थी र ज ही

न ब न ही ही यो हु त सा व न

सु की यो मन मो हु न प्रा जु की

सांज की ही त ही कुं जी म क प्र

प्रेमपायु कहु मनमोहन

राजतमादानं नी नी ॥१॥

तागीरुमनमोहनके

तोसबहीखीदे ३५ नगीने

तहुसपनननप्रेच्छे नन

वेखीनीदीनुएगीही

दहीमनग्रादके

नीनादीकाको सुसुन

जसोरागजंगालकीक

च नहीदहन ५५ ज

ततुमननननकनी

काजबीसादीयघन

सजरातनलाजसभाज

सैजनी लाखरी

कहरस जा जेव फेहे

हालात क जघुट के

ही जोहा वाना के ना

काकोष चन गाही कस

सिर बस मोहीग

पमन मो हन मोरी

रही पैग १०

लाओ की तो की बुकि

ये श्रीक हा ही क थी

प्र ट बु ग ट घनी

स्रीजन सुजसको सु

वसको पवैरु मननो कनके

रहो नतेरे वसको:

ननेपीयो हे परे पीव ०-

हारे कुपरसको: राग सोरठ

वसधीसोंकी बत: दोठपर जबलोग

रुनतीलोंनी हारतहीरहीपूरी: मे

नी मुरतेनो रुनी के जनघां डीनक

हुंजातबीषानी: छीन पनी तीइ

अननकी छबे होत प्रजातजु

चंद छिजारी: नारीरु रषांनतम

गरी तीही वारगरी वषचांन दुला

